मेरी भक्ति गुरु की शक्ति

तंत्र महायोग

योगीराज अवतार सिंह अटवाल

मेरी भक्ति
गुरु की शक्ति
तन्त्र महायोग

आज भी तन्त्र से मशान जागता है, आज भी भूत-प्रेत कब्रों में रहते हैं। सभी व्यक्ति स्वयं ही परख चुके हैं कि जो मंदिरों, गुरुद्वारों व मजारों को मानता है उसकी आशायें पूरी होती हैं। धार्मिक स्थलों में जाकर मन पवित्र तथा आत्म-सुख मिलता है, यही तन्त्र का असली रूप है।

इस पुस्तक में दिए गए प्रयोगों के बारे में प्रयोगकर्ता (लेखक नहीं) का कहना है कि उनकी कलम से परमात्मा की इच्छा काम कर रही है और मैं आपके काम आऊँ ये मेरी हार्दिक इच्छा है। आपकी भी कामनायें पूर्ण हों इसी लक्ष्य से यह संग्रह तैयार किया गया है। आवश्यकता केवल विश्वास, साधना और समय की है जो तन्त्र की इन महायोग शक्तियों को प्रयोग कर जनता का भला किया जाये।

निवेदन

हमारी प्रकाशित पुस्तकों में सभी विद्वान लेखकों ने विभिन्न प्राचीन मान्यताओं, प्रचलित किवदंतियों और दुर्लभ तथा लुप्तप्राय ग्रन्थों के आधार पर इन मन्त्र-तन्त्र विद्याओं और यन्त्रों को बनाने व उनके प्रयोग करने के ढंग का वर्णन पुस्तकों में किया हुआ होता है। प्रत्येक पुस्तक में दिए गये वर्णन उस विषय की जानकारी के लिए हैं। यदि कोई पाठक कोई भी उचित या अनुचित प्रयोग करता है तो वह उसके हानि-लाभ का स्वयं उत्तरदायी होगा। जानवरों व पशु-पक्षियों को मारना अब कानूनी अपराध है इसकी भूल न करें। अतः पाठक पुस्तक को पढ़कर कोई प्रयोग करने की चेष्टा न करें। उस प्रयोग करने से पूर्व किसी योग्य तान्त्रिक, मन्त्रवेत्ता व ज्योतिषी से पूरी जानकारी प्राप्त करना उचित होगा।

प्रकाशक, मुद्रक व विक्रेता को विषय वस्तु की जानकारी नहीं होती। अतः तत्संबंधी विस्तृत ज्ञान के लिए अन्य पुस्तकें पढ़ें।

कुछ प्रसिद्ध व पुरानी पुस्तकों के लेखक जो स्वर्गवासी हो चुके हैं अथवा जिनका लेखकों व तन्त्रिकों का कोई स्थाई पता नहीं है और फोन या मोबाइल नम्बर नहीं है। उसके लिए *प्रकाशक* व मुद्रक की मजबूरी है। अतः इसके लिए हम क्षमाप्रार्थी हैं कि उनसे सम्पर्क नहीं करवा सकते।

प्रकाशक-लेखक-मुद्रक

मेरी भक्ति गुरु की शक्ति
तन्त्र महायोग

पुस्तक में बताये गये चेटक मन्त्र, शाबर मन्त्र, मुसलमानी मन्त्र, विभिन्न पीड़ा निवारक मन्त्र व टोटके, वशीकरण मन्त्र, कार्यसिद्धि के मन्त्र और हमारे जीवन में काम आने वाले मन्त्रों व यन्त्रों का यह अनुपम महायोग अद्वितीय है।

लेखक : **योगीराज अवतार सिंह अटवाल**

(परम शिष्य : **स्वर्गीय श्री श्री यशपाल जी महाराज**)

(तंत्राचार्य, ज्योतिष सम्राट, ज्योतिष बृहस्पति, ज्योतिषालंकार, गोल्ड मैडलिस्ट तथा रजत पदक आदि उपाधियों से अलंकृत)

संस्थापक : *तन्त्रमणि प्राच्य विद्या साधन एवं अनुसंधान केन्द्र*

मूल्य : ₹ 100.00

रणधीर प्रकाशन, हरिद्वार

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

प्रकाशक : **रणधीर प्रकाशन**
रेलवे रोड (आरती होटल के पीछे)
हरिद्वार-249401
फोन : (01334) 226297

वितरक : **रणधीर बुक सेल्स**
रेलवे रोड, हरिद्वार
फोन : (01334) 228510

लेखक : **योगीराज अवतार सिंह अटवाल**
लेखक का फोन: 01884-250030, 251730
मोबाईल : 09463014704
(समय : सांय 7 बजे से रात्रि 9 बजे तक)

जम्मू विक्रेता : **पुस्तक संसार**
167, नुमाइश मैदान, जम्मू तवी (ज.का.)

शब्द सज्जा : **जे के प्रिन्टस एन ग्राफिक्स, दिल्ली-6**

मुद्रक : **राजा ऑफसेट प्रिंटर्स**, दिल्ली-92

संस्करण : **सन् 2014**

Meri Bhakti Guru Ki Shakti
TANTRA MAHAYOG
Prensted by : Yogiraj Avtar Singh Atwal
Published by : Randhir Prakashan, Hardwar (India)

मेरी धारणा और निवेदन

आज फिर एक पुरातन विद्या को जानकर इस विद्या का प्रसार करने और इस विद्या को जीवित रखने का प्रयास किया गया है। यह विद्या कलियुग में बहुत फलदायी मानी गई है, लेकिन अफसोस है कि हर तरफ बहुत से ताँत्रिक व योगी इन यन्त्रों-मन्त्रों की दुकानें खोलकर जनता को लूट रहे हैं।

आज यह पुरातन विद्या लुप्त हो रही है और पुकार रही है कि कोई अपनी जिन्दगी मुझे बचाने पर लगाये ताकि जनता में पुनः एक बार चेतना आ जाये तो मेरी विधि से अपनी मुसीबतों और दुःखों को दूर कर अपनी मनोकामना पूर्ण कर अपनी जिन्दगी को सफल बनायें। फिर कोई विश्वामित्र पैदा होकर धरती पर मेनका को प्रगट करें, फिर कोई सिद्ध गोरखनाथ का जमाना आये और दुनिया के दुःख दर्द दूर हों। आज विश्वास, साधना, समय, ब्रह्मचर्य की जरूरत है। फिर कोई उठे जो धरती पर विद्या का नाम रोशन करे और कहे कि यह शक्ति है, यह महाशक्ति है,यह शिव के मुख से निकली शक्ति का शब्द है, फिर कोई सिद्ध इनका प्रयोग कर दिखा दे तो यह महान शक्ति धन्य है।

आज भी हम जल को देवता मानते हैं और यह सदियों से चली आ रही रीति है और प्रामाणिक है कि जिस पीर की कृपा से यह धरती हरी-भरी दीख रही है। परन्तु विडम्बना यह है कि

अब हर चीज़ बनावटी मिल रही है। उदाहरण के लिए ताबीज लिखने के लिए केशर, कस्तूरी, अष्टगन्ध, गोरोचन ये सब असली नहीं मिलती हैं इनमें महक तो मिलती है परन्तु गुण नहीं मिलते हैं। आज योग्य गुरु की और शुद्ध सामग्री की जरूरत है। योग्य गुरु ही कहेगा ठहरो मैं तुम्हें सिद्धि दूंगा, ताकि तुम जनता का भला कर सको। गुरु प्रत्यक्ष रूप से नहीं मिलेगा यह आपको श्रद्धानुसार ही मिलेगा।

गुरु प्रेम का एक जीवन्त रूप है जिससे ईश्वर के पास से हम तन्त्र की वह मंजिल प्राप्त कर सकते हैं जो बिना गुरु के प्राप्त नहीं हो सकती। गुरु ही अपने शिष्यों को तन्त्र की डगर दिखाकर आपको पूर्ण शिष्य बनाकर आपको तन्त्र की मंजिल पर बिठाकर आपका नाम रोशन करेगा।

आज न तो शिष्य मिलता है, जो मिलता है वह भी गुरु की गद्दी पर ध्यान लगाये बैठा है कि गद्दी पर कब मेरा राज्य हो। गुरु शिष्य का यह सम्बन्ध नहीं होता। आप जो भी तन्त्र विद्या सीखना चाहते हों तो गुरु और शिष्य का सच्चा सम्बन्ध स्थापित करके ही विद्या प्राप्त कर सकते हैं।

आज हर तरफ मौत का राज्य दिखाई देता है इससे बचने का उपाय तन्त्र ने पहले ही स्पष्ट कर दिया है। आज कोई भी व्यक्ति अपने पिता की जिन्दगी का हाल नहीं बता सकता फिर तन्त्र को कौन बता सकता है लेकिन मैं इस प्राचीन विद्या की रोशनी का आपको बयान कर रहा हूँ।

यह परमात्मा का ही आभार है जो आज तक तन्त्र का नाम हर योगीनाथ से सुनने का हमें सौभाग्य प्राप्त हुआ है। आज जो रोग डाक्टर-वैद्य महीनों में नहीं ठीक कर पाता वह तन्त्र विद्या से एक दिन में टोटके द्वारा ठीक हो जाता है। उस विद्या का हम पुनः प्रकाशन कर उस विद्या को विस्तार से समझा करके मैं आपके हाथों में सौंप रहा हूँ। यह विद्या आज भी प्रचलित है। आज भी अचम्भे व करिश्मों को दिखाती है। हम आज भी इसका उपयोग कर सकते हैं। हजारों तांत्रिकों का नाम सिद्ध पीठ सुनने को मिलता है। महायोग तांत्रिक निवास साधना में रत हैं। आज भी बंगाल का नाम सुनते ही आँखों में अजीब-सी तसवीर दिखाई देने लगती है तथा कानों में अजीब-सी आवाज सुनाई देने लगती है। यह तन्त्र मन्त्र का प्रमुख स्थान है जहाँ हर कोई अपने आपको पक्षी की तरह मानता है कि बंगाल में मनुष्य को पक्षी बना देते हैं यह भी सच है कि ये पुनः अगले किसी ग्रंथ में आपको देखने को मिलेगा।

आज भी तन्त्र से मशान जागता है आज भी भूत-प्रेत कब्रों में निवास करते हैं। मन्त्रों की विधि से भूत-प्रेत को सिद्ध कर अपना मनचाहा कार्य करा सकते हैं। आज भी मुर्दे को कीला जाता है, यह अन्ध-विश्वास नहीं, यह सदियों से चली आ रही रीति है। आज भी चौराहों पर कई चीजों को लोग छोड़ते हैं और दान दिया जाता है यह हमारे योगियों की धारणा है कि हम पर परम परमात्मा की मेहर है। आपने खुद देखा है कि शनि का

प्रकोप होने पर जब तक हम उपाय नहीं करते तब तक कोई कार्य सफल नहीं होता है यह हर व्यक्ति खुद ही परख चुका है अभी भी मन्दिरों और कई स्थानों पर यही मान्यता है कि वहाँ पर जो कामना की जाये वह पूरी होती है। आज वहाँ हजारों दीपों का प्रकाश दिखाई देता है यही तन्त्र का असली रूप है।

आज हर भारतीय मानता है कि यह विद्या अब भी जीवित है अपने में अब भी शक्ति रखती है और सिद्धि मिलती है। इन मन्त्रों में रोग दूर करने की ताकत अब भी मौजूद है आज जरूरत है इस पर विश्वास की, कि कहीं यह विद्या लुप्त न हो जाये ताकि हम इस विद्या के लाभ से वंचित न हो जायें।

आज इस विद्या के असली व प्राचीन ग्रंथ लुप्त हो गये हैं। किसी-किसी के पास ही यह कापी उपलब्ध होगी जो कि तन्त्र का कदरदान हो या साधक हो। मैंने बहुत प्राचीन ग्रंथों के लिए घूम-घूमकर बड़ी मुसीबतों से कुछ प्रतियाँ प्राप्त की हैं। मैं पुनः अपने कार्य का प्रकाशन कर रहा हूँ ताकि नये तांत्रिक भी इस तन्त्र को अपनायें इन सबका जो सार ग्रंथ है उनको बारी-बारी आपको भेंट करूँगा। ताकि पुरातन ग्रन्थ आपको मिल सकें।

मन्त्र-तन्त्र-यन्त्र यह सब पुरातन हस्तलिखित चले आते रहे हैं। अब कुछ ग्रन्थों के नाम का ही पता नहीं चलता है उनका कोई भी प्रयोग उपलब्ध नहीं है। हर आदमी तैयार तन्त्र मन्त्र चाहता है वह अपने आप तैयार नहीं करना चाहता आज न तो योगीनाथ तांत्रिक अपनी विद्या को देते हैं बल्कि अपने

जीवन के साथ ही समाप्त कर विद्या के गुण को अपने साथ कब्र में लुप्त कर लेते हैं वह बहुत बड़ा संकट पैदा कर विद्या की शक्ति घटा रहे हैं। आजकल योगी समाज से बाहर रहते हैं जहाँ मनुष्य पहुँच न पाये और न पता ही मिलता है और प्रामाणिक ग्रन्थ भी बाजारों में नहीं मिलते हैं। बहुत से ग्रन्थों के लेखक के नाम का पता ही नहीं है यह सब धन कमाने का साधन है मैंने बहुत से ग्रंथों का अध्ययन करने के बाद कुछ ग्रन्थों को ठीक पाया।

मैंने पूर्ण खोज के बाद एवं अध्ययन के बाद इस ग्रन्थ को प्रकाशित करने का विचार किया। अपना अनुभव और अपनी खोज के मुताबिक आपको बता रहा हूँ, अपना हक अदा कर आपको कुछ नक्ष और मन्त्रों का शुद्ध रूप भेंट कर रहा हूँ। यह मेरी कलम परमात्मा की इच्छा से कार्य कर रही है। मैं माँ काली के आदेश से यह ग्रन्थ आपको भेंट कर रहा हूँ। यह उठाया बीड़ा कहाँ तक सफल होगा यह परम पूज्य परमात्मा की ही इच्छा है। मैं निरन्तर मन्त्रों का सही रूप खोजता रहा। अपने परम पूज्य गुरु की कृपा से यह कार्य कर रहा हूँ जब तक साँस में साँस है तब तक मैं कार्य में रत रहूँगा इस पुस्तक में हर शब्द प्रामाणिक है।

आप भी इस पुरातन ग्रन्थ को पाकर अपना हर मनचाहा कार्य सफल कर अपना नाम रोशन करें मेरा यह कार्य आपको सही रास्ता बताने का है। आप अपनी मंजिल को प्राप्त कर

जीवन सुख शान्ति से व्यतीत करें। अपने परिवार एवं मित्रों की मुश्किल दूर करें। यह मैंने काफी खोज, तजुर्बों एवं अध्ययन के बाद आपके लिए ग्रन्थ तैयार किया है कि मैं आपके काम आऊँ यह मेरी हार्दिक कामना है। आप भी नियम विधि से कार्य कर शक्ति का अनुभव करें। भारत में अनेकों विद्यायें पाई जाती हैं जो अपने में चमत्कार-सिद्ध हैं उनको मैं मूल रूप में आपके पास पहुँचा रहा हूँ। आज जीवन व्यतीत करने के लिए क्या नहीं करना पड़ता, चोरी, झूठ, हत्या आदि यह आम बात है। तन्त्र अलग बात है यह मैं भला कार्य करने के लिए लिख रहा हूँ।

मेरे अनुभव में तन्त्र अमर है जिसकी ताकत कभी कम या कभी खत्म नहीं होती, यह आपको अपना प्रकाश दिखा रहा है मैं पूर्ण रूप से आशा करता हूँ कि आपकी हर कामना पूर्ण हो इसी उद्देश्य और कामना के साथ आपको यह ग्रन्थ भेंट कर रहा हूँ।

— **लेखक**

आप इन नियमों का पालन अवश्य करें

१. मन एवं शरीर को शुद्ध और पवित्र रखें।
२. परमात्मा और गुरु के ऊपर विश्वास करें।
३. यन्त्र, तन्त्र और मन्त्र पर विश्वास करके कार्य करें।
४. ब्रह्मचर्य व्रत का पालन करें।
५. माँस का प्रयोग न करें।
६. एक स्थान पर ही साधना करें और स्थान शुद्ध होना चाहिए।
७. किसी व्यक्ति से न कहें कि मैं तन्त्र-मन्त्र की साधना कर रहा हूँ।
८. साफ कपड़ों का प्रयोग करें।
९. तेल, सुगन्ध, साबुन का प्रयोग न करें।
१०. अकेले एकान्त में ही साधना करें।
११. अपनी हर साधना में असली धूप प्रयोग करें।
१२. मन्त्र साधना के समय घी का दीपक जलाकर रखें।
१३. साधना एक नियत समय पर ही करें।
१४. नियमानुसार व विधिपूर्वक मन्त्र जाप करें।
१५. लगातार मन्त्रों का जप करें बीच में छुट्टी न करें।
१६. आसन का प्रयोग करें।
१७. मन्त्र जप करने से पहले याद कर लें, उपयोगी रहेगा।
१८. जल का पात्र अपने पास जरूर रखें यह जल २४ घंटे बाद किसी वृक्ष पर डाल दें।
१९. क्रोध, झगड़ा किसी से न करें, झूठ भी न बोलें।
२०. धूम्रपान या अन्य किसी प्रकार का नशा न करें।
२१. साधना के समय घर में ही रहें।
२२. साधना के वक्त मौन रहें, या कम बोलना चाहिए।

अनुक्रमणिका

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

—0—

प्रार्थना

अथ मंगला चार लिख्यते
सिद्ध योगी अवतार सिंह करो कृपा दास पर
जो हो पूरन ग्रन्थ
हो सिद्ध शब्द वचन तन्त्र के
करो खोल विचार कृपा करो गुरु जी
इस विद्या का हो प्रसार
कर खोज लिखे ग्रन्थ का हर प्रयोग
सिद्धि का स्वामी योगी राज गुरचरन सिंह
जो करे तन्त्र का प्रयोग होय सिद्ध
बने योगी नाम कमावे संसार में
सिद्धि से हो मिट्टी भी सोना
सिद्धि करे हर की आस पूरी
जो तन्त्र को अपनाए,
वह मन इच्छित फल पावै
कृपा करै गौरी गणेश और माँ सरस्वती
हो नाम मेरा भी
हो सिद्धि का कार्य पूरा
जै काली कलकत्ते वाली
मेरा वचन न जाए खाली।

●●●●

तन्त्र महायोग

काली चेटक मन्त्र

ओं कंकाली महाकाली केलिक लाभ्या स्वाहा।

विधि—यह सर्व सिद्धि मन्त्र माना गया है यह गोपनीय और प्रामाणिक माँ काली का चेटक मन्त्र है। इस मन्त्र में चमेली के एक हजार फूलों को रखकर एक हजार आहुतियाँ प्रतिदिन मन पक्का (निश्चय) करके करें तब सिद्धि प्राप्त होगी। जब इस मन्त्र से काली प्रसन्न हो जाती है तो साधक के बिस्तर पर एक तोला सोना रोजाना मिलता है यह सिद्धि की निशानी है। कभी लालच करके सिद्धि न करे। साधना सिद्धि के लिये ही करे। ब्रह्मचर्य का पूरा संकल्प करके ही साधना में बैठें तब यह मन्त्र फलदायी होगा। यह मन्त्र बंगाली तांत्रिक का है इस मन्त्र में काली पूरा दर्शन देती है। कलियुग में यह मन्त्र फलदायी है आप फल फूल मिठाई असली धूप तथा घी का दीपक ही प्रयोग में लायें। काली की तस्वीर लगाकर काला आसन एवं काली माता के ही कपड़े का प्रयोग करें। प्रत्येक व्यक्ति इस मन्त्र को कर सकता है यह मन्त्र हर गृह रोग, हर मुश्किल का समाधान करने वाला है। २५ साल पहले एक बंगाली तांत्रिक से मिला है यह मन्त्र सूरज की तरह रोशन है आप भी इसकी रोशनी का अनुभव करें।

नोट— ब्रह्मचर्य रहकर मन्त्र का जप करें अन्यथा दुर्घटना हो सकती है।

कार्य सिद्धि मन्त्र

ओं नमो भगवती ह्रीं श्रीं पद्मावती,
मम कार्य कुरु कुरु स्वाहा।

विधि—इस मन्त्र को १०८ बार जपकर किसी अभीष्ट वस्तु पर लिखे तो राजा—अधिकारी वश में हो जाता है। आज कल यह मन्त्र फलदायी है आज हमको अधिकारियों से काम पड़ता है। यह मन्त्र दीपावली के दिन या ग्रहण आदि के दिन हवन कर १००००८ बार जपने पर सिद्ध होगा यह मस्ताने योगी का मन्त्र है इसके मुकाबले पर दूसरा कोई मन्त्र नहीं है।

रोजी प्राप्त करने का मन्त्र

मन्त्र—ओं नमो नगन चीटि महाबीर,
हूं पूरो तोरी आश,
तू पूरो मोरी आश।

विधि—भुने हुए चावल एक सेर, पाव भर शक्कर, आधा पाव घी, इन सब चीजों को मिलाकर प्रातःकाल सुबह के समय नहाकर जहाँ चींटी का बिल हो, चीटियों के निवास पर जाकर वहाँ मन्त्र पढ़ते हुए चींटियों के बिल के पास थोड़ी-थोड़ी सामग्री डालते जायें इस प्रकार ४० दिन करने से तुरन्त रोजगार

मिलता है एक सफल मन की इच्छा पूर्ण करने वाला मन्त्र है। कर्त्ता का आजमाया हुआ है। नियम पूर्वक करने से अवश्य ही सफलता मिलती है।

नाना सिद्धि चेटक

मन्त्र—ओं नमो भूतनाथाय नमः मम सर्व सिद्धि देहि देहि, श्री क्लीं स्वाहा।

विधि—यह प्रयोग गोपनीय है इसे सिद्ध करने पर व्यक्ति जीवन में ज़ो कुछ भी चाहता है वह पूरा होता है। किसी प्रकार का कोई अभाव इस मन्त्र से नहीं रहता। इस मन्त्र से लक्ष्मी प्रगट होती है।

इस मन्त्र का सवा लाख जप करें।

आत्म रक्षा मन्त्र

मन्त्र—ओं नमो बज्र की चौकी बन में वास,
मरे भूत जो लेवे सांस,
पिण्ड छूटे घटना में पैसे,
ब्रह्मा की कुंजी महेश्वर ताला,
इस पिण्ड का गुरु गोरख रखवाला।

विधि—यह मन्त्र ग्रहण या दीपावली के दिन मिठाई फल सामने रखकर १००१ बार जप करने पर फलदायी होता है फिर सिद्ध हो जाने ७ बार जप कर अपनी चोटी में गांठ लगावे जो

आपके चोटी नहीं हो तो पगड़ी या अंगोछे में गाँठ लगावे। ऐसा करने पर सामने वाले आदमी पर लगा भूत-प्रेत या पिशाच आपके शरीर में प्रवेश नहीं कर पाएगा। यह मन्त्र गोरख तन्त्र का कामयाब मन्त्र है। एक हस्तलिखित ग्रंथ से प्राप्त हुआ है। यह उनके काम आता हे जो लोग भूत-प्रेत का झाड़ा करते हैं तब उक्त मन्त्र उनके शरीर की रक्षा करता है।

सुख पूर्वक प्रसव कराने का मन्त्र

मन्त्र—ओं गफुरूहीम अल्लाह गफुरु रहीम,
रहम करिये अल्लाह भालेकुम करीम।

विधि—तालाब या कुआं से एक हाथ से खींच कर पानी निकालें। वह पानी मन्त्र पढ़कर गर्भिणी को पिलाये तो तत्काल कष्ट से छूट जायेगी। यह मन्त्र १००८ बार जप करने पर सिद्ध हो जाता है। मिठाई फल-फूल अपने सामने रखकर सिद्ध करना चाहिए। सिद्धि दाता को अच्छे कार्य करने के लिए ही इसे सिद्ध करना चाहिए।

नजर के लिए बीसा यन्त्र

विधि—इस यन्त्र को लाल चन्दन से भोजपत्र पर लिखकर तथा धूप-दीप नैवेद्य आदि देकर यन्त्र को बच्चों के गले में तांबे की तावीज में भरकर बांधने से नजर दूर होती है और फिर दुबारा नहीं लगती। दीपावली के दिन १००८ बार भोजपत्र पर

यन्त्र

४	२	६	१
२	४	१	६
६	१	४	२
१	३	२	४

लिखकर पहले सिद्ध कर ले। सिद्ध होने पर काम में लायें। कर्ता का सही प्रामाणिक यन्त्र है।

हनुमान यन्त्र मन्त्र

मन्त्र—ओं नमो हनुमन्ताय आवेषय आवेषय स्वाहा।

विधि—रात्रि को लाल चन्दन से हनुमान जी की प्रतिमा बनाकर उसकी प्राण प्रतिष्ठा करें व सिन्दूर लगायें। गुड़ का भोग लगाकर स्वयं लाल वस्त्र पहनकर लाल आसन के ऊपर दक्षिण की तरफ को मुंह करके बैठ जायें। उस भोग को चौबीस घंटे हनुमान जी के आगे रहने दें, उठायें नहीं, लाल चन्दन की माला से रोज ११०० मन्त्रों का जाप करे, स्त्री का संग न करे, ब्रह्मचर्य का पालन करें। २४ घन्टे बाद फिर दूसरा भोग लगावें

तथा पिछला नैवेद्य उठाकर अलग एक बरतन में इकट्ठा करके किसी भिखारी को भिक्षा के रूप में दे दें। साधना करते समय घी का दीपक जलायें। ऐसा २१ दिन प्रयोग करें तो हनुमान जी प्रसन्न होकर दर्शन देंगे, आपकी मुश्किल हल करेंगे यह फल देने वाला मन्त्र है।

ज्येष्ठा लक्ष्मी मन्त्र

ऐं ह्रीं श्री ज्येष्ठा लक्ष्मि स्वयं भुवे ह्रीं ज्येष्ठायै नमः।

विधि—यह मन्त्र धन, धान्य, यश, भवन, सुख, लक्ष्मी, हर प्रकार की सिद्धि प्रदान करने वाला है। इस मन्त्र को विधि पूर्वक एक लाख बार जप करने से सिद्ध हो जाता है। सिद्ध हो जाने पर सभी कार्य (धन सम्बन्धी) में सफलता देने वाला मन्त्र है। ब्रह्मचर्य का पालन कर मन्त्र को सिद्ध किया जाता है। सिद्धि प्राप्त हो जाने पर मन्त्र का प्रयोग कर अपनी मनोकामना पूर्ण कर दुःख दरिद्र दूर कर जीवन में सुख समृद्धि की प्राप्ति कर सकता है

परन्तु सिद्धि होने के बाद ही मन्त्र का असर (प्रभाव) होता है।

सिद्ध लक्ष्मी मन्त्र

ओं श्री ह्रीं क्लीं श्री लक्ष्मयै नमः।

विधि—यह मन्त्र एक लाख जप करने से फलदाई होगा।

जप के समय एक रंग की गाय के घी का दीपक जलावें। जप के समय दीपक लगातार जलता रहना चाहिए, अच्छी धूप का प्रयोग करना चाहिए। नारायण सहित लक्ष्मी का चित्र सामने रखकर मुख पूर्व की तरफ करके स्फटिक की माला का प्रयोग करें तब ही उचित फलदाई होता है। यह मन्त्र २१ दिन में सिद्धि प्रदान करने वाला है। मन्त्र जाप करते समय ब्रह्मचर्य का पालन करें तथा साधना के समय नारियल, कमल का फूल, मिठाई व इत्र का प्रयोग करें।

साधना साधक के ऊपर ही निर्भर है। नियमानुसार साधना करने पर सिद्धि प्राप्त होती है।

गृह शान्ति मन्त्र

ओं नमो आदेश गुरु को ईश्वर वाचा,
अजर बजरी बडा बज्जरी बाधा दशै दुबार छबा,
और के घालो तो पलट हनुमन्त बीर,
उसी को मारे पहली चौकी गणपती,
दूजी चौकी हनुमन्त तीजी चौकी में भैरों,
चौथी चौकी देह रक्षा करने की,
आवे श्री नरसिंह देव जी,
शब्द सांचा पिण्ड काचा,
चले मन्त्र ईश्वरो वाचा।

विधि—आप यह प्रयोग तब करें जब आपका कोई भी

कार्य सफल नहीं होता हो जैसे—धन की हानि, संतान हानि, कार्य में सफलता न प्राप्त होना, घर में बीमारी का निवास कर जाना ही ग्रहों के प्रकोप का कारण है तब इस मन्त्र का प्रयोग कर ग्रह कष्ट निवारण के लिए कार्तिक कृष्ण प्रतिपदा को सम्पन्न करें। इस प्रयोग में उड़द के दाने और घरों में जितने दरवाजे हों उतनी लोहे की कील का प्रबन्ध पहले ही करना चाहिए फिर स्नान करके शुद्ध होकर साधना स्थान में जायें इस मन्त्र को जप करते समय घी का दीपक जलाकर फूल मिठाई सामने रखकर विधिवत् हवन करें। २ घण्टे तक लगातार जप करना चाहिए। बाद में कीलें और उड़द को १०८ बार अभिमंत्रित करके उड़द को घर के सभी कमरों में फेंक दें। कमरे की चौखट के ऊपर यह कीलें ठीक से ठोंक दें। आँगन में केवल उड़द के दाने ही फेंकें यह सब कार्य मन्त्र पढ़ते हुए ही करना चाहिए तब ही सफलता प्राप्त हो सकती है।

गर्भस्थापन विधि

नीम कुटकी, हरड़, बला गंगेरन, अमोघा, गेंदा, सफेद दूब, काली दूब, लक्ष्मणा, प्रियंगु, सतावर—इनका रस दाहिने हाथ से दाहिनी नासिका में टपकावे और दाहिने कान तथा हाथ मेंधारण करे। इन्हीं औषधियों द्वारा सिद्ध किये हुये दूध घी का सेवन करे तो गर्भ स्थिर रहेगा।

पुष्य नक्षत्र में यह प्रयोग करें।

रोग मुक्ति के लिए मन्त्र

मन्त्र—जै जै गुणवन्ती वीर हनुमान,
रोग मिटे और रिबले रिबलाब,
कारज पुरण करे पवन सुत,
जो न करे माँ अंजनी की दुहाई,
शब्द साँचा पिण्ड काचा,
फुरो मन्त्र ईश्वरो वाचा।

विधि—यदि आपको किसी रोगी के बारे में पता करना है तथा डाक्टर, वैद्य किसी की दवा का इलाज सफल न हो रहा हो ऐसी स्थिति में यह मन्त्र प्रयोग किया जा सकता है। इस मन्त्र का असर दिन में ही दिखाई देने लगता है तथा रोग मुक्ति हो जाती है। कार्तिक मास के किसी भी मंगलवार के दिन ताँबे के गिलास में पानी भर ले और उसमें चिरमी के तीन दाने डाले गिलास सामने रखकर मन्त्र का १०८ बार उच्चारण करें। चिरमी के दाने गिलास से निकालकर रोगी के चारों तरफ उतारा कर दक्षिण की दिशा में उजाड़ की जगह में फेंक दें। पानी रोगी को पिला दें यह आजमाया हुआ मन्त्र है जन कल्याण के लिए, प्रयोग करें।

आधा सिरदर्द निवारण मन्त्र

ओं कामरु देश कामाक्षा देवी,

तहाँ बसै इस्माइल जोगी,
इस्माइल जोगी के तीन पुत्री,
एक रौले एक पकौले, एक ताप तिजारी,
इकतरा मथवा आधा शीशी टरै,
उतरो तो उतारौ चढ़े तो मारौ,
न उतरे तो गुरुड मौर हकारे,
शब्द साँचा पिण्ड काँचा,
फुरो मन्त्र ईश्वरो वाचा।

यह मन्त्र दीपावली के दिन मिठाई फूल फल आदि की भेंट रखकर सिद्ध करें। तब आपके अनुकूल यह मन्त्र होगा। आप फिर आधा सिर का दर्द दूर करने के लिए प्रयोग करें जब आपके पास मरीज आये तो ताँबे के लोटे में पानी भरकर रखे और १०८ बार मन्त्र का जाप करें। पानी को अभिमंत्रित करके पिलायें थोड़ा सा माथे पर दर्द वाले स्थान पर लगायें ऐसा तीन बार करने से कभी भी आधे सिर का दर्द का प्रकोप नहीं होगा। इस आधे सिर दर्द में डाक्टर की दवा का असर नहीं होता मन्त्र से ही ठीक हो जाता है यह मेरा आजमाया हुआ है आप भी प्रयोग करके अपना नाम कमायें किसी से धन न मांगें।

लोकप्रियता का इस्लामी यन्त्र

विधि—आज के युग में हर मनुष्य आगे निकलने की तरकीब में लगा रहता है। इस युग में असम्भव नाम की कोई भी

चीज़ नहीं है भारत के योगियों को हर कार्य सम्भव है। साधारण मनुष्य की तरह जीवन व्यतीत करना या जीवन में कोई भी महान उद्देश्य है यदि आप किसी भी क्षेत्र में लोकप्रिय होना चाहते हैं तो यह प्रयोग करें।

यन्त्र

अल्लाह	नर	अलसमैबात	अलाज
५३६	१०३५	६७	१५५
५३६	५३६	२५	६
२५७	६९	१०३५	१३५

इस मन्त्र को सादे कागज पर वृहस्पतिवार के दिन शुद्ध केसर से लिखकर इसे ताबीज में बंद कर सदा अपने पास रखें किसी शुभ मुहूर्त में १०८ बार लिखकर प्रयोग को सिद्ध करें खास करके दीपावली की रात्रि में प्रयोग सिद्ध करें तो विशेष लाभदाई होगा।

मनोकामना पूर्ण मन्त्र

इस महंगाई के वर्तमान युग में मनुष्य का आर्थिक स्रोत

मजबूत होना बहुत जरूरी है। मनुष्य का महंगाई के कारण परेशान होना आम बात है। इस इस्लामी यन्त्र द्वारा अपनी हर जरूरत को पूरी करके जीवन को सफल बनायें। इस यन्त्र को किसी साफ कागज के ऊपर कश्मीरी केशर की स्याही बनाकर

यन्त्र

बिस्म	अल्लाह	अलहर रहमान	अलरहीम
या गफूर	या गफूर	या गफूर	या गफूर
या गफूर	या गफूर	या गफूर	या गफूर
या गफूर	या गफूर	या गफूर	या गफूर

यन्त्र लिखकर ताबीज में भरकर धारण करने से धन की प्राप्ति होती है। हर काम में सफलता, घर में खुशी का निवास तथा सर्वमनोकामना पूरी होती है। दीपावली की रात या ग्रहण की रात को १०८ बार लिखकर सिद्ध कर लें, सिद्ध करके प्रयोग करें। अन्यथा फलदाई नहीं होगा।

शीघ्र गमन सिद्धि मन्त्र

यह एक अनुभूत प्रयोग है इसे सिद्ध करके व्यक्ति बहुत

तेज चल सकता है। वह व्यक्ति एक घण्टे में हजारों मील की यात्रा पैदल ही कर सकता है, उसे थकान का अनुभव नहीं होता है न कोई मुश्किल ही पेश आती है। यह साधना अष्टमी से शुरु करें। पीले रंग का वस्त्र धारण करें लाल रंग का आसन प्रयोग करें। तेल का दीपक सामने जलाकर उत्तर दिशा की तरफ मुंह करके बैठें। साधना में हकीक की माला १०८ बार रोजाना जप करें। यह साधना ३१ दिन की है, इसे नियमित रूप से धूप आदि का प्रयोग कर अकेले में साधना करें। साधना का स्थान एकांत में होना चाहिए इस प्रयोग को सिद्ध कर लेने वाला व्यक्ति चाहे जितना भी पैदल चल सकता है। उसे भूख प्यास नहीं सताती न मौसम का ही प्रकोप होता है यह सिद्ध मन्त्र है कपाली का दिया मन्त्र है।

मन्त्र

ओं वीर बैतालाय शीघ्र गमनायै गच्छ गच्छ,
बेताल हुं हुं फट्।

वीर साधना

यह साधना बहुत ही कठिन और प्रामाणिक है जो आपको भेंट में दी जा रही है। यह एक नेपाल के नेपाली की देन है उससे मेरा मिलन हिमाचल के एक बस अड्डे पर हुआ और उसके साथ मैं एक हफ्ता रहा। उससे तन्त्र के बारे में चर्चा चली। उसके मुताबिक वीर साधना सबसे बड़ी शक्ति दायक

मजबूत होना बहुत जरूरी है। मनुष्य का महंगाई के कारण परेशान होना आम बात है। इस इस्लामी यन्त्र द्वारा अपनी हर ज्जरूरत को पूरी करके जीवन को सफल बनायें। इस यन्त्र को किसी साफ कागज के ऊपर कश्मीरी केशर की स्याही बनाकर

यन्त्र

बिस्म	अल्लाह	अलहर रहमान	अलरहीम
या गफूर	या गफूर	या गफूर	या गफूर
या गफूर	या गफूर	या गफूर	या गफूर
या गफूर	या गफूर	या गफूर	या गफूर

यन्त्र लिखकर ताबीज में भरकर धारण करने से धन की प्राप्ति होती है। हर काम में सफलता, घर में खुशी का निवास तथा सर्वमनोकामना पूरी होती है। दीपावली की रात या ग्रहण की रात को १०८ बार लिखकर सिद्ध कर लें, सिद्ध करके प्रयोग करें। अन्यथा फलदाई नहीं होगा।

शीघ्र गमन सिद्धि मन्त्र

यह एक अनुभूत प्रयोग है इसे सिद्ध करके व्यक्ति बहुत

तेज चल सकता है। वह व्यक्ति एक घण्टे में हजारों मील की यात्रा पैदल ही कर सकता है, उसे थकान का अनुभव नहीं होता है न कोई मुश्किल ही पेश आती है। यह साधना अष्टमी से शुरु करें। पीले रंग का वस्त्र धारण करें लाल रंग का आसन प्रयोग करें। तेल का दीपक सामने जलाकर उत्तर दिशा की तरफ मुंह करके बैठें। साधना में हकीक की माला १०८ बार रोजाना जप करें। यह साधना ३१ दिन की है, इसे नियमित रूप से धूप आदि का प्रयोग कर अकेले में साधना करें। साधना का स्थान एकांत में होना चाहिए इस प्रयोग को सिद्ध कर लेने वाला व्यक्ति चाहे जितना भी पैदल चल सकता है। उसे भूख प्यास नहीं सताती न मौसम का ही प्रकोप होता है यह सिद्ध मन्त्र है कपाली का दिया मन्त्र है।

मन्त्र

ओं वीर बैतालाय शीघ्र गमनायै गच्छ गच्छ,
बेताल हुं हुं फट्।

वीर साधना

यह साधना बहुत ही कठिन और प्रामाणिक है जो आपको भेंट में दी जा रही है। यह एक नेपाल के नेपाली की देन है उससे मेरा मिलन हिमाचल के एक बस अड्डे पर हुआ और उसके साथ मैं एक हफ्ता रहा। उससे तन्त्र के बारे में चर्चा चली। उसके मुताबिक वीर साधना सबसे बड़ी शक्ति दायक

साधना है मेरे बहुत कोशिश करने पर उसने यह साधना बताई। यह साधना बिना जानकार गुरु के न करें इस साधना में स्वयं ही वीर आता है और हर कार्य करता है।

इसकी ३१ दिन की साधना का विधान है अमावस्या की रात्रि को श्मशान में जाकर १२ बजे एक ताजा मुर्दा कब्र से निकाले। उसे स्नान कराकर फिर दक्षिण की ओर सिर करके पश्चिम की ओर मुर्दे को लिटा दे। उसके सीने में श्मशान की राख पानी में घोलकर (क्रीं फट्) शब्द लिखे फिर मुर्दे की छाती पर पालथी मारकर बैठ जाये। स्वयं सिन्दूर का टीका लगाये फिर उसका पूजन कर यह क्रिया सम्पन्न करे इसके बाद उस मुर्दे को वीर बैताल अभिषेक मन्त्र से पूरित करे। सर्प की अस्थियों से १०८ मनके की माला से जप करके यह मन्त्र सिद्ध करें।

इस मन्त्र को जपने से पहले रक्षा मन्त्र से घेरा बनाकर सुरक्षा चक्र बना लें तब जप करे इस मन्त्र से श्मशान की जागरण क्रिया सम्पन्न करे। दशों दिशाओं को बाँधकर रक्षा करके साधना करे साधना के बाद श्मशान शांत करके आसन से उठे। यह साधना सब साधना में उच्चकोटि की साधना है। इसका कोई मन्त्र मुकाबला नहीं कर सकता। इस साधना के बाद आप पत्थरों, नोटों, आग तथा बाजार बंद करना, किसी का घर उठाकर कहीं ले जाना, भूत-प्रेत हर कार्य करेंगे, प्रतिदिन ताजा शराब व मांस काम में लायें। तब मन्त्र साधना में सिद्धि मिलेगी।

मन्त्र से अद्वितीय रूप की प्राप्ति

मन्त्र

ओं रति क्रियायै कामदेवायै मम अंगे उपांगे,
प्रविशय सुदर्शनायै फट्।

विधि—यह महत्ता तन्त्र में है कि आप मन्त्र से अपना रूप नया बनाकर सबको मोहित कर सकते हैं। यह जड़ी बूटी का लेप नहीं यह सिद्ध मन्त्र एक पुरातन ग्रन्थ से प्राप्त किया हुआ है।

इस मन्त्र को शुक्रवार की रात्रि को शुरु करें। आप स्फटिक की माला से जप करें। अपने पास सौन्दर्य गुटिका रखकर ६ दिन में सवा लाख जप करें तब आप स्वयं असर देखेंगे यह हीरे की तरह असली मन्त्र है तन्त्र सागर का मोती आपको भेंट कर दिया यह एक योगी का निहायत आजमाया हुआ मन्त्र है। आप इसे जरूर करें तब आप इसकी चमक का अनुभव कर पायेंगे। ऐसा मन्त्र आपको कहीं नहीं मिलेगा यह एक लुप्त मन्त्र है। साधना के समय घी का दीपक तथा सुगन्धित धूप का प्रयोग करें। मन-चित्त ध्यान से नियम पूर्वक सिद्ध करें, तब सिद्धि प्राप्त होगी।

धन प्राप्ति का मन्त्र

ओं सरस्वती ईश्वरीं भगवती माता,
क्रां श्रीं श्रीं श्रीं मम धन देहि फट् स्वाहा।

विधि—धन की हो रही कमी को दूर करने का सिद्ध मन्त्र है। यह रोजाना १०८ बार जप करते हुए ४० दिन तक लगातार करे। लक्ष्मी देवी प्रसन्न होकर धन की वर्षा करती है आप इस धन का प्रयोग अच्छे कामों में करें, तब ही धन फलदाई होगा। यदि किसी पर उधार बाकी हो और उस व्यक्ति की नियत बदल गई हो तो इस मन्त्र के प्रयोग के द्वारा व्यक्ति की बुद्धि निर्मल व शुद्ध हो जाती है तथा आपका रुका हुआ धन, मन्त्र बल से वापस आने लगता है। सिद्धि के समय धूप, अगरबत्ती, देशी घी का प्रयोग करें, मिठाई का भोग लगावें। लक्ष्मी आपके घर में सदा निवास करेगी। अतः आपको विधि पूर्वक प्रयोग करना चाहिए तब सिद्धि प्राप्त होगी।

सर्व सिद्धिदायक कुबेर मन्त्र

ओं ऐं ह्रीं श्रीं यक्षराजाय कुबेराय,
वैश्रवराय धनाधिपतये धन धान्य समृद्धि,
मम देही देही दापय स्वाहा ओं।

विधि—आर्थिक उन्नति वैभव, समृद्धि ऐश्वर्य प्राप्ति के लिए यह मन्त्र सिद्ध करें। एक लाख जप कर दशांश की आहुति काले तिलों की देनी चाहिए। यह मन्त्र सिद्ध होने पर व्यक्ति को चारों तरफ से विकास उन्नति तथा लक्ष्मी का वास स्थाई रूप से उसके घर में रहता है तथा हर कार्य में सफलता मिलती है। पूजा करने के बाद महेश्वर की पूजा उचित मानी गई है। साधना

के समय घी का दीपक, इत्र, मिठाई फल फूल आदि से पूजा करें। लक्ष्मी का चित्र सामने रखें तब ही आपको सिद्धि मिल सकती है। ब्रह्मचर्य का पालन तथा अपने नियम का पक्का होकर साधना करें तब हर कदम पर सफलता मिलेगी। यह सिद्ध कर्त्ता अवतार सिंह अटवाल तांत्रिक का भेंट किया मन्त्र है यह मन्त्र धन की हर मुश्किल दूर करने वाला धन सम्पत्ति में अच्छा फल देने वाला कुबेर मन्त्र है।

लाभ प्राप्ति का मन्त्र

ओं ह्रीं ह्रीं ह्रीं ह्रीं श्री मेव,
कुरु कुरु वांछित मेव ह्रीं ह्रीं नमः ॥

विधि—यदि आपके व्यापार में बराबर घाटा पड़ता हो या व्यापार बन्द करने की स्थिति आ गई हो तो प्रस्तुत मन्त्र ४० दिन तक लगातार नित्य नियम से १०१ बार नित्य प्रातःकाल जप करें। आपके व्यापार की हर मुश्किल दूर होकर लाभ ही लाभ आपको मिलेगा यह मन्त्र नियम तथा विधि पूर्वक पूजा, धूप, दीप करके विधि पूर्वक प्रयोग करके सिद्ध करें।

वशीभूत करने का मन्त्र

ओं शिवे भगवे भगे भगे भंग क्षोभय
मोहय मोहय छादय छादय कलेदय कलेदय,
क्लीं शरीरे ओं फट् स्वाहा।

विधि—यह मन्त्र हिमाचल से एक नाथ से मैंने नोट किया था। इस मन्त्र का जाप एकान्त में जिस स्त्री की फोटो के सामने १०८ बार पढ़ा जाएगा वह युवती काम से बेहाल होकर चरणों में दौड़ी चली आयेगी यदि ११ दिन तक सोते समय बराबर प्रयोग किया जाए तो अभीष्ट स्त्री कामातुर होकर रात्रि में सेज पर आएगी। ध्यान रहे इस मन्त्र से गलत कार्य न करें वरना साधक के ऊपर बुरा प्रभाव होगा।

साधना के समय ब्रह्मचर्य का पालन करें। धूप दीप का प्रयोग करें। एकान्त स्थान में तस्वीर को ध्यान में रखते हुए जप प्रारम्भ करें। माला कोई भी प्रयोग कर सकते हैं। आसन लाल रंग का प्रयोग करें, जाप नियम से करें, यह मन्त्र तांत्रिक अवतार सिंह अटवाल का प्रयोग किया हुआ है।

लक्ष्मी प्राप्ति का टोटका

विधि—श्रावण मास में प्रतिदिन १०१ बिल्व पत्र लेकर उनके ऊपर प्रतिदिन 'ओं नमः शिवाय' लिखकर इसी मन्त्र का उच्चारण कर महादेव के मन्दिर में चढ़ावे। ३१ दिन का यह प्रयोग आपको धन धान्य प्रदान करेगा। रोग व बाधा से मुक्ति होती है। रोजगार बढ़ता रहेगा यह अद्भुत टोटका है इसे करके लाभ उठायें।

मोहिनी मन्त्र

ओं मोहिनी मोहिनी कहाँ चली,
हरखु राई कां मचली,
(फलानी नाम ले) के पास चली,
औरों के देखे जले बले,
मुझे देखे पाँव पड़े।
मेरी भक्ति गुरु की शक्ति,
फुरो मन्त्र ईश्वरो वाचा,
बैमाता की आज्ञा।

विधि—इस मन्त्र की विधि यह है कि किसी कृष्ण पक्ष में रविवार के दिन संध्या के समय गुड़ ५० ग्राम जल के साथ खायें उस दिन उपवास रखे, रात्रि को दस बजे के बाद किसी भी वृक्ष के नीचे बैठकर धूप दीप करे, सात लौंग, सात इलायची बड़ी, एक पान, एक सुपारी, एक पेड़ा, अकेले स्नान पहिले ही करे, साफ वस्त्र पहनकर मूंगे की माला से १००१ बार मन्त्र का जाप करे। फिर भोग धरे पान और पेड़ा आप खा ले। इलायची लौंग, सुपारी का चूर्ण बनाकर २१ बार मन्त्र से अभिमंत्रित करके जिसके नाम पर मन्त्र पढ़ा जाए उसी कामिनी के ऊपर फेंक दें। वह एक हफ्ते के अन्दर आपके पास चली आयेगी।

मोहिनी तिलक

ओं नमो तिलक ईश्वर,
तिलक महेश्वर,
तिलक जय,
विजयकार,
तिलक काढ़ी मैं निकलूं घर से,
मोहे सकल संसार,

विधि—यह रावण कृत मन्त्र है। तिलक की सामग्री लेकर यह प्रयोग करें। सामान असली लें। अगर सामान असली नहीं मिलता तो हमसे प्राप्त करें हम असली सामान की खोज करके कठिनाई से प्राप्त करते हैं ताकि कार्य सिद्ध हो सके।

आप गोरोचन, कपूर, कस्तूरी, केशर इन सब वस्तुओं को एकत्र कर अभिमंत्रित कर तिलक करें। १०१ बार मन्त्र से अभिमंत्रित करके तिलक करें, जो देखेगा वही मोहित होकर सेवक बन जायेगा। यह मन्त्र ग्रहण के दिन १००१ बार विधि पूर्वक सिद्ध कर लें।

वशीकरण सुपारी

ओं नमो आदेश गुरु को,
पीर मैं नाथ,
प्रीति में साथ,

वह मेरे साथ,
शब्द सांचा,
पिण्ड कांचा,
फुरो मन्त्र,
ईश्वरो वाचा।

विधि—यह मन्त्र ग्रहण के समय नदी में खड़े होकर सूरज की तरफ मुंह कर मन्त्र का जाप कर सिद्ध कर लेवें। तब ही प्रयोग में लावें। तभी कार्य करेगा। रवि या मंगल के दिन एक सुपारी इस मन्त्र से अभिमंत्रित करके निगल जावें जब मल त्याग करने के बाद बाहर आयें तो सुपारी को उठाकर सात बार गंगा जल से धोकर फिर सात बार दूध से धोकर साफ कर लें। इस मन्त्र का जाप करते हुए सुपारी को धूनी, गुग्गल धूप की दें और अभिलाषित स्त्री को खिला दें। एक हफ्ते में सफलता प्राप्त होगी।

रोजगार वृद्धि के लिए

शुक्रवार के दिन चना और गुड़ की खट्टी मीठी गोलियाँ मिलाकर भूने। चने के साथ ८ वर्ष तक के बच्चों में बाँटें और नियम पूर्वक तब तक करें जब तक कि कार्य पूर्ण न हो जाए।

महाकाली मन्त्र

काली काली महाकाली,

इन्द्र की बेटी ब्रह्मा की साली,
सूखे शंख बजावे थाली,
चले मन्त्र फुरोवाचा,
देखा महाकाली तेरे इष्ट का तमाशा।

सिद्ध करने की विधि

यह मन्त्र ४१००० बार जप करने पर सिद्धि प्राप्त होती है। सिद्धि के बाद अगर किसी को भूत-प्रेत लगा हो या कोई कसर हो धूप लगाकर मन्त्र का जप करें। डोली खेलेगी, आपकी हर बात का उत्तर देगी जो पूछना होगा वह बता देगी यह हमने कई बार आजमाइश करके लिखा है।

इस मन्त्र की २१ या ४१ दिन में सिद्धि करें। नशीली चीज़ों का प्रयोग न करें। काली का नारियल, सवा मीटर कपड़ा दरिया में बहाना है। सिद्धि होने पर काली की कड़ाही भी ३ बार अवश्य दें।

दुश्मन का नाश करने का मन्त्र

काला कुलवां कपाल घाती,
मन कलेजा तोड़ा छाती,
धोवे पीवे घड़ा रक्त का लिए,
ढाईयां घटी का करके स्यापा।

विधि—यह मन्त्र ४१ दिन में सिद्धि देने वाला नाथों का

मन्त्र है। श्मशान भूमि में आसन लगाकर १०१ बार जप करे। ४१ दिन तक करने पर देवता वर देगा, डरें नहीं। यह मशान शाबर मन्त्र है, आपको कहीं नहीं मिलेगा। शराब मांस सामने रखकर साधना करें।

मन्त्र सिद्ध होने के बाद चलाने की विधि

एक कोरी हांडी में लोहे के टूटे औजार-कैंची, उस्तरा मुंह बन्द करके धूप में रख दें तथा शराब माँस का भोग लगाकर, जिस पर भेजना हो उसका नाम लें। दुश्मन के घर की तरफ मुंह करके जमीन पर हांड़ी फेंक दें। फेंकने से पहले दुश्मन का नाम लेकर १०१ मन्त्र का जप करके फेंके। दुश्मन तबाह हो जाये, यह शब्द कहें आप अपनी रक्षा करके ही यह कार्य करें।

भूत-प्रेत का उतारा

सिर छूटे पत्थर फूटे,
पत्थर में बेरती,
बेरती में काला चोर,
हमारी भक्ति,
गुरु की शक्ति,
फुरो मन्त्र,
ईश्वरो वाचा,
काम सो जो,
निरंकार आप करे,

विधि—यह मन्त्र २१ दिन एकान्त में अकेले बैठकर कब्र में या उजाड़ में १०१ बार मन्त्र का जाप करे तब सिद्ध होगा। जिसके भूत-प्रेत लगा हो उसको मोर पंख से उतारा करे। साथ ही यह मन्त्र पढ़कर फूंक भी मारे। मन्त्र जप में २१ दिन तक माँस शराब देवता को भेंट दें।

नोट—काली शाबर तन्त्र के यह मन्त्र आपको विधि सहित योगीराज ज्ञानी गुरचरण सिंह की कोशिश से मन्त्र सिद्धि विधान सहित एक ग्रन्थ के रूप में भेंट किया गया है। इन मन्त्रों को सिद्ध कर अपना नाम यश, धन, हर चीज प्राप्त करें और तन्त्र विद्या का नाम भी ऊँचा करें।

आप हर मन्त्र की सिद्धि के समय यह याद रखें कि पहले रक्षा मन्त्र का जप कर अपनी रक्षा करें। फिर धूप लगावें मौसम के फल मिठाई अपने पास रखकर जप करें। एक हफ्ते बाद यह भेंट दरिया में बहा दें। शराब, माँस का प्रयोग विधि से ही करें।

कुछ नये प्रयोग हमने आपको भेंट किये। यह सब प्रयोग अनुभूत हैं। आपने कोई भी बात पूछनी हो तो हमको पत्र डालें और वापसी डाक टिकट लगा लिफाफा भेजें। तभी आपको उत्तर दे पायेंगे।

पुत्री दायक तन्त्र

चावल के धोवन को नींबू की जड़ के साथ पीसकर स्त्री को पिला देने के उपरान्त सम्भोग करने से कन्या जन्मती है।

समस्त रोग नाशक टोटका

किसी व्यक्ति के रोगी होने पर उसके पहनने वाले कपड़े से कुछ धागे निकालकर रुई की बत्ती बनायें यह शनिवार या अमावस्या को ही करना चाहिए, गाय के घी को दीपक में डालकर इस बत्ती को जलायें फिर श्रद्धापूर्वक श्री हनुमानजी का ओं नमो हनुमंता का जप करते हुए रोगी व्यक्ति के स्वास्थ लाभ की कामना करें। मन में यह भावना होनी चाहिए कि आपकी प्रार्थना दीपक ज्योति से मिलकर श्री हनुमान जी के माध्यम से होकर तैंतीस कोटि देवताओं को पहुंच रही है। वे अपनी कृपा से बीमार व्यक्ति को स्वास्थ प्रदान कर रहे हैं।

ध्यान रहे गौ माता के रोम-रोम में देवताओं का निवास है, बस जरूरत है मन तन से पवित्र रहकर सच्चे मन से प्रार्थना करने की। बाहरी हवा का कुप्रभाव भी दूर हो जाता है।

कृत्तिका नक्षत्र में प्याज का पत्ता गाय के दूध में पीने से सभी रोग नष्ट हो जाते हैं।

आकस्मिक दुर्घटना से बचाव

यात्रा करते समय कोई दुर्घटना हो जाए और अचानक पुलिस घेरे या बिना कारण परेशान कर रही हो तो ऐसी दशा में यह मन्त्र आपकी सहायता कर सकता है।

श्री कृष्णं शरणं गच्छामि।

या

ओं नमो भगवते वासुदेवाय॥

जिस स्थिति में भी हो मन्त्र का जाप प्रारम्भ कर दें। यदि किसी भी प्रकार की परेशानी में नहीं हैं तो भी नियमित रूप से प्रातःकाल १० माला का जप कर सम्भावित खतरे से मुक्त रहें। यह निहायत कामयाब मन्त्र का प्रयोग कर हर मुश्किल को दूर करें। यह सबसे सही टोटका हमने आपको ग्रन्थों से निकालकर दिया है इसका प्रयोग कर अपनी मुश्किलों को दूर करें।

दफा खौफ जालिम व तस्वीर हाकिम

९८५	९८०	९८०
९८६	९८४	९५२
९८१	९८७	९८३

विधि—जो व्यक्ति किसी के गुस्से से डरता हो और उसके सामने जाने से खौफ खाता हो तो उसे चाहिए कि वह जुमेरात के दिन रोजा रखे। शाम को छुहारे से इफ्तार करके बाद में नमाज मगरब में १३१ बार बिस्मिल्लाह पढ़े। बाद खत्म होने

पर नमाज इश पढ़कर बिस्मिल्लाह पढ़े। इब्ल्दाये खत्म के किसी से कलाम न करे। जब सुबह हो, बाद नमाज १२१ बार पढ़े हाकिम कैसा भी होगा राजी रहेगा। अमल तीन जुमेरात के बाद ताबीज पहने। इस यन्त्र को लिखकर अपने पास ताबीज में बन्द कर रखें। हाकिम जब सूरत देखेगा संगदिली मोम हो जायेगा यन्त्र नीचे है ऊपर और नीचे दोनों की विधि एक ही है।

हाकिम मोम होने का नक्श

३	७	६
९	५	१
४	३	८

जबान बन्दी के लिए

८	११	१४	११
१२	२	७	६२
३	फुला	९	६
१०	५	६	१५

विधि—आमिल यह है कि तावीजात जबान बन्दी में जब किसी जबान दराजी करके खलक अल्लाह को सताया हो या किसी की झूठी गवाही देने का इरादा हो तो या कि नाहक बुराई करता हो किसी की हकतल्फी पर आता हो इस खत्म को पढ़े उसकी जबान बदगोई से बन्द हो जायेगी और करने वाले की तरफ हो जायेगा खत्म यह है कि नमाज के वक्त बाद बिस्मिल्लाह ७८६ बार पढ़े और हर दुहाई के बाद अललसान फुलाविन फूला करे, और जब कोई शख्स किसी हाकिम के पास जाये तो इस नक्श को लिखकर अपनी जबान के नीचे रखे तो कार्य सिद्ध हो।

तलवार बन्दी के लिए

८	९४४५६	९४४५१	१
९४४५४	२	७	९४४६१७
३	९४४६१	९४४४४	६
९४४५५	५	४	९४४५६

जब किसी से लड़ाई हो या दुश्मन से मुकाबला हो तो

११०० बार बिस्मिल्लाह अर्रहमान के बाब जो पढ़े जख्म में आप महफूज रहेंगे।

जो कोई इस नक्श को (सुरीय हरीद के नक्श को) लिखकर अपने पास रखेगा जख्म तलवार व नेजा गोली आदि का जख्म न पहुँचेगा।

चोर की शिनाख्त के लिए

४४६	४५०	४५३	४३९
४५२	४४०	४४५	४५१
४४१	४५५	४४१	४४४
४४९	४४३	४४३	४५४

यह नक्श जब किसी का माल चोरी गया हो तो इस नक्श को लिखकर मकान के किसी तरफ पत्थर के नीचे दबा दे माल सब मिल जायेगा।

यह नक्श समय विधि से लिखें। दिन समय आदि का विचार न करने पर कामयाबी न होगी इसलिए दिन व समय का विचार अवश्य करें।

वायुगोला दूर करने का यन्त्र

५	७
९	२

इस नक्श को कागज पर लिखकर (स्याही से) रविवार को सूर्य के सामने जल से धोकर पी लें तो वायु गोला की शान्ति होगी यह मेरा किया हुआ है। १०१ बार लिखकर सिद्ध कर लें तब आपको सिद्धि मिलेगी। नियम से यन्त्र को मेरी विधि के अनुसार लिखकर लाभ प्राप्त करें।

शीतला माता का यन्त्र

४२००	४६०००	२०००	७०००
६०००	३०००	४६०००	४५०००
४०००	५ ॥०००	४४००	५ ॥०००
१०००	७०	१६	६२१

इस यन्त्र को भोजपत्र पर अष्टगंध से लिखें और रोगी के

सिर के नीचे रखे तो शीतला की शांति होगी यह यन्त्र दीपावली को १०००१ बार लिखकर सिद्ध कर लें तब आपको सही सिद्धि प्राप्त होगी।

नोट—आपको अष्टगन्ध, पञ्च गन्ध, केशर आदि की जरूरत हो तो हमसे असली प्रामाणिक सामान प्राप्त करें। यदि आप कोई यन्त्र चाहते हो तो आपको यन्त्र भी भेज दिये जायेंगे। आपकी हर मुश्किल दूर करना हमारा मकसद है। आपको असली सामान भेजा जायेगा जवाबी पत्र लिखें ताकि आपको उत्तर दिये जायें।

ज्वर दूर करने का नक्श

६	।४	५३
६	।।६	१
४।	४५	८

इस नव कोष्ठक वाले यन्त्र को सिद्ध करके केशर की स्याही से भोजपत्र या कागज पर लिखकर रोगी की भुजा या गले में पहनायें हर तरह का ज्वर दूर करने का प्रयोग आप सिद्धि के बाद करें।

बच्चों को सूखा रोग के लिए

८	८	८
३३४	३३४	३३४
३३४	३३४	३३४
३३४	३३४	३३४
नाम	बच्चे	का
७	७	७

इस मन्त्र के उपयोग की विधि इस प्रकार है—अनार की कलम से लाल चन्दन की स्याही से पीपल के ४ पत्ते या भोजपत्र पर चार यन्त्र तैयार करें तब उनको धूप दें। उनमें से एक यन्त्र गंगाजल से धोकर बच्चे की माँ को पिलायें शेष ३ यन्त्रों का प्रयोग इस तरह से करें कि बच्चे की माँ के दूध के साथ बच्चे को पिला दें। तीन यन्त्रों को एक-एक दिन एक-एक ही पिलायें। मीठे चावल बनाकर बच्चों में बांटें तथा बच्चे को भी खिलाएँ। आप जिस बच्चे के लिए यन्त्रों का प्रयोग करेंगे वह बच्चा ठीक हो जायेगा। आप सूखा रोग की दवाई भी हमसे मंगा सकते हैं यह हमारे गुरु की बताई दवा है। कभी भी खाली नहीं जाती।

भूत प्रेत बाधा निवारण यन्त्र

२४	३१	२	७
६	३	२८	२७
३०	२५	८	१
४	५	२६	२९

यह यन्त्र लिखते व सिद्ध करते समय घी का दीपक अगरबत्ती अवश्य जलायें ताबीज के खोल को धूप, गुलाब, दूध से शुद्ध करें।

इस यन्त्र को भोजपत्र के ऊपर अष्टगंध से लिखकर रोगी को धारण करा देना चाहिए। यन्त्र मंगलवार को ही लिखना चाहिये। यन्त्र को किसी बर्तन में रखकर साफ पानी डालकर गायत्री मन्त्र से अभिमन्त्रित करके रोगी को पिला देना चाहिये। यह क्रिया दिन में दो बार करनी चाहिये तथा बाकी थोड़ा पानी रोगी के ऊपर छिड़क देना चाहिए। यन्त्र को एक बार बांधना है यह प्रयोग नियम सहित करें। हमारे बाबा वरियामसिंह का दिया हुआ है और बहुत बार आजमाया हुआ है।

उच्चाटन प्रयोग

विधि—उल्लू की हड्डी की कील निम्नलिखित मन्त्र द्वारा ११ बार अभिमन्त्रित करके जिसके घर में गाड़ दिया जाये उसका उच्चाटन हो जाता हैं अर्थात वह व्यक्ति घर छोड़कर चला जाता है। कील को अभिमन्त्रित करने से पहले १०००१ बार दिवाली के दिन मन्त्र का जप कर सिद्ध कर लेते हैं। इस मन्त्र को किसी को सताने के लिए न करें। असर उलटा भी हो सकता है।

मन्त्र—ओं दह दह हन हन स्वाहा।

ज्वर नाशक तन्त्र

उल्लू कल्प में निम्नलिखित ४ प्रयोग ज्वर नाश करने के लिए दिए हैं—

१. उल्लू की पूंछ को पांच वर्ण की ताबीज में भरकर रोगी के गले या भुजा में बांधने से ज्वर शीघ्र नाश हो जाता है।

२. उल्लू की चोंच जेठी, हरताल और एक—काकमाची इन सबका चूर्ण बनाकर आँख में अंजन लगायें चौथे का ज्वर दूर होगा।

३. उल्लू की दाहिनी टाँग (पैर) को सफेद रंग के डोरे में लपेटकर रोगी के बांये कान में बाँध देने से ज्वर शीघ्र नाश हो जाता है।

४. उल्लू के नेत्र को किसी द्विज के रक्त में मिलाकर तथा

भोजपत्र पर रखकर जिस रोगी व्यक्ति के हाथ में काले रंग के धागे में लपेटकर बाँधे तो बाधा दूर हो जाए तथा रोगी ठीक हो जाये।

(यह प्रयोग जो हमने आपको भेंट किये हैं यह हमने २०० साल की पुरानी किताबें जो कि उर्दू भाषा में हैं उसका हिन्दी रूपान्तर किया है। कुछ समय बाद हम कौआ और उल्लू तन्त्र का यही हिन्दी रूपान्तर आपको भेंट करेंगे। अनुवाद का काम चल रहा है।)

मृत्यु वशीकरण तन्त्र

विधि—उल्लू के हृदय को असली गोरोचन के साथ पीस कर उपरोक्त मन्त्र से अभिमन्त्रित कर आँखों में अंजन की तरह लगायें। यदि मृत्यु भी देखे तो वशीभूत हो अर्थात् इस अंजन को लगाने वाले को जो भी देखे वशीभूत हो जाए।

व्यवसाय वर्धक लक्ष्मी यन्त्र-मन्त्र

विधि—यह यन्त्र दीपावली या किसी अमावस्या की रात को भोजपत्र पर अनार की कलम तथा केसर की स्याही से लिखें—दीपावली ही प्रमुख दिन है।

यदि इसे स्वर्ण, रजत अथवा ताम्र पत्र पर खुदवा लिया

जाये तो और भी अच्छा है। लेखन कार्योपरान्त यन्त्र को किसी लकड़ी की चौकी पर पीला रेशमी वस्त्र बिछाकर स्थापित कर दें तथा गन्ध, धूप, पुष्प आदि से पूजन करें। मन्त्र यह है कि यन्त्र नीचे लिखा है। इस मन्त्र की ११ माला जप करें।

ओं श्री महालक्ष्म्यै नमः ॥

मन्त्र जप की अवधि में शुद्ध घी का अखण्ड दीपक जलाएँ जब जप पूरा हो जाये तो यन्त्र को अपनी दुकान या जहाँ मन चाहे वहाँ स्थापन कर प्रतिदिन धूप दें इस यन्त्र के प्रयोग से धन बहुत आयेगा हर काम में सफल होगा। व्यवसाय में वृद्धि तथा घर आनन्दमय रहेगा। यह मेरा आजमाया हुआ है आप भी करके लाभ प्राप्त करें।

१६	९	४	५
३	६	१५	१०
१३	१२	१	८
२	७	१४	११

यह यन्त्र दीपावली की रात्रि को १०००१ बार लिखकर सिद्ध कर लेते हैं।

बवासीर की निवृत्ति के लिए

मन्त्र—ओं नमो आदेश कामरू कामाक्षा देवी को,
भीतर बाहर मैं बोलूँ सुनदेकर मन तूँ,
काहे जलावत केहि कारण,
रसहित पर तू डग़र में विख्यात,
रहे ना ऊपर अमुक के गत,
नरसिंह देव तुमसे बोले वाणी,
आज्ञा हाडी दासी फुरो मन्त्र चण्डी उवाच।

विधि—प्रात:काल और सायंकाल के समय ७ बार मन्त्र का उच्चारण करके झाड़ा करें १५ से २० दिन तक बवासीर से छुटकारा मिल जायेगा।

समृद्धि दाता यन्त्र

६	७	२
१	५	९
१	३	४

विधि—इस यन्त्र को दीपावली की रात को भोजपत्र पर चन्दन अथवा कस्तूरी की स्याही से अनार की कलम द्वारा लिखें। इसे स्वर्ण, रजत अथवा ताम्र पत्र पर खुदवा भी सकते

हैं। लिखने के बाद यन्त्र को किसी लकड़ी की चौकी पर लाल रंग का वस्त्र बिछाकर इसे वस्त्र के ऊपर स्थापित कर दें, फिर गन्ध, पुष्प, धूप, दीप से यन्त्र की पूजा करें।

ओं श्रीं श्रीं कमले कमलालये प्रसीद प्रसीद श्री ओं महालक्ष्म्ये नमः।

इस मन्त्र को १०८ बार जप कर बाद में इस मन्त्र का जाप करते हुए २१ आहुतियाँ देकर हवन करे तत्पश्चात् यन्त्र को कोष, अलमारी, भण्डारागार आदि में जहाँ उचित समझो उस जगह स्थापित करें। यह यन्त्र जिस जगह स्थापित होगा वहाँ धन धान्य तथा प्रत्येक वस्तु की वृद्धि रहेगी कभी भी घाटा नहीं होगा।

प्रतिवर्ष पर्व दीवाली की रात्रि में नया यन्त्र तैयार कर पहले यन्त्र को दरिया में बहा कर नये यन्त्र को १०१ बार सिद्ध करके रखें।

दूध बढ़ाने का मन्त्र

ओ३म हनी करालिनी पुरुष सुख सुख ठः ठः।

विधि—यह वीरभ प्रोड्डीस तन्त्र का मन्त्र पंचदशाक्षर है। इसके विधिवत् प्रयोग से गाय और भैंस के दूध में वृद्धि होती है। गाय, भैंस को जो भी घास या फूंस आदि खिलाना हो उसे उपरोक्त मन्त्र से १०१ बार अभिमन्त्रित करके खिलाने से दूध में वृद्धि होगी।

ऋणमोचन यन्त्र

७८५	५	३९	६६३
३७	६७	८९	६५
६१	०	३	८८
१०	८७	६६	२४

इस यन्त्र को किसी मंगलवार को शुभ मुहूर्त में भोजपत्र के ऊपर अनार की कलम से अष्ट गन्ध से लिखें। उसे लकड़ी की चौकी पर लाल या पीले रंग का वस्त्र बिछाकर प्रतिष्ठित कर दें तथा गन्ध, पुष्प, धूप, दीप आदि से पूजन कर एक माला इस मन्त्र का जप करे।

ओ३म नमः भौमाय।

फिर यन्त्र को ताँबे या चाँदी के ताबीज में भरकर अपनी भुजा या कण्ठ में धारण करें या अपने पास रखें प्रतिदिन यन्त्र को धूप देना शुभकारी माना जाता है, ऐसा करना बहुत ही आवश्यक है क्योंकि यन्त्र को धारण करने से हर समस्या का हल हो जाता है और ऋण अथवा कर्ज से छुटकारा मिल जाता

है। सिद्धि नियम द्वारा २१ दिन १०१ बार नियम मानकर धूप, दीप का प्रबन्ध कर सिद्ध करें।

लक्ष्मी दाता यन्त्र

२	१	४
×	७	२
१	५	६
×	९	×

यह यन्त्र लक्ष्मीदायक माना गया है। यन्त्र को सफेद कागज पर २१००० की संख्या में लिखकर प्रत्येक एक यन्त्र को आटे के साथ २१०० गोलियों के बीच में बन्द करके नदी या तालाब में डाले जहाँ कि मछलियाँ हों तो यन्त्र सिद्ध होगा। फिर धन का लाभ करायेगा लक्ष्मी उसके घर में निवास करेगी और कोई यन्त्र इसका मुकाबला नहीं कर सकता २१ दिन में सिद्ध करें, रोजाना १०१ यन्त्र लिखकर १०१ आटे की गोलियाँ बनाकर तालाब या नदी में डालें तब यह सिद्धि प्राप्त होगी। इसको शुभ मुहूर्त में

लिखें, शनिवार को छोड़कर बाकी दिन शुभ हैं सिद्ध होने पर फल देगा।

भाग्य वृद्धि अक्षर यन्त्र

अ	आ	र	ई
उ	ऊ	ऋ	अ
ल	ॡ	ए	ऐ
ओ	औ	अं	अः

इस यन्त्र को शुभमुहूर्त में भोजपत्र के ऊपर कस्तूरी तथा कपूर द्वारा अनार की कलम से लिखें। धूप, दीप, नैवेद्य आदि से पूजन करें। चाँदी अथवा ताँबे के ताबीज में भर कर अपनी दाईं भुजा अथवा कण्ठ में धारण कर लें तो भाग्य वृद्धि होगी।

व्यापार वृद्धिकर यन्त्र

इस यन्त्र को किसी शुभ मुहूर्त में सोने चाँदी अथवा ताँबे के पत्र पर खुदवाकर कृष्ण पक्ष की चतुर्दशी तिथि को रात्रि के समय किसी शुभ स्थान पर स्थापित कर दें तथा उसके समक्ष

श्वेत आसन पर श्वेत वस्त्र धारण कर श्वेत रेशम की माला हाथ में लेकर 'ओं ह्रीं श्रीं नमः' इस मन्त्र की १० माला जपे तथा यन्त्र के ऊपर श्वेत रंग का फूल चढ़ायें।

ह्रीं	ह्रीं	ह्रीं	ह्रीं	ह्रीं
ठः	४२	३५	४०	फु
ठः	३७	३९	४१	फु
ठः	३१	४३	३६	फु
है	भुर	भुर	भुर	भुर

इस यन्त्र को 21 दिनों तक करें। तब धूप देकर यन्त्र को तिजोरी में रख दें, इससे व्यापार में वृद्धि होती है। यन्त्र विधि सहित प्रयोग करें यह आजमाया हुआ है।

सर्वकार्य सिद्धि यन्त्र

इस यन्त्र को हल्दी से लिखकर कागज पर यन्त्र के नीचे अपना मनोरथ लिखे, फिर फलीता बनाकर गुरुवार के दिन दीपक में जला दे। सात गुरुवार को इस तरह करने से आपके

८	१५	२	७
६	३	१२	२१
१४	९	८	१
४	५	१०	१३

सर्व कार्यों की सिद्धि होगी। ११ दिन तक हल्दी की माला से 'ओं ह्लां ह्रीं सः' इस मन्त्र को नियम पूर्वक करने से सिद्धि होगी।

सिर पीड़ा दूर करने का यन्त्र

७	७।	५	८
३	२	४	७
३।	४	२	५
७।	०	५	०

इस यन्त्र को दीपावली को १००१ बार लिखकर आप सिद्ध करें, तब प्रयोग करें। विधि पूर्वक अष्टगन्ध की स्याही से भोजपत्र पर लिखकर सिर पर बाँधें तो ५ मिनट में सिर की पीड़ा दूर होती है। यह मन्त्र अनार की कलम से लिखना चाहिए, पहले मन्त्र की सिद्धि कर लें फिर ही कामयाबी मिल सकती है ताँत्रिक अवतार सिंह का आजमाया हुआ है।

जुआ जीतने का यन्त्र

२८	३५	२	७
६	६	३२	२९
३४	२५	८	१
४	५	३०	३३

इस यन्त्र को दीपावली के दिन १००१ बार केशर की स्याही से लिखकर पहले सिद्ध करें फिर रविवार को भोजपत्र पर लिखकर अपनी पगड़ी के साथ बाँधकर जुआ खेलने में जीत होती है यह सब नक्श हमने सही पाये हैं आपको भी चाहिए कि आप जनता का भला करके नाम कमावें।

हर मकसद के लिए कामयाब अमल

अल्लह हू हू हू,
अल्लह हू हू हू,
अल्लाह हू हू हू।

विधि—यदि कोई व्यक्ति चाहे कि उसकी सब मनोकामनाएं पूर्ण हों तो उसको चाहिए कि ५ गुरुवार तक लगातार इस अमल को पढ़ें और जब तक अमल समाप्त न हो जाये तब तक नियमबद्ध रहे एक दिन भी बीच में नागा न करें वरना सब व्यर्थ हो जायेगा।

इस अमल मुबारक को एक हजार बार नदी में अपने पैर लटका कर पढ़ता रहे बीच में यदि कोई भयंकर आकृति दिखाई दे तो डरना नहीं चाहिए। अमल समाप्त होने की वजह से आप बड़ी आध्यात्मिक शक्ति के मालिक होंगे। इस अमल की शक्ति से जो कुछ करेगा वह अल्लाह की कृपा से सफल होगा।

वाक् सिद्धि मन्त्र

ओं ह्रीं कामिनी स्वाहा।

विधि—यह साधना करने वाला झूठ न बोले, वह प्रतिदिन १३ हजार बार ऊपर लिखे मन्त्र का जाप करें। तीन मास तक लगातार जप करने से सिद्धि प्राप्त होगी। सिद्धि प्राप्त होने के उपरान्त भी इसे छोड़ना नहीं चाहिए। जब आप मन्त्र का जाप

बन्द कर दोगे तो सिद्धि बन्द हो जायेगी इसलिए प्रतिदिन नियम पूर्वक मन्त्र जप कर अपनी सिद्धि (वाक्) जारी रखें।

बन्दी छुड़ाने का यन्त्र

ॐ।

वा बु । ७७१ । ढ ७६

ध ॥ ५२ । ७ ॥ ॥ ।

भगी ७७७५७७

विधि—इस यन्त्र को दीपावली के दिन २१०० यन्त्र लिखें। भोजपत्र पर अष्टगन्ध से लिखकर साधना करें। सिद्धि हो जाने पर मुर्गी के अण्डे पर लिखकर चूहे के बिल में गाड़ दें। यह मन्त्र शुक्लपक्ष के दिन रविवार को लिखें। लगातार आग जलावें बन्दी बहुत जल्द से छुटकारा करेंगे।

अज्ञात का पता करने का यन्त्र

ऐ	ह्रीं	क्लीं
डा	मु	चा
यै	नि	चे
गुम का नाम		

विधि—एक कोरा घड़ा ले आयें जिस पर काला दाग न हो, इस मन्त्र को घड़े के ऊपर तथा कसोरे के बीच में लिख दें मन्त्र यह है।

ओं ऐं ह्रीं क्लीं चामुण्डायैः विचैः।

एक कागज पर लिखकर घड़े में डाल दें तथा ४ सिक्का ताँबे के डाल दें। कसोरे से ढककर ऊपर दिये मन्त्र का जाप करते हुए घड़े को घुमायें। घड़े को एक ही स्थान पर टिका रहने देना चाहिए। सात दिन ऐसा करने से वह अज्ञात मनुष्य अपने स्थान से चल देगा या अपना पता भेज देगा। ऊपर दिए यन्त्र को चरखे से बाँधकर उल्टा करके घुमायें। मन्त्र का प्रयोग घड़ों के साथ करें हमने २१ दिन १०१ बार सिद्धि करके प्रयोग हमसे मंगाकर भी प्रयोग कर सकते हैं।

बिच्छू काटे का मन्त्र

ऊंचा खेड़ा दहा कारक केरा,
जहाँ बसे निर्गुण का चेला लाल बिच्छू,
काला बिच्छू पीला, मटियाला धोला,
पहाड़ी हरी बिच्छू धरी चूप,
सोने की माला ईश्वर मिले,
गोरा नहाय मेरा बन्ध निरबस हो जाय,
फुरो मन्त्र ईश्वर वाचा मेरे गुरु का शब्द साँचा।

विधि—ग्रहण के समय २१००० बार जप कर सिद्ध करके

प्रयोग करें। सिद्धि के बाद मीठी चीजों को बच्चों को प्रसाद के रूप में बाँटे। जिस स्थान पर बिच्छू ने काटा हो उस स्थान पर मौली की गाँठ लगावें। यदि समय पर मौली न मिले तो राख का प्रयोग करें विधिवत् नियम पूर्वक सिद्धि करके प्रयोग करें।

तकाजा दूर करने का मन्त्र

ओं नमो भूताय इस्माइल योगी,
कामाक्षा देवी बीड़ा उठावे,
मेरा कार्य सिद्ध करे,
कोऊ न माँगें आरु देवे,
मीठा बोले कारज करो,
फुरो मन्त्र ईश्वरो वाचा,
दुहाई गुरु गोरख नाथ जी की।

विधि—ताँबे के एक बर्तन में हत्थाजोड़ी रख दें और उस पर कुमकुम या सिन्दूर से तिलक करके सामने भोग लगावे लोबान की धूप का प्रयोग करें घी का दीपक जलाकर दस हजार मन्त्रों का जाप करें। मन्त्र का जप समाप्त होने पर हत्था जोड़ी पर जो सिन्दूर लगाया था उसका तिलक लगाकर कर्जा माँगने वाले के सामने जाए तो वह कर्जा नहीं माँगेगा तथा प्रेम भाव से बोलेगा यदि और आवश्यकता होगी तो कर्जा और देगा मन्त्र का जाप करने से पहले हत्था जोड़ी के नीचे ५० ग्राम सिन्दूर रख देना चाहिए यह सिन्दूर तिलक के काम आता है।

यह मन्त्र हमने एक गरीब व्यक्ति के ऊपर करके उसका कष्ट दूर किया है आजमाया हुआ है आप सारा सामान पवित्र होकर शुद्धि प्राप्त करें विधि नियम पूर्वक करें ब्रह्मचर्य रखकर धर्म का पालन करके अपनी मनोकामना पूरी करें।

विजय गणपति प्रयोग

मन्त्र

ओं वट वरदाय विजय गणपतये नमः।

विधि—आप यह प्रयोग करने से पहले गणेश जी की मूर्ति की प्राण प्रतिष्ठा करते हुए मन्त्र द्वारा सिद्ध करें। शुद्ध जल, लाल चन्दन, कनेर का फूल, घी का दीपक, लाल चन्दन की माला, लाल रंग का आसन का प्रबन्ध कर पूर्व दिशा की ओर मुंह कर किसी भी बुधवार को साधना शुरू की जा सकती है। हर मुश्किल तथा मुकदमों में सफलता प्राप्त करने का अचूक प्रयोग है। अपनी शक्ति का प्रयोग करके सफलता प्राप्त कर सकते हैं।

विशेष रूप से गणपति के विग्रह को बुधवार के दिन प्रातःकाल स्नान करके गणपति पर केशर तथा लाल चन्दन का तिलक करे सामने गुड़ का भोग लगावें उसका २१ पुष्पों से पूजन करें। पुष्प कनेर के होने चाहिए प्रत्येक पुष्प चढ़ाते समय जिस कार्य में विजय प्राप्त करनी हो उसे बोलकर पुष्प चढ़ाते समय जिस कार्य में विजय प्राप्त करनी हो उसे बोलकर पुष्प

चढ़ावें। इसके उपरान्त मन्त्र जप प्रारम्भ कर दें। ५ दिनों में सवा लाख जप पूरा करें छठे दिन ५ कन्याओं को भोजन कराके यथा शक्ति दान दें जिस मुश्किल के लिए साधना करें वह जल्दी ही पूरी हो। यह मन्त्र हर मुश्किल को भगा देने वाला है।

व्यापार बंधन दूर करने का सिद्धि मन्त्र

ओं दक्षिण भैरवाय भूत, प्रेत, बन्ध,
तन्त्र बन्ध निग्रहनी सर्व शत्रु संहारणी कार्य,
सिद्धि कुरु कुरु स्वाहा।

विधि—असली गुलाल, गोरोचन, छार, छबीला, पीसकर एक में मिला दें और कपूर काँचनी मिला दे। रात्रि को किसी भी समय उपरोक्त मन्त्र का १०१ बार जप करें और मन्त्रों का जाप करते हुए ये सब सामान दुकान में बिखेर दें इस प्रकार ५ दिन लगातार प्रयोग करें आपके व्यापार की हर बाधा दूर होगी पहले विधिपूर्वक नियम से २१ दिन तक जाप करके पहले सिद्ध करके ही प्रयोग में लावें।

ग्रह-दोष निवारण मन्त्र

ब्रह्मा मुरारी त्रिपुरान्तकारी भानु,
शशि भूमि-सुतो बुधश्च गुरुश्च,
शुक्र शनि राहु केतवः,
सर्वे ग्रहा शान्ति करा भवन्तु।

किसी भी रविवार को पूर्व दिशा में मुंह करके यह प्रयोग शुरू करना चाहिए। अपने सामने सफेद सूती आसन लगाकर उस पर नवग्रह यन्त्र स्थापित कर दे और यन्त्र को असली केशर का तिलक करके घी का दीपक जलाकर स्फटिक की माला से इस मन्त्र का ५१ हजार जप करे। यन्त्र को अपने घर के पूजा वाले स्थान में स्थापित करें। यह यन्त्र आपके हर प्रकार के ग्रह दोषों को समाप्त करके जिन्दगी को सुखमय बना देता है। अपना सिद्ध किया परीक्षित यन्त्र मन्त्र है यह नवग्रह यन्त्र हमसे आप प्राप्त कर सकते हैं।

मुकदमे में सफलता प्राप्त करने के लिए

मन्त्र—या कबियो या मलियो या रकियो या नकीना।

विधि—यह इस्लामी मन्त्र है किसी भी शुक्रवार से इसका प्रयोग करना चाहिए। कुमकुम का घेरा बनाकर फिर आसन बिछाकर बैठ जायें और सामने घी का दीपक जला दें और ऊपर लिखे मन्त्र का जाप शुरू कर दें उसी दिन जप पूरा होने पर लोहे का एक टुकड़ा दूध में डाल दें। रात भर दूध में पड़ा रहने दें दूसरे दिन लोहे का टुकड़ा घेरे में डालकर उसी तरह से जाप करें। मन्त्र का जाप दस हजार की संख्या में करना चाहिए। ५ दिन या ११ दिन में समाप्त कर देना चाहिए। कुमकुम, धूप, दीप, नैवेद्य, लोहे के टुकड़े का इन्तजाम पहले से ही कर लेना चाहिए। हकीक की माला से जाप करना चाहिए। जप पूरा होने

पर लोहे के टुकड़े को किसी लकड़ी में ठोंक देना चाहिए और अपने विरोधी व्यक्ति का नाम लेकर उस पर लाल रंग का कपड़ा बाँध दें। दूध को कपड़े पर डाल दें तथा वह लकड़ी का टुकड़ा दक्षिण की तरफ ले जाकर जमीन में गाड़ दें। इस प्रकार करने से विरोधी कमजोर हो जाता है। शीघ्र ही प्रयोग करने वाले व्यक्ति को मुकदमे में सफलता मिल जाती है।

जुआ जीतने का मन्त्र

भैरव वीर सदा सुखदाई,
अनचिन्ता धन लावें भाई,
मेरा कार्य करो सुखदाई,
तुमरो नाम बड़ो न ताई,
जो तू मेरा काम नहीं करे तो,
चौरासी सिद्धों की दुहाई।

इस मन्त्र को सिद्ध करने से पहले पीपल के २१ पत्ते एक फीट लम्बा एक फीट चौड़ा लाल वस्त्र, तेल की बत्ती, हीरा शंख, अगरबत्ती, सारा सामान पहले एकत्र करके ही साधना करें। ११ दिन में १ लाख बार जप करके सिद्ध कर लें। जुए के अलावा लाटरी आकस्मिक धन से सम्बन्धित है। यह प्रयोग शुक्रवार की शाम से शुरू करें। भैरव के सामने तेल तथा इत्र का फोहा चढ़ावें। किसी भी प्रकार का इत्र प्रयोग में ला सकते हैं। यदि भैरव का मन्दिर न हो तो किसी सुनसान जगह पर पत्थर

पर सिन्दूर का टीका लगाकर भैरव मान ले और उसके सामने यह सामग्री चढ़ा दें। घर आकर हीरा शंख के सामने मन्त्र का जाप शुरू कर दें। जब ठीक समय पर जाप पूरा हो जाए तो माला को सुरक्षित स्थान पर रखें, माला पहनकर जुए में जायें तो जुए में जीत तथा धन का लाभ होता है।

बवासीर का यन्त्र

६	१२	२	१
६	२	१२	११
१४	६३	२	१
४	५	१२	४

विधि—इस यन्त्र को दीपावली की रात को २१०० बार भोजपत्र पर केशर की स्याही से लिखे, विधि पहले ही दी गई है। आप सिद्धि के बाद काम में लावें सिद्धि होने पर भोजपत्र पर लिखकर रोग वाले आदमी की कमर में बांधें। चाँदनी रात में रविवार के दिन करे यह एक नाथ का प्रामाणिक यन्त्र है।

पेट दर्द निवारण मन्त्र

पेट व्यथा पेट व्यथा तुम हो बलबीर,
तेरे दर्द से पशु मनुष्य नहीं स्थिर,
पेट पीर लोबो पल में निकार,
दो फेंक सात समुद्र पार,
आज्ञा कामरु कामाक्षा माई,
आज्ञा हाड़ि दासी चढ़ी की दोहाई।

विधि—इस मन्त्र को १०१ बार प्रतिदिन २१ दिन में सिद्ध कर लें। मन्त्र को पढ़ते हुए दर्द के स्थान पर बाँयें हाथ से स्पर्श करें, हर प्रकार का पेट दर्द दूर हो जाएगा।

कमर दर्द का मन्त्र

चलता आवे,
उछलता जाये,
भस्म करता,
रह रह जाये,
सिद्ध गुरु की आन,
मन्त्र साँचा पिण्ड काँचा,
फुरो मन्त्र ईश्वरो वाचा।

स्त्रियों को विशेष रूप से कमर दर्द की समस्या लगी रहती है। यदि स्त्री स्वयं मन्त्र जप करें तो अति उत्तम है अन्यथा

उसके नाम का संकल्प करके उसके नाम से कोई भी व्यक्ति साधना शुरू कर सकता है। २१ दिन तक १०८ बार प्रतिदिन मन्त्र का जप करें। नियम सहित मिठाई, धूप, फल-फूल सहित जप करें। तब कार्य करेगा आप काले रंग का धागा लेकर जब तक दर्द पूर्ण रूप से दूर न हो जाए तब तक नियमित रूप से प्रतिदिन रात्रि को मन्त्र का जाप करें। इस मन्त्र को तांत्रिक अवतार सिंह अटवाल ने कई बार प्रयोग करके जनता का भला किया है, प्रयोग विधि पूर्वक करें।

नेत्र रोग निवारण मन्त्र

ओं झलझल जहर भरी तलाई,
अस्ताचल पर्वत से आई जहाँ बैठा,
हनुमन्ता जाई न फूटै पाकै,
करे न पीड़ा जती हनुमन्त,
हरै पीड़ा मेरी भक्ति गुरु की शक्ति,
फुरो मन्त्र ईश्वरो वाचा,
सत्य नाम आदेश गुरु का।

विधि—यह मन्त्र विधि सहित आप सिद्ध करें तब २१ बार उच्चारण करते हुए नीम की डाली से प्रत्येक मन्त्र का जाप करते समय (साथ ही) नेत्रों को स्पर्श करना चाहिए। आँख लाल होना, पानी गिरना, आँखों के हर प्रकार के रोगों को दूर करने का अचूक मन्त्र है।

आधा सिर दर्द का मन्त्र

ओं कामरू देश कामाक्षा देवी,
तहाँ बसै इस्माईल योगी,
इस्माईल योगी के तीन पुत्री,
एक रौले एक पक्षौला,
एक ताप एक तिजारी इकतराँ मथवाँ आधा,
शीशी टोरे उतरे तो उतारो चढ़े तो मारे,
न उतरे तो गुरुड़ मोर हकोरे,
शब्द साँचा पिण्ड काँचा,
फुरो मन्त्र ईश्वरो वाचा।

विधि—इस मन्त्र को पूर्ववत् विधि के अनुसार सिद्ध करके प्रयोग करें। मन्त्र का जब जाप करना शुरू करें तो सामने ताँबे के लोटे में पानी रखकर एक माला का जाप करें। जप करने के पश्चात् थोड़ा जल ग्रहण करें। प्रतिदिन मन्त्र जाप करने के बाद सिर पर जल डालें। सिद्धि प्राप्त होने के बाद ही प्रयोग करें, कामयाब मन्त्र है सिद्ध करने के पश्चात् ही सफलता प्राप्त करके जनता का हित करें।

कर्ण दुखने का मन्त्र

ओं कनक प्रहार,
धन्धर धार प्रवेश कर,

डार डार पास और,
झार-झार मार-मार,
हुंकार शब्द साँचा,
पिण्ड काँचा ओं क्रीं क्रीं।

विधि—इस मन्त्र के द्वारा साँप की बाँबी की मिट्टी को २१ बार पढ़कर झाड़ा दें, बाद में वही मिट्टी लगा देवें हर प्रकार के कर्ण बाधा में फायदा, दर्द को भगा देने वाला मन्त्र है। साधक पहले विधिवत् नियम पूर्वक साधना करके सफलता प्राप्त करें।

कण्ठमाला निवारण मन्त्र

ओं ह्रीं नमो नारसिंह,
हार गुरु आदेश का,
धाई कराई का चक्र चलता,
दहन करता वज्र छन्दन,
भवन ओं छः छः।

विधि—जिस दिन सोमवार को पुष्य नक्षत्र हो जंगल में जाकर एक हाथ से उत्तर की तरफ को मुंह करके कुश उखाड़ लावें फिर उस कुश को मन्त्र से अभिमन्त्रित करके कण्ठ माला को देवें और बाद में वही कुश को पीसकर कण्ठ माला पर लेप करें।

मस्तक पीड़ा निवारण मन्त्र

सहस्त्र घर वाले एक,
घर खाये नागे चले,
तो पीछे जाये,
मन्त्र साँचा फुरो वाचा।

विधि—उपरोक्त मन्त्र को पढ़कर अपने हाथों पर फूंक मारकर अपने मस्तक पर हाथ फेरें। इसी मन्त्र को पढ़कर मस्तक पर फूंक मारे मस्तक की पीड़ा दूर होगी। योगीराज अवतार सिंह का आजमाया हुआ मन्त्र है।

प्रेत साधन मन्त्र

ओं श्री बं बं भूतेश्वरी मम वश्य,
कुरु कुरु स्वाहा।

विधि—नित्य शौच के बाद बचा हुआ जल मूल नक्षत्र से शुरू करके बबूल के वृक्ष पर डाले और उसके बाद वृक्ष के नीचे बैठकर मन्त्र का जाप करें। १०१ बार प्रतिदिन जाप करें इस प्रकार से ६ महीने तक मन्त्र का जाप करें पीछे एक दिन पानी न डालें जब प्रेत सामने आकर पानी माँगे तब उससे तीन वचन ले लें कि नित्य याद करने पर हाजिर होगा, बताया हुआ काम करेगा और आपकी सेवा करेगा ऐसा करने पर प्रेत वश में रहकर काम करेगा।

शत्रु को पागल करने का मन्त्र

ओं नमो भगवते शत्रुण नाम (अमुक),
बुद्धि स्तम्भन कुरु कुरु स्वाहा।

ऊँट की लीद छाया में सुखाकर फिर उसमें से एक रत्ती के बराबर लेकर १०१ बार मन्त्र से अभिमन्त्रित करके उस लीद को पान में डालकर शत्रु को खिला दें तो शत्रु पागल हो जाये।

शत्रु के घर में क्लेश करने का मन्त्र

ओं ह्रीं हूं फट्।

विधि—रविवार के दिन जहाँ पर गधा लेटा हो उस स्थान की धूल लाकर उसके सामने गुग्गल का धूप जलाकर १०८ बार मन्त्र पढ़कर उस धूल को शत्रु के सिर पर या उसके घर में डाल दें वहाँ कलह हो।

वशीकरण मन्त्र

ठं ठं ब्रह्मा ठं ठं विष्णु,
अमुक को वश में करे रुद्र को तिरसूल,
ना माने तो बाँधे खड़े वश में होय,
कहयो करै काली की दुहाई ठःठः।

विधि—आप किसी को अपने अनुकूल बनाना चाहते हैं तो आप इसका प्रयोग करके अपनी आस पूरी करें। शुक्रवार के

दिन से यह साधना शुरू करके ५ हकीक पत्थर लें और एक सियार सिंघी प्राप्त करें। फिर सिन्दूर से सियार सिंघी को पूरी तरह रंग दें और फिर कुम्कुम पर उस स्त्री या पुरुष का नाम लिखें जिसे अपने काबू में करना चाहते हैं। जिस सियार सिंगी पर उसका नाम लिखा है उसके आगे ५ हकीक पत्थर रख दें। तेल का दीपक जलाकर मन्त्र का जाप शुरु कर दें जप के बाद सियार सिंगी को लाल कपड़े में बाँधकर हकीक सहित किसी मिट्टी के बरतन में या कुल्हड़ में रख दें। उसे पानी से भरकर घर में किसी जगह गाड़ दें जब तक कुल्हड़ जमीन में रहेगा तब तक वह व्यक्ति स्त्री पुरुष पूर्णतः वश में रहेगा जिस तरह चाहेंगे उसी तरह से आज्ञा का पालन करेगा।

व्यापार वर्धक प्रयोग

मन्त्र

भंवरा भंवर करे मन मेरा,
डण्डी खोल व्यापार बड़ेरा,
व्यापार बड़ा और कारज कर,
नहीं करे तो काली मैया,
काल-काल जो फेड़ खावे ठं ठं फट।

विधि—यदि आपका व्यापार नहीं चल रहा है और उन्नति नहीं हो रही हो तो आप इस मन्त्र का प्रयोग करें।

शनिवार के दिन की रात को ३ मुट्ठी भर काली मिर्च तथा

३ गोमती चक्र लेकर किसी लाल पोटली में बाँध दें। तेल का दीपक जलाकर अपने सामने रखकर मन्त्र का ११ माला का जाप पोटली पर कर दें। दूसरे दिन सुबह जाकर दुकान को साफ पानी से धो डालें, दुकान के दरवाजे पर वह लाल रंग की पोटली को बाँध दें, जब तक पोटली बंधी रहेगी तब तक व्यापार में उन्नति होती ही रहेगी।

विद्वेषण तन्त्र

आप किसी में लड़ाई झगड़ा करवाना चाहते हैं यह क्रिया सम्पन्न करें किसी भी मंगलवार को श्मशान में जाकर दिन में दोपहर के समय वहाँ से हड्डी का एक टुकड़ा ले आवें, अपने घर न आवें रास्ते में ही किसी लाल रंग के कपड़े में हड्डी का टुकड़ा तथा ५ नग हकीक एक साथ बाँधे तथा शत्रु के घर में लड़ाई मारपीट के हालात बन जावेंगे यह सोच समझकर ही प्रयोग में लावें।

रोग मिटाने का मन्त्र

जय जय गुणवन्ती वीर हनुमान,
रोग मिटै और खेलै खिलाव,
कारज पूर्ण करै पवन सुत,
जो न करे तो माँ अन्जनी की दुहाई,
शब्द साँचा पिण्ड काँचा,

फुरो मन्त्र ईश्वरो वाचा।
फुरो मन्त्र ईश्वरो वाचा॥

विधि—आप किसी मंगलवार के दिन ताँबे के गिलास में पानी भरकर उसमें चिरमी के ३ टुकड़े डालें, पुनः गिलास को सामने रखकर २१ बार मन्त्र के जाप का उच्चारण करें। इसके बाद रोगी को पिला दें तथा चिरमी के दाने दक्षिण की तरफ फेंक दें। यह सिद्ध प्रयोग है।

हनुमान की हजरात

हनुमान हठीला पटे जो पड़दा कीला,
हनुमान बलकार पिण्ड का रखवाला,
हानती लावती का मुंह काला,
हनुमान बलकारी देवे चढ़ लंका मारी,
बाबा रक्षा करै हमारी,
काला तितर धौल चढ़ा बन्ना आसन,
बन्ना थडा बना दिया बना बाऊ,
जिन्न भूत खेले दिन रात चल कच्चा तागा,
मेली सूती उठी हनुमन्ता अन्जनी के पूत,
नव खण्ड पृथ्वी बन्ध के,
बन्ध ल्यावै जिन्न भूत वीर का वीर,
वनि धरती काँपे शरीर,

दशरथ सत्ता लंक भयो चीर,
मुगल दुपट्टा पहनकर चढ़ बैठै हनुमन्त वीर,
शब्द साँचा पिण्ड काँचा,
फुरै हो मन्त्र तुम्हरे इल्म का तमासा,
और दरश दो दरश दो हाजिर हो हाजिर हो।

विधि— इस मन्त्र को ४० दिन में करें, फिर नियमानुसार श्री हनुमान जी की पूजा देकर लगातार जप करे। जब सूर्य ग्रहण हो तो पूरा जप करे। ऋद्धि सिद्धि देने वाला यह मन्त्र है। नियम का पालन कर तथा हनुमान जी को रोट दे, फिर मंगलवार के दिन गाय के गोबर में जमीन में लेप करके उसके ऊपर पन्द्रह का यन्त्र बनावें। एक थाली में पानी भरकर यन्त्र के ऊपर रख दें जिसके शरीर को रोग लगा हो उस बीमार को उसकी रोशनी रोगी के देखने को कहें बीमार के पीछे मन्त्र का जाप करके फूंक मारें उसकी बीमारी का सारा हाल दीप की लपट में आ जायेगा।

जब दीपक में कुछ नजर न आये तो ४१ बार मन्त्र पढ़कर गुड़ में फूँक मारकर रोगी को खिला दें। सब कुछ नजर आयेगा दीपक के पास फूल मिठाई धूप देकर चौका लगायें। यह सब बीमारी का इलाज करेगा! यह सब उपाय लाट ही बता देगी ब्रह्मचर्य का पालन करके ही कार्य करें।

नोट—दीपक को कभी भी फूंक मारकर न बुझायें।

सर्व सिद्धि यन्त्र

१	२	१५	८
१०	१२	३	७
१	१	९	१
११	१०	६	४

इस यन्त्र को चन्दन की स्याही पानी के घोल के सा
तैयार करें काँसे या ताँबे की थाली पर बांस की कलम से लि
तो आपको हर कार्य में सफलता देने वाला सर्व सिद्धि दाता य
है।

भूत नाशक यन्त्र

इस यन्त्र को भोजपत्र पर अष्ट गन्ध से लिखकर विधि
धूप दीप देकर घर में रखे वहाँ से भूत प्रेत भाग जायेगा औ
साथ ही साथ घर में भूत प्रेत होगा तो वह भी घर छोड़ कर भ
जायेगा।

भूत नाशक यन्त्र

८०	८७	२	७
६	३	१४	१३
८३	८१	८	१
४	५	६०	६३

गर्भपात न होने का यन्त्र

रविवार को मूल नक्षत्र में यह भोजपत्र पर अष्टगन्ध से तैयार कर स्त्री की बाँई भुजा में बाँध दे तो गर्भ स्थिर रहेगा सिद्ध यन्त्र है।

ॐ	ॐ	ॐ	ॐ
ॐ	ॐ	ॐ	ॐ
ह्री	ह्री	ह्री	ह्री
ह्री	ह्री	ह्री	ह्री

दारिद्रय विनाशक लक्ष्मी यन्त्र

ओं ऐं ह्रीं श्रीं क्लीं,
दरिद्रय विनाशके,
जगत्प्रसन्यैनमः।

विधि—जिसके भाग्य में दरिद्रता लिखी हो उसके जीव में कभी किसी भी प्रकार की उन्नति नहीं होगी कोई भी उप करने पर कोई उम्मीद नहीं दिखाई देती तो यह मन्त्र रामब की तरह अचूक है। नित्य प्रतिदिन ११ माला इस मन्त्र की मा कमल गट्टे की होनी चाहिए लक्ष्मी का चित्र भी पास लगा शुद्ध घी का दीपक जलाकर १२ लाख मन्त्र का जप क आपके हर कार्य को सिद्धि देगा। लक्ष्मी की सिद्धि इस मन्त्र होती है नियम प्रारम्भ में दिये हैं उसके अनुसार ही प्रयोग क

सर्प काटने का मन्त्र

इस मन्त्र को शिवरात्रि से प्रारम्भ करना चाहिए शिवर से शुरू करके दूसरे दिन शाम तक लगातार जपने पर यह म सिद्ध हो जाता है। गिनती नहीं की जाती है। मन्त्र शिवरात्रि शुरू करके दूसरे दिन सूर्यास्त तक जितनी बार मन्त्र का जाप उतनी बार ही ठीक है परन्तु आसन से उठना नहीं चाहिए। यह मन्त्र सिद्ध हो जाए तो इस मन्त्र को तीन बार पढ़कर ज सर्प ने काटा हो उस स्थान पर बाहरी से झाड़ दें, निश्चित

सर्प का विष उतर जाता है और व्यक्ति ठीक हो जाता है।

मन्त्र यह है—

ओं नमो सर्पा रे तू थूलमथूला,
मुख तेरा बना कमल का फूला रे,
सर्प्पा बाँधूं तेरी दादी बूवा,
जिसने तोको गोद खिलायो,
सर्पा रे सर्पा बाँधू तेरा रतन कटोरा,
जा मैं तोकूं दूध पिलाय सर्पा बीज,
कालिनी बीज पान मेरा कीला करे जो घाव,
तेरी दाड़ भस्म हो जाए गुरु गोरखनाथ भी जाय जलाय।
ओं नमो आदेश गुरु को,
मेरी भक्ति गुरु की शक्ति,
फुरो मन्त्र ईश्वरो वाचा।

प्रत्यक्ष वीर साधना मन्त्र

ओं नमो भगवती काल रात्रि,
कर्मम निलये काधेश्वरी वीर भद्र,
वीरमान यात्र आगच्छ आगच्छ हूं।

होली की रात को साधक को श्मशान में जाकर आसन लगाकर निम्न मन्त्र का सर्प की हड्डियों की माला बनाकर ३ हजार मन्त्रों का जाप करे। जप पूरा होते ही वीर प्रत्यक्ष होता है। तब वीर को अपने सामने रखी खीर का भोग दें। ऐसा करने पर

वीर वश में हो जाता है और भविष्य में जो भी कार्य कहे वह पूरा करेगा। यह साधना नियम पूर्वक रक्षा चक्र बनाकर करें। यह साधना बहुत भय देने वाली साधना है सोच-समझकर साधना करें।

गृहस्थ सुख प्रयोग

ओं श्री मम गुहे तुष्टि भव,
ककावत्ये शिरो भव फट स्वाहा।

यह प्रयोग दीपावली के दिन करना चाहिए गृहस्थ में किसी भी तरह की परेशानी हो, पति-पत्नी में तनाव, पुत्र का आज्ञाकारी न होना, किसी भी प्रकार की बाधा का निवारण इस मन्त्र के प्रयोग से हो जाता है। यह प्रयोग दिन के १२ बजकर ४६ मिनट तक किया जाता है इस अवधि में इस प्रयोग को सम्पन्न करें।

साधक को १२ बजे आसन पर बैठ जाना चाहिये और मन में चिन्तन करें कि यह प्रयोग जिन्दगी में सभी बाधाओं को दूर करने के लिए कर रहा हूं। मूंगे की माला से ३ माला का जाप करें जब मन्त्र का जप पूरा हो जाये तब यन्त्र को तिजोरी या अलमारी में बन्द करके रख दें। जब तक वह यन्त्र घर में रहेगा तब तक उस घर में किसी भी प्रकार की कलह परेशानी नहीं होगी। जप के समय यन्त्र को सामने रखकर जप करें। यन्त्र मुझसे प्राप्त कर सकते हैं यह किताब में नहीं दिया जा रहा है।

हमसे यन्त्र मंगाकर साधना करें साधना के समय घी का दीपक अगरबत्ती यन्त्र रखकर साधना करें तब आपकी कामना पूरी होगी।

जुए जीतने का मन्त्र

ओं कली विशाचि आकस्मिक,
धन देहि देहि फट स्वाहा।

दीपावली की रात को कहीं-कहीं पर जुआ खेलने का रिवाज प्रचलित है। प्राचीन काल में जुआ खेलने का रिवाज था प्राचीन ग्रन्थों में जो इससे सम्बन्धित जो प्रयोग प्राप्त हुआ है वह हम आपको भेंट कर रहे हैं। पहले जलपात्र, केशर, लघु नारियल, नैवेद्य अगरबत्ती घी का दीपक ले दीपावली के दिन इसका प्रयोग करने का शुभ समय १० बजे से ११ बजे तक। एक घण्टा साधना करें। साधना के समय किसी पात्र में लघु नारियल को स्थापित कर दें फिर उस पर केशर का तिलक करे तत्पश्चात उससे हाथ जोड़कर प्रार्थना करे कि मैं अमुक नाम के व्यक्ति से जुआ खेलना चाहता हूं यह महत्वपूर्ण प्रयोग जुआ खेलने के लिए तथा सफलता प्राप्त करने के लिए कर रहा हूं। फिर मूंगेकी माला से उपर्युक्त मन्त्र का जाप करें और माला फेरे ऐसा करने के बाद जुआ खेलने के लिए जावें तब लघु नारियल को अपनी जेब में रख लेवे ऐसा करने से जुआ में सफलता मिलती है यह विशेष लाभ प्राप्त करने के लिए सही है।

धूप, फल, फूल मिठाई सामने रखकर प्रयोग करे एक स्थान ही (साधना की नियत) रखें माला एक ही प्रयोग करे बदलनी नहीं चाहिए।

आप नियम सहित साधना करें ब्रह्मचर्य का पालन कर साधना में बैठें उस देवता की तस्वीर लगाकर घी का दीपक लगातार जलाना चाहिये। अधिक जानकारी प्राप्त करने के लिए हमारे पते पर जवाबी पत्र द्वारा पत्र व्यवहार करें।

उच्चाटन का केरलीय मन्त्र

कालि कालि महाकालि महाकालि,
ग्लौ कालरात्रि कान्हेश्वरी एहि,
एहि—म उच्चाटय देश ललु तोर,
दाहि इरदाल देवि आणे पुलोर्लु तोर तादि,
इदालु उमा महेश्वर राणे विष्णु तीर,
तामलु इरदाल वीरभद्र ओं कालि,
कालि महाकालि महाकालि,
ओं गुरु प्रसादम्।

यह मन्त्र ऋषि नित्यनाथ का है मूलतः यह मन्त्र द्रविड़ भाषा में है इसे किसी काली या चण्डी के मन्दिर में जाकर निर्जन स्थान (प्रदेश) में ही षोडषोपचार से पूजन करना चाहिए।

सात रात को ऐसा करने से मन्त्र सिद्ध हो जाता है दशांश हवन तथा एक हजार आहुतियाँ देने से कार्य सम्पन्न हो जाता है

हवन में राई और नमक की आहुति देना चाहिये इससे सफलता मिलती है तीन हजार जपने से पूर्ण सफलता मिलती है।

मन्त्र सिद्ध हो जाने पर कोयल पक्षी की बीट को एक हजार बार अभिमन्त्रित करके जिसके घर में डाली जायेगी उसका १५ दिन में उच्चाटन हो जायेगा। यह मन्त्र कौआ और उल्लू के पंखों को १०८ बार मन्त्र द्वारा अभिमन्त्रित करके जिस व्यक्ति के घर में डाल दिया जायेगा और ब्राह्मण चाण्डाल के इसके साथ ही पैरों की मिट्टी अभिमन्त्रित करके रविवार के दिन जिसके घर में डालें उसका उच्चाटन होगा।

इस प्रकार से आदमी के आमदनी के स्रोत बन्द होने लगते हैं उसे किसी तरह चैन नहीं मिलता। दिल काम में नहीं लगता वह व्यक्ति टिक कर नहीं बैठता सदा उचाट ही लगा रहता है।

नोट—यह एक क्रूर प्रयोग है।

वशीकरण विशिष्ट मन्त्र

क्लीं ऐं सौं ह्रीं श्रीं ग्लौं हुम्,
सकल जगन्मोहिनी मदनोत्मादिनी,
क्लीं एहि एहि कलीं कलीं सम्मोहय,
बुद्धि नाशय नाशय नाशय जीव मोहिनी,
लागो मोह जिनु जिनु जावे मकरे,
तो मोह आदि शक्ति को आस राज,
मन्त्रथ की आन फुरो आगम मल्यो,

मेरी शक्ति गुरु की शक्ति ईश्वर तेरी वाचा।

इस मन्त्र को मैंने संस्कृत और प्राचीन गौड़ देश के ग्रन्थों से लिया है। यह अर्वाचीन है और आदिनाथ द्वारा निर्दिष्ट है इसे कम संख्या में जपने पर सिद्ध हो जाता है सिद्ध हो जाने पर २१ बार किसी भी खाने पीने की वस्तु पर खिलाने पिलाने से वशीकरण हो जाता है।

हनुमान यन्त्र

नं	छं	जं	चं
ढं	दं	चं	चं
जं	छं	जं	बं
छं	नं	जं	हं

इस मन्त्र को नियम से सिद्ध करने से सफलता प्राप्त होती है हनुमान जी के प्रत्यक्ष दर्शन के लिए इस मन्त्र का अनुष्ठान करे। भक्ति भाव से उपासना करने से ही देवता की सिद्धि प्राप्त होती है।

इस यन्त्र को भोजपत्र पर सफेद चन्दन से लिखकर सवा

लाख बार लिखने से हनुमान जी के दर्शन देते हैं। यह प्रयोग मध्य रात्रि के समय करना चाहिए। सवा लाख लिखने से पूरी सिद्धि होगी संख्या का पूरा नियम रखें। हवन, भोजन, तर्पण, ब्राह्मण भोजनादि कराना चाहिए नियम सहित करें।

रक्षा मन्त्र

ओं नमः वज्र का कोठा,
जिसमें पिंड हमारा पेठा,
ईश्वर कुन्जी, ब्रह्मा ताला,
मेरे आठों यामे का,
यती हनुमन्त रखवाला।

दीपावली के दिन ११ माला या किसी ग्रहण का पूरा समय सिद्धि करने का समय होता है। ११ माला जपने से सिद्धि हो जाती है और ७ बार उच्चारण करके रक्षा के लिए सफल है।

शनि पीड़ा मुक्ति के लिए टोटका

शनिवार को हनुमान जी की प्रतिमा पर तेल की धार छोड़ने या हनुमान जी की मूर्ति पर तेल लगाने से शनि का कुप्रभाव दूर हो जाता है।

बिक्री बढ़ाने का उपाय

कई बार दुकान चलती-चलती रुक जाती है इसके पीछे

अनेक कारण हुआ करते हैं। दृष्टि कोप या जिसे नजर लग जाना कहते हैं। आपका धन्धा ठप्प होने लगता है। काले रंग के जूते की शक्ल बनवाकर लटकाने तथा नींबू मिर्च धागे में पिरोकर लगाने से नजर नहीं लगती है।

कई बार कुछ लोग टोटका कर देते हैं यद्यपि दुकान करने वाला प्रबल भाग्यशाली हो तो इस तरह के टोटके असर नहीं करते और न ही ठीक लम्बे समय तक चलते हैं। गणपति की मूर्ति रखकर पूजा करें आपकी दुकान दुगनी चलेगी।

जिस पेड़ पर चमगादड़ रहते हों उस पेड़ को शनिवार को निमन्त्रण दे आवें तथा रविवार को सुबह सूर्योदय से पहले उसकी डाल तोड़ लायें, उस डाल की लकड़ी गद्दी के नीचे तथा एक पत्ता को अपने सिर पर रखें इससे ग्राहक दबता है।

रोजगार प्राप्त करने का मन्त्र

काली कंकाली महाकालीं,
सुख सुन्दर जिय ब्याली,
चार वीर भैरव चौरासी,
बता तू पूजूं पान मिठाई,
अब बोले काली की दुहाई।

प्रतिदिन स्नान करके पूर्व दिशा की ओर मुंह करके बैठ जावे धूप जलाकर अपने इष्ट देवता की प्रार्थना करे। इस मन्त्र को पहले ७ बार, बाद में ५० बार जपें इसका प्रयोग इस प्रकार

से करे कि मन्त्र का जप ५६ प्रतिदिन का होता है। फिर कुछ ही दिनों में रोजगार प्राप्त होने लगता है।

यह प्रयोग मेरा सिद्ध किया है, सार्थक प्रयोग है।

पैर और जोड़ों का दर्द निवारण मन्त्र

ओं नमो खो खंगारन खगारन,
कहा गइले नंदन बन चंदन बन,
काट के किसके सत्ताईस दुअरिया गढे,
किसके सत्ताईस दुअरिया गढ़ के हूक,
काटौ फोडा काटौ फुटकी काटौ आश कटौ,
करो कान फूट के पिता ईश्वर महादेव,
की शक्ति गुरु की भक्ति सा भारो बलाई,
जात नहीं तो श्री महादेव की दुहाई फिरै।

उपरोक्त मन्त्र का जाप करते हुए जोड़े पर ताबीज को स्पर्श करे तथा मन्त्र पढ़कर लाल धागा जाँघ पर बाँधे और सरसों के तेल की माला से करे। इसे २१ दिन तक १०८ बार प्रतिदिन सिद्ध करे। तब ताबीज हमसे मंगा लें। तान्त्रिक अवतार सिंह का सिद्ध है आप भी सिद्ध करके जनता का भला करें।

सप्त योग मन्त्र

इस सप्त योग यन्त्र जिसकी भिन्न-भिन्न प्रकार से सिद्धियाँ मिलती हैं यह यन्त्र गुरु गोरखनाथ व बाबा बालक नाथ का

तैयार मन्त्र है इसका असर कभी भी खाली नहीं जाता है। इस यन्त्र को दिन के समय रविवार को धारण करे जिसको घोलकर पिलावें उसकी अक्ल चमके और विद्यावान की विद्या बढ़े।

यदि इस यन्त्र को सोमवार को दो बजे दिन के समय पानी में घोलकर पिलावें वह मस्त हो जाये। उम्र भर साथ न छोड़े।

यदि इस यन्त्र को घड़े या मटकी के ठीकरे पर सिन्दूर के साथ रखे सवेरे नौ बजे ठीकरा आग में जलावें तो उसके सभी शत्रुओं का नाश हो।

यदि इस यन्त्र को बुधवार को भुजा पर बाँधे तो जुआ में कभी भी हार न हो।

यदि गुरुवार को सवेरे ५ बजे तक एक बहीखाते पर लिखे फिर बही को चन्दन में केशर मिलाकर बृहस्पति जी महाराज स्वाहा बोले किस्मत राजा के समान हो, अपार धन मिले।

शुक्रवार के दिन यन्त्र के कवर में चीटियों के बिल के आस-पास स्थित चीटियों के बिल के पास लगाकर डालें जिसका नाम यन्त्र में रहेगा वह आपके लिए मरेगी। ताँत्रिक अवतार सिंह अटवाल का सिद्ध किया नाथे का मन्त्र है।

शनिवार को इस यन्त्र को तेल में डुबो दें तो धन की कमी कभी न रहे और शत्रु का नाश हो। शनि ग्रह तथा हर ग्रह की शान्ति करता है।

यह यन्त्र तान्त्रिक अवतार सिंह अटवाल ने गुरु की कृपा से तैयार किया है। आप मंगाकर लाभ उठावें।

शूकर मूस भगाने का मन्त्र

हनिवत धावति उदरहि,
हयाये वाधि अब खेत,
खाय सूअर घरमा रहे,
मूस खेत पर छाड़ि बाहर,
भूमि जाई दोहाई हनुमान के,
जौ अब खातम हूं सूवर,
धरम हँ गुम जाई।

विधि—यह मन्त्र दीपावली को या ग्रहण को सिद्ध किया जाता है नियम सहित भेंट चढ़ाकर १०१ बार नहा धोकर साफ होकर सिद्ध करे।

इस मन्त्र को ११ बार पढ़कर ५ गाँठ हल्दी और अक्षत जहाँ सूअर-मूसे आवें वहाँ पर फेंकने से चूहा-सूअर का स्तम्भन हो जाता है।

व्यापार वर्द्धक मन्त्र

जय जय लक्ष्मी भण्डारी भाली,
सात दीप नव खण्ड दुहाई,
ऋद्धि सिद्धि के गुण गाई,
ला वैयार करावे ज्यूं चहु,
त्यूं कार्य करावे ओं ठं ओं,

विधि—इस मन्त्र को आप विधि सहित जपकर अपनी मनोकामना पूरी करें।

विद्वेषण मन्त्र

काल काली काली कंकाली,
मार ताली देवे लाली,
अमुक को अमुक से विष्लेषण,
करवे कारज करे सिद्ध करवावे,
हाथों हाथ लढ़ावे चढ़ावे,
ओं ठं ठं फट।

विद्वेषण का अर्थ है किसी में लड़ाई करवाना। यदि घर की लड़की कहने में नहीं है और उसका किसी के साथ सम्बन्ध चल रहा है तो इस प्रयोग से परस्पर उन दोनों में जबरदस्त मतभेद हो जायेगा। यह मतभेद जीवन भर चलता रहेगा।

यदि शत्रु के घर में यह प्रयोग कर दिया जाए तो सदैव उसके घर में कलह बनी रहेगी। उसके घर के लोग आपस में लड़ते रहेंगे। घर का मुखिया ज्यादा दुखी हो जायेगा।

रविवार की रात को पीली धोती पहनकर दक्षिण दिशा को मुंह करके बैठ जावें, दो तान्त्रिक नारियल का जोड़ा सामने रखे एक-एक काजल की बिन्दी लगा दें इसके बाद तेल का दीपक जलाकर नीचे लिखे मन्त्र का ११ हजार बार जप करे, जप में मूंगे की माला प्रयोग करें।

ऐसा करने के बाद दूसरे दिन घर की लड़की का पहना हुआ कोई कपड़ा हो तो उसमें इस नारियल को बाँधकर रख दे या तो शत्रु हो तो उसके घर में फेंक दे नारियल फेंकने से उसका विद्वेषण हो जायेगा।

परी हजरात मन्त्र

ओं हिलिया रे हिलिया।
सारा काम सिरिया।
अठांग करे दुहाई।
परी को वश में लाई।
ज्वर जूर वश में लाई।
न हिले न हले।
कियो करे हुक्म में रहे।
कारज करे न करे तो
अनंग पाल की दुहाई॥

विधि—यह मन्त्र परी की रूह को काबू करता है। आपको जब यह सिद्धि हो जायेगी तो आपकी हर तरह की कामना पूरी करेगी। जब भी आप परी को बुलावें तब आ जाती है। तन, मन, धन की हर तरह की कामना पूरी करेगी।

आप इसे शुक्रवार की शाम को सूर्यास्त के समय किसी कब्र पर मजार के पास जाकर उसे नमस्कार करें। अपने साथ एक लोटा पानी भी ले जावें। इत्र भी साथ होना चाहिए। हर रंग

का कपड़ा डेढ़ मीटर और सिद्धि फल वहाँ जाकर मजार को प्रणाम करें। उसके सामने कपड़ा बिछा दें, उस पर बैठकर पानी से अपने चारों ओर घेरा बनायें फिर बाँयें हाथ में सिद्धि फल लेकर मुट्ठी में बन्द कर लें, दाहिने हाथ से हकीक की माला से ऊपर दिये मन्त्र का ११ माला जप करें जप पूरा होने पर बचा (लोटे का) पानी मजार पर चढ़ा दें इत्र लगा दें, पास में हरा वस्त्र लेकर घर आ जाये। यह मन्त्र सिद्धि है जब परी को बुलावेंगे, तब फिर एक माला का जप करके बुलावेंगे।

आकर्षण मन्त्र

यह प्रयोग उन व्यक्तियों के लिए किया जाता है जो कि घर छोड़कर या रूठ कर चले गए हैं। मन्त्र ये है—

ओं ठः ठः स्वाहा।

इस मन्त्र की प्रतिदिन ११ माला जपनी चाहिए। प्रयोग मंगलवार से करना चाहिए तथा ११ माला जपने के बाद—

ओं नमो भगवते रुद्राय रा दृष्टि।
लपिताहरः स्वाहा दुहाई कसासुर की।
फुरा मन्त्र ईश्वरो वाचा॥

इस मन्त्र की एक माला जप लेनी चाहिए। इस मन्त्र को सिद्ध होने की परीक्षा इस तरह से करनी चाहिए, सरकण्डे को चीरकर फिर उसे दो व्यक्तियों को दोनों फाँकों को पकड़ा दे। फिर चूहे के बिल की मिट्टी सरसों के दाने और बिलौने के दाने

पर ३ या ७ बार मन्त्र पढ़कर फूंक मारें और सरकण्डे दोनों जुड़ जावें तो समझो कि मन्त्र सिद्ध हो गया है ऐसा न होने पर मन्त्र दुबारा करना चाहिए। जिस व्यक्ति को आकर्षण करना हो उसके शरीर का कपड़ा लेकर उक्त तीन चीजों से अभिमन्त्रित कर ले।

तीनों चीजों को उस कपड़े पर फेंकना चाहिए वह व्यक्ति जहाँ भी रहेगा वह खिंचकर चला आवेगा। अश्लेषा नक्षत्र में अर्जुन वृक्ष का बाँदा लाकर बकरी के मूत्र में पीसकर जिस स्त्री के सिर पर डाला जावे वह आकर्षित होकर चली आवेगी।

जिस व्यक्ति को आकर्षित करना हो\उसके बाँयें पैर की मिट्टी लाकर गिरगिट के रक्त में एक पुतला बनाकर पुतले के हृदय स्थान में गिरगिट के रक्त से उस व्यक्ति का नाम लिखे और उस पुतले को धरती में गाड़कर हमेशा उस स्थान पर मल त्याग करे इस प्रयोग से आकर्षण होता है।

बालक के रोग दूर करने का यन्त्र

३३	३२	२७
३३	६६	३७
३७	४६	६७

इस यन्त्र को लिखकर भोजपत्र पर बालक के गले में

डालने से सब प्रकार की बाधा दूर होती है। यह प्रयोग सिद्ध करके करे।

जिह्वा बंधन मन्त्र

अफल अफल अफल।
दुश्मन का मुँहे कुफल।
केरे हाथ कुन्जी।
रुपया तो दुश्मन को जर कर॥

विधि—शनिवार से लगातार सात रात धूप, दीप जलाकर फूल बताशा इकट्ठा करके होम करे फिर १०१ बार मन्त्र पढ़कर हाकिम के सामने जाये शत्रु की ओर फूंक मार दें तो वह बोल न सके। यदि अरजी लिखकर १० बार फूंक मार दें तो मनोकामना पूरी हो जायेगी।

उदर वेदना निवारण मन्त्र

ओं नून तूं सिन्धु नून सिन्धु वाया।
नून मन्त्र पिता महादेव रचाया।
महेश के आदेश मोही गुरुदेव सिखाया।
गुरु ग्यान से हम देऊ पीर भगाया।
आदेश देवी कामरू कामाक्षा माई।
आदेश हाड़ी रानी चण्डी की दुहाई॥

इस मन्त्र को सिद्ध करके दाहिने हाथ की तीन अंगुली में

सेंधा नमक का एक टुकड़ा लेकर ऊपर लिखे मन्त्र से ३ बार मन्त्र पढ़कर टुकड़ा रोगी को खिला दें तो पेट की पीड़ा शांत हो जायेगी।

नेत्र पीड़ा निवारण मन्त्र

ओं नमो झिलमिल करे ताल की तलइया।
पश्चिम गिरि से आई करत बलइया।
तहं आय बैठे ओं वीर हनुमन्ता।
ना पीडै ना पाकै नहीं फुहन्ता।
यती हनुमन्त राखे हीड़ा॥

विधि—सात दिन तक नित्य ७ बार नीम की टहनी द्वारा झाड़ने से नेत्र पीड़ा शान्त होती है। २१ दिन नियम का पालन करें।

प्रसव कष्ट निवारण मन्त्र

ओं मन्मथ मन्मथ बाहि बाहि।
लम्बोदर मुन्च मुन्च स्वाहा।
ओं मुक्ता पाशं विपाशक्ष।
मुक्ता सूरयेण रश्मयः।
मुक्ता सर्व फयादर्भ एहि।
मारिच स्वाहा एतन्मन्त्रेणा।
जय नमि मनय पितम् तत्क्षणात्।
सुख प्रसवो भवति॥

विधि—केवल एक हाथ से खींचा हुआ कुएं का जल लाकर १०१ मन्त्र पढ़कर पिलाने से प्रसव वेदना दूर होती है तथा बच्चा सुखपूर्वक होता है।

एक हाथ से खींचा गया जल जमीन पर न रखें, अन्यथा प्रभाव न होगा।

कुश्ती जीतने का मन्त्र

ओं नमो आदेश कामरू कामाक्षा देवी।
अडग पहरू भुजगा पहरू लोहे।
शरीर आवत हाथ तोड़ूं पाँव तोड़ूं।
सहाय हनुमन्त वीर उठ अब नृसिंह।
वीर तेरो सोलह सौ श्रृंगार मेरी पीठ।
लगे नहीं तो वीर हनुमन्त लजाने तू।
लेहु पूजा पान सुपारी नारियल।
सिन्दूर अपनी देह सबल मोही पर
देहु भक्ति गुरु की शक्ति।
फुरो मन्त्र ईश्वरो वाचा॥

इस मन्त्र को किसी भी मंगलवार से जप प्रारम्भ करे और ४० दिन तक प्रतिदिन गेरु का चौका लाल लंगोट पहनकर हनुमान जी की मूर्ति को सन्मुख रखकर लड्डू का भोग लगा कर १०१ बार जप करें तो दंगल में कभी भी हार न मिले। ब्रह्मचर्य का पालन करके हनुमान की भेंट चढ़ाकर ४० दिन तक जप कार्य करे।

सभा मोहन मन्त्र

कालूं मुंह धोई करूँ।
सलाम मेरे नैन सुरमां।
बसे जो निरखे सो।
पायन पड़े गो मुल।
आजम दस्तगीर की दुहाई॥

यह इस्लामी मन्त्र है इसे जुमा के दिन सवा लाख गेहूं के दाने लेकर प्रत्येक दाने पर एक-एक बार मन्त्र पढ़कर सिद्ध कर लें। आधा गेहूं पिसाकर घी से हलुवा बनवाकर गोसुल आजम में अर्पित करें, स्वयं भी खाये फिर सात बार मन्त्र जपकर आंखों में सुरमा लगाये जहाँ जाये वहाँ पर सब लोग मोहित्त हों।

कामिनी मोहन मन्त्र

अल्लाह बीच हथेली के।
मुहम्मद बीच कपाल।
उसका नाम मोहिनी।
जगत मोहे संसार।
मोह करे जो मोर।
मार उसे मेरे बाँये।
पोत बार डार।

जो न माने मुहम्मद पैगम्बर की आन।
उस पर मुहम्मद मेरा रसूलिल्लाह॥

विधि—इस मन्त्र को शनिवार के दिन से प्रारम्भ कर अगले शनिवार तक नित्य दीप, धूप, लोबान सुलगाकर सिद्ध कर ले फिर जब प्रयोग करना हो तब स्त्री के पैरों की मिट्टी उठाकर ७ बार मन्त्र पढ़कर जिस स्त्री के शरीर पर डाले वह मोहित हो जायेगी।

पुरुष वशीकरण यन्त्र

रविवार पुष्य नक्षत्र में आटे की एक रोटी बनाकर इस यन्त्र को उस रोटी पर प्याज के रस से लिखकर जिस स्त्री को खिलावें वह पुरुष हमेशा स्त्री के वश में रहे।

६३	४७	२	८
८	३	६९	३७
३९	३४	९	१
४	६	३५	३८

देव वशीकरण यन्त्र

६५	७२	२	८
४	६	६७	७०
७१	६३	९	१
७	२	३६	६१

बसन्त पंचमी के दिन को दोपहर के पहले आक की लकड़ी को पूरब की तरफ मुंह करके तोड़ लावें और उसकी कलम बनाकर उस कलम से भोजपत्र पर इस यन्त्र को लिखकर यदि कोई व्यक्ति अपने माथे पर लगावे तो देवता भी वश में हो।

स्वामी वशीकरण यन्त्र

इस यन्त्र को भोजपत्र पर गोरोचन से लिखकर अपनी दाहिनी भुजा पर ताबीज में रखकर बाँधे तो नौकरी पर जाने पर मालिक खुश रहता है।

स्वामी वशीकरण यन्त्र

४९	४२	४	५
३	६	४१	४३
४६	४५	९	८
२	७	४७	४४

गर्भ स्तम्भन मन्त्र

ओं नमो गंगा उकारे।
गारेख बहा घोर घी।
पार गोरख बेटा जाय।
जम दूत पूत ईश्वर की।
माया दुहाई शिवजीं की॥

विधि—कुंवारी कन्या के हाथ से काते हुए सूत को इस मन्त्र से अभिमन्त्रित कर उसी तागे का गण्डा बनाकर बाँह में बांधे तो जिस स्त्री का गर्भ गिर जाता है उसका गर्भ नहीं गिरेगा और खून भी गिरना बन्द हो जायेगा।

दर्द दूर करने का मन्त्र

शंकर शंकर खोज जाई।
शंकर बैठे जंगल जाई।
भूत वैताल योगिनी नचाय।
सब देवन की जय जय मनाय।
ब्रह्मा विष्णु पूजे जाय।
अध कपारी पीड़ा दर्द छुड़ाय॥

प्रयोग से पहले इस मन्त्र को सिद्ध कर लेना चाहिए। सिद्धि के लिए दशहरे पर साधना करे २१०० मन्त्र पर्याप्त माना जाता है। जब इसका प्रयोग करना हो तब एक लोटा में पानी लेकर ७ बार इस मन्त्र का उच्चारण करें। दर्द वाले स्थान पर थोड़ा जल लगावें। १०१ बार यह प्रक्रिया करे तब दर्द दूर होगा उसके बाद उस जल को चौराहे पर डाल दें।

आधा शीशी का दर्द दूर करने का मन्त्र

ओं नमो वन में बिआयी बंदरी।
खाय दुपहरिया कच्चा फल कन्दरी।
आधी खाय आधी देह गिराय।
हूंकत हनुमन्त के आधी शीश चली जाय॥

जिस व्यक्ति को आधा शीशी का दर्द हो उसको अपने सामने बिठा लें और चाकू या छुरी से उपरोक्त मन्त्र को पढ़ते हुए जमीन पर ७ रेखा खींचें। यह प्रयोग २१ दिन तक नियम

सहित जप करने से सिद्धि प्राप्त होती है। आधा शीशी को दूर करने में सफलता दायक है।

वशीकरण मन्त्र

यह साधना करने से पहले सामान इकट्ठा कर लें सवा गज नीला कपड़ा चौमुखा दीपक, ४० मिट्टी का लोटा, एक सफेद वस्त्र का आसन, २३२ बत्ती, ५ दाने छोटी इलायची, एक छुहारा, एक नीली रुमाली, १ माचिस, ८ दाने लौंग, १० सेर मीठा तेल, एक इत्र की शीशी, ५ फल, गेरू की कली एक, कृष्ण पक्ष में मंगलवार के दिन रात को १२ बजे स्नान करके नीली रंग की रुमाली पहनकर आप सफेद आसन बिछा कर उस पर पूर्व की ओर मुँह करके बैठें और अपने सामने नीला कपड़ा बिछायें। और चौमुखा दीपक जलावें जितनी संख्या ऊपर बताई गई है उतनी संख्या में लौंग छुहारा लड्डू कपड़े के चारों कोनों पर बाँधें सात बार मन्त्र को पढ़कर उसके चारों तरफ रेखा खींचे एक लोटा पानी अपने पास रखें।

तत्पश्चात् माला लेकर २१ माला का जप करें। मन्त्र नीचे दिया है।

मन्त्र

काला भैरव काला केश।
कन्यो सुन्दरी भगवा भेष।
हाथ डगोरी मोण्डे मढा।

जहाँ सुमरु तहाँ हाजिर खड़ा।
ग्यारह सरसों बारह राई।
चौरस्ते की मिट्टी मशान की छाई।
पढ़कर मारू मंगलवार।
कबहु न देखूं घर का दुआर।
हमरी भक्ति गुरु की शक्ति।

पानी में प्रतिबिम्ब देखे जिसको वश में करना हो उसकी फोटो भी रखे अर्थात् जिसको वश में करना हो उसका ध्यान करते हुए मन्त्र पढ़ने वाले का प्रतिबिम्ब पानी में दिखाई देना चाहिए और मन्त्र पढ़ने के बाद दीपक को बहते हुए जल में छोड़ आवे। आते-जाते कोई न टोके अन्यथा सारा कार्य जाता रहेगा। यदि प्रेम शुद्ध होगा तो जिसको वश में करने का प्रयोग किया जायेगा वह अवश्य ही (स्त्री) काबू में हो जायेगी।

दुर्गा सप्तशती द्वारा वशीकरण

शुभ दिन या नवरात्रों में दुर्गा सप्तशती का पाठ करे धूप दीप देकर विधिवत पाठ करे। पाठ तब तक चलता रहना चाहिए प्रत्येक श्लोक एवं श्रद्धा पूर्वक नौ दिन तक पूर्ण करे। पूजन करके कुमारियों को भोजन करावे तथा लाल वस्त्र दान दे। नव दिन पूर्ण ब्रह्मचर्य का पालन करे। जमीन पर शयन करना चाहिए। इस मन्त्र को १०८ आहुति देकर हवन करें। हवन में अष्ट गन्ध की सामग्री प्रयोग में लावें।

मन्त्र

ज्ञानिनामपि चेतांसि देवी भगवती ही सा।
बलादाकृष्य मोहाय महामाया प्रयच्छति॥

वशीकरण तिलक

लाल चन्दन	—	१ भाग
कपूर	—	१ भाग
गोरोचन	—	४ भाग
केशर	—	७ भाग
कचूर	—	१ भाग
अगर	—	९ भाग
सफेद चन्दन	—	१० भाग
जटा माँसी	—	४ भाग

विधि—इन सारी चीजों को एकत्र करके कृष्ण पक्ष की चतुर्दशी की रात में ग्वार पाठे के रस में पीसकर तिलक करे तिलक करने से पहले वशीकरण के लिए ध्यान कर लेना चाहिए तिलक करते समय (घिसते समय) कोई वशीकरण का मन्त्र अथवा क्लीं काम बीज मन्त्र का जाप करते रहना चाहिए।

तान्त्रिक वशीकरण प्रयोग

सुनारों के यहाँ तोलने वाली गुंजा (चिरमी) लाल रंग की

होती है उसी तरह की सफेद भी होती है जहाँ वह सफेद चिरमी हो उसकी जड़ रविवार पुष्य नक्षत्र में लावें। जिस दिन जड़ लेने जावे उस दिन स्नान करके पवित्र हो जाये तथा रास्ते में किसी से न बोले उस वृक्ष को पहले दिन जाकर निमन्त्रण दे आवे जड़ को अपने वीर्य में भिगोकर जिस किसी को भी खिला दे वह वश में हो जाये।

ज्वर निवृत्ति के लिए मन्त्र

दोऊ भाई ज्वर सुरा महावीर नाम।
दिन राति खटि मरे महादेव के ठाम।
फूर छुद से छतिस रूप मुहूर्तमों धराय।
नाराज नामूक के घर दुआर फिराय।
ज्वाला ज्वर पाला ज्वर काला ज्वर बिशाकि।
दाह ज्वर उभा ज्वर भूमा ज्वर झूमकि।
घोड़ा ज्वर भूया तिजोरी ओ चौथाई।
सवन को भंग घोटन शिव ने बुझाई।
यह ज्वर-ज्वर सुरा तू कौन और तकाब।
शीघ्र अमुक अग छोड़ तुम जाव यदि अङ्गन में।
तू भूलि भटकाय तो महादेव के लागा खाय।
आदेश कामरू कामाक्षा माई आज्ञा हाडि दासी।
चण्डी की दोहाई।

विधि—हर प्रकार के ज्वर का इस मन्त्र से नाश हो जाता

है। रोगी का मुंह उत्तर की तरफ होना चाहिए। सात बार मन्त्र को पढ़कर रोगी को झाड़े। यह क्रम लगातार ३ दिन तक चलता रहे तो हर प्रकार के ज्वर की निवृत्ति होती है।

हल्दी बाण मन्त्र

हल्दी गिरी बाण को लिया हाथ उठाय।
हल्दी बाण से नीलगिरि पहाड़ थरराय।
यह सब बोलत्त वीर हनुमान।
डायन योगिनी भूत प्रेत मुण्ड काटौ तान।
आज्ञा कामरू कामाक्षा माई।
आज्ञा हाडि दासी चण्डी की दुहाई॥

विधि—थोड़ी सी हल्दी लेकर उसे ७ बार अभिमंत्रित करके अग्नि में छोड़े ताकि उसका धुआं रोगी के मुँह की ओर जाये इसे हल्दी बाण मन्त्र कहते हैं। विधि पूर्वक करने से २१ दिन में मन्त्र सिद्ध होता है।

दाँत झाड़ने का मन्त्र

ओं नमो आदेश गुरु को।
वन में ब्यायी अंजनी जिन जाया हनुमन्त।
कीड़ा मकड़ा माकड़ा ये तीनों भस्मन्त॥

गुरु की शक्ति मेरी भक्ति।
फुरो मन्त्र ईश्वरो वाचा॥

विधि—इस मन्त्र का २१००० जप करने से सिद्धि होती है। ग्रहण या दीपावली के दिन सिद्धि जल्दी प्राप्त होती है। मन्त्र सिद्ध होने पर नीम की डाली से झाड़ने पर दाँत कष्ट दूर हो जाता है। यदि इस मन्त्र का उपयोग करते हुये कटाई के बीज़ों का धुआं दाँतों में दे तो कीड़े भी निकल जाते हैं।

उन्नति के लिए

मन्त्र

ओं ह्रीं श्रीं श्रीं श्रीं श्रीं श्रीं श्रीं।
लक्ष्मी मम गृहे धन पूरे चिन्ता।
दूरे दूरे स्वाहा।

व्यापार या नौकरी या किसी भी क्षेत्र में उन्नति के लिए इस मन्त्र का जाप करने से सफलता मिलती है।

डायन की नजर झाड़ने का मन्त्र

हरि हरि सुमरि के हम मन करूँ स्थिर।
चाउर आदि फेंक के पाथर आदि वीर।
डायन दूतनं दानिवी देवी के आहार।

बालक गण पहिरे हाँड गलाहार।
राम लषण दोनों भाई धनुष लिये हाथ।
देखि डायनी भागत छोड़ि शिशु माथ।
गई पराय सब डायनी योगिनी।
सात समुन्दर पार में खावें खारी पानी।
आदेश हाड़ी दासी चण्डी माई।
आदेश नैना योगिनी की दुहाई॥

विधि—उपरोक्त मन्त्र को विधि के अनुसार झाड़ने से डायन की दृष्टि बाधा दूर होती है।

चुड़ैल भगाने का मन्त्र

वर बैल करे तू कितना गुमान।
काहे नहीं छोड़ता यह जान स्थान।
यदि चाहे तू रखना अपना मान।
पल में भाग कैलाश लै अपनो प्राण।
आदेश हाडी दासी चण्डी की दुहाई॥

इस मन्त्र को विजय दशमी की रात को १०१ बार जपकर सिद्ध कर ले फिर रोगी पर २१ बार मन्त्र पढ़कर फूंक मारे तो डायन, चुड़ैल, पिचाशनी आदि से छुटकारा मिले। श्री योगीराज के भेंट किये मन्त्र का नियम मानकर सिद्धि करे, ब्रह्मचर्य का पालन करके ही साधना करे। ग्रन्थ को गुरु माने। यदि कोई परेशानी हो तो पत्र व्यवहार करें।

सम्बन्ध परीक्षा चक्र

र	स	ल	ब	ह
५	९	७	२	१
व	क्ष	ज्ञ	ष	श
८	१०	४	६	३

सम्बन्ध ज्ञान फलम्

१ ह इस स्थान में सम्बन्ध करने से सुख नहीं होगा।
२ ब यह सम्बन्ध मत करो सुख प्राप्त नहीं होगा।
३ श मकान के उत्तर दिशा में सम्बन्ध है अच्छा रहेगा।
४ ज्ञ पश्चिम उत्तर दिशा में सम्बन्ध में बातचीत हो रही है।
५ र पूर्व दिशा में सम्बन्ध होगा सो अच्छा होगा।
६ ष ग्राम से पूर्व दिशा में सम्बन्ध होने की बात ही रहेगी।
७ ल मकान से दक्षिण दिशा में सम्बन्ध हो जायेगा।

८ व सम्बन्ध तुम्हारे लिए कल्याणकारी नहीं होगा।
९ स दक्षिण पूर्व दिशा में सम्बन्ध होने की बात-चीत है।
१० क्ष तुम्हारा और उसका सम्बन्ध होना लाभदायक नहीं होगा।

कोई भी व्यक्ति इस नक्श को सिद्ध करके प्रयोग करे। ठीक-ठीक प्रश्न का उत्तर मिलेगा। २१ दिन लगातार १०१ बार एक ही समय पर अष्टगन्ध की स्याही से भोजपत्र पर लिखे विधि पूर्वक मिठाई, फल, फूल, धूप, दीप युक्त प्रयोग करें।

प्रेमिका वशीकरण यन्त्र

५५१५१७१२९ ७५५५५८१२१७१

नाम **पता पूरा लिखें**

विधि—दोनों रेखाओं के नीचे प्रेमिका का नाम उसकी माता का नाम पता लिखें। इस यन्त्र को कागज पर लिखकर बत्ती बनाकर फलीते को आग में जला दे तो आपकी प्रेमिका क्यों न कैसी पाषाण हृदय वाली हो तो भी आपके प्यार में व्याकुल होकर चली आवेगी यह तान्त्रिक अवतार सिंह अटवाल का अचूक प्रयोग है।

विवाह परीक्षा चक्र

अ— तुम्हारे मकान के दक्षिण की तरफ विवाह होगा।

अ	ऋ	इ	क	ए
७	१०	८	४	१
लृ	उ	ब	ग	ख
२	९	३	६	५

ऋ— कुछ देर है, विवाह दक्षिण दिशा में होगा।
इ— विवाह जल्दी होने वाला है ऐसा जाना जाता है।
क— मकान के पूर्व दिशा में विवाह जल्द होने वाला है।
ए— विवाह तुम्हारा होगा कुछ देर से होगा।
लृ— विवाह अभी नहीं होगा।
उ— मकान के पूर्व दिशा में विवाह होने वाला है।
ब— उत्तर दिशा की ओर विवाह का योग है।
ग— उत्तर दिशा की ओर विवाह देर से होगा।
ख— पश्चिम दिशा की ओर जल्दी से विवाह होगा।

लक्ष्मी दाता यन्त्र

यह यन्त्र लक्ष्मी दाता तथा विजय देने वाला है। गर्भ रक्षा तथा अन्य पीड़ाओं को दूर करने वाला प्रभावशाली है। इसे

किसी शुभ मुहूर्त में अष्टगन्ध द्वारा भोजपत्र पर लिखकर धूप दे फिर किसी रेशमी कपड़े में लपेट कर अपने पास या तिजोरी में रखे, धन सम्पत्ति में उन्नति होती है।

४५	३६	५०	३९
४२	४७	३७	४४
३५	४६	४०	४९
४१	४१	३३	३१

नोट—यन्त्र को कागज पर न लिखे और न ही मोमिया कागज में लपेटे।

वशीकरण यन्त्र

१	१७	१६
१७	कु	१७
४॥	६	८

इस यन्त्र को शुद्ध पवित्र ब्रह्मचर्य का पालन करके सिद्ध

करे तथा अपना निवास अलग कमरे में करे। सूर्य ग्रहण या दीपावली की रात को नियम पूर्वक लिखे। इस यन्त्र को भोजपत्र पर दीपावली की रात को १०१ बार अष्टगन्ध की स्याही से लिखे तब सिद्ध होगा, हवन करे, साथ ही यन्त्र को हवन में डाले। इस यन्त्र को अष्टगन्ध की स्याही से अनार की कलम द्वारा हाथ पर लिखकर प्रणाम करें, स्त्री को दिखावे, स्त्री दौड़ी चली आवेगी। यह यन्त्र लाली तांत्रिक का है।

पुरुष वशीकरण यन्त्र

अगर आपका पति किसी अन्य स्त्री के रूप पर मोहित होकर आपकी अवहेलना करता हो तो आप इस यन्त्र को केशर से भोजपत्र पर लिखकर धूप, दीप से विधिवत पूजन करें तथा मिट्टी में गाड़ देवें जब तक यह यन्त्र जमीन में गड़ा रहेगा तब तक आपका पति आपके वश में रहेगा और किसी भी स्त्री की ओर आकर्षित नहीं होगा।

८	३	४	अलहुब बन फला अलाहुब फला बन फला	६	७	२
१	५	९		१	५	९
६	७	२		८	३	४

यह २१ दिन में १०१ बार अष्ट गन्ध से लिखकर भोजपत्र के ऊपर सिद्ध कर ले। नियमपूर्वक सिद्धि करने पर सफलता मिलेगी। यह तांत्रिक अटवाल का अचूक प्रयोग सिद्ध किया हुआ है।

गर्भ भय नाशक यन्त्र

अ	आ	इ	ई
उ	ऊ	ऋ	ऋ
ल	लृ	ए	ऐ
ओ	औ	अ	अः
क्र	क्रा	हो	क्री

इस यन्त्र को अष्टगन्ध या केशर से भोजपत्र के ऊपर १०१ बार लिखे। धूप, दीप, नैवेद्य सहित ब्रह्मचर्य का पालन करते हुए सिद्ध करें।

सिद्ध होने के बाद भोजपत्र पर लिखकर स्त्री के गले में पहना दे उसके बाद उसे विश्वास दिलायें कि मैथुन से उसे गर्भ

नहीं होगा, यह इस मन्त्र का प्रभाव है। सम्भोग के तुरन्त बाद तिल के तेल में सेंधा नमक की पोटली बनाकर योनि में रखे, गर्भ कभी न ठहरेगा।

तिल्ली जिगर प्लीहा नाशक यन्त्र

१. नागफनी की जड़ की माला बनाकर पहनने से तिल्ली-जिगर रोग दूर हो जाता है। जड़ के छोटे-छोटे टुकड़े बनाकर माला बनायें।

२. बाँस ककोड़े की जड़ को रविवार के दिन लाकर रोगी के समीप जलते हुए चूल्हे में बाँध दें। जैसे-जैसे वह गाँठ सूखती जायेगी, वैसे-वैसे तिल्ली भी घटती जायेगी।

संग्रहणी व दस्तनाशक तन्त्र

१. सहदेई की जड़ को रविवार के दिन लाकर उसके ७ टुकड़े बना लें और उन टुकड़ों को लाल रंग के डोरे में लपेट कर रोगी की कमर में बाँध देने से संग्रहणी दस्त आना बन्द हो जाता है।

२. गेहूं (अनाज), साँप की केंचुल को कपड़े की थैली में सींकर रोगी के पेट पर बाँधने से संग्रहणी रोग दूर हो जाता है।

३. रविवार या मंगलवार के दिन प्रातःकाल दक्षिण की ओर मुंह करके हाथ में एक गुड़ की डली लेकर उसे दांत से काटकर चौराहे पर फेंक दें तो आधा शीशी का रोग (दर्द) दूर हो जाता है।

नाहर सिंह वीर मन्त्र

ऊँचा परवत।
ऊँचे टीले उस पर।
गण वीरै के चोले।
नाहर सिंह महाबीर के।
मन्त्र के टीले वीर आवे।
पुष्प सुगन्धित पावे।
गुरु गोरख नाथ मछन्दर की दुहाई।
मेरी रक्षा करो वीरों की माई।
नाहर सिंह वीर की चली सवारी आई।
शब्द साँचा पिण्ड काँचा।
फुरो मन्त्र ईश्वरो वाचा।

विधि—यह नाहर सिंह वीर का मन्त्र है इसका मुकाबला कोई वीर नहीं कर सकता। आप यह प्रयोग गुरु की आज्ञा से करें पहले हनुमान चालीसा पढ़कर सिद्ध कर लें। यह ४० दिन की साधना है रक्षा मन्त्र पढ़कर साधना पाठ शुरू करें। काले हकीक की माला से ब्रह्मचर्य पूर्वक जप करे। साफ कपड़े पहनकर जप करें, दूध से युक्त पेड़े का प्रतिदिन भोग लगावें। यह साधना रात को की जाती है साधना के समय कई डरावने दृश्य दिखाई देते हैं, डरना नहीं चाहिए। साधना से पहले आप हमसे रक्षा यन्त्र नाहर वीर सिंह यन्त्र मंगा लें फिर साधना के

समय यन्त्र को सामने रखकर साधना करनी चाहिए।

इस सिद्धि से आप हर प्रकार के रोग भूत-प्रेत आदि समस्त रोगों, मुसीबतों को हल कर सकते हैं। इस शक्ति की उपासना हिमाचल में होती है वहाँ के चेले का यह मन्त्र है।

सेवक वशीकरण यन्त्र
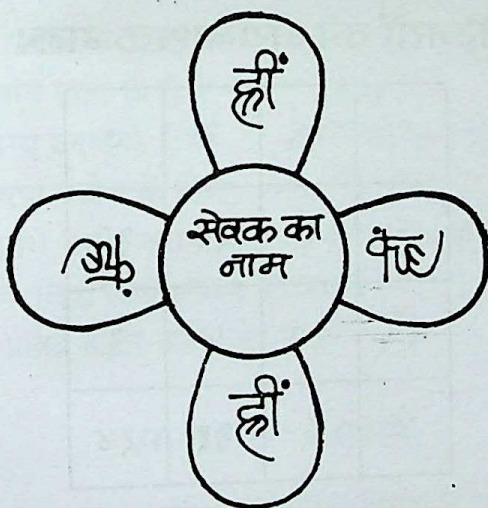
आपने प्राय: देखा होगा कि धनी पुरुष को अकेला जानकर सगे-सम्बन्धी नौकर सेवक आदि उसे हर प्रकार से हानि पहुंचाने की चेष्टा करते हैं ऐसे समय में भगवान भूतनाथ द्वारा निर्मित यह पिशाच यन्त्र प्रयोग में लावें तो वह भ्रष्ट बुद्धि सेवक वश में

होकर साधक की आज्ञानुसार ही कार्य करेंगे और साधक को किसी प्रकार से हानि न पहुंचा सकेंगे। यन्त्र धारण करने की विधि इस प्रकार से है।

भोजपत्र के ऊपर गोरोचन से निम्नलिखित यन्त्र को निर्मित करें। गन्ध पुष्पादि से विधिवत पूजन करके दही के अन्दर रख दें। सेवक सदैव के लिए वश में हो जाता है।

स्त्रियों का भयनाशक मन्त्र

९	१६	२	७
६	३	१३	१२
१५	१०	५	१
४	५	११	१४

इस यन्त्र को भोजपत्र पर लिखकर (अष्टगन्ध से लिखें) ताँबे के ताबीज में भरकर स्त्री के गले में धारण करा दें जो स्त्रियाँ डरती हैं डर का प्रभाव खत्म हो जाता है ११ दिन लगातार १०१ बार लिखकर यन्त्र को विधि से सिद्ध करके ही प्रयोग में लावे।

आसन का विधान

१. **धन प्राप्ति के लिए — रेशम का आसन**
२. **कामना सिद्धि के लिए — ऊनी वस्त्र का आसन**
३. **आरोग्य प्राप्ति के लिए — कुशासन**
४. **सम्मोहन के लिए — मृग चर्म**
५. **शत्रु नाश के लिए — व्याघ्र चर्म**
६. **सफलता के लिए — हिरन के चर्म**
७. **संतान प्राप्ति के लिए — कुशासन**
८. **भाग्य उदय के लिए — रेशमी वस्त्र का आसन**
९. **मारण प्रयोग के लिए — सिंह चर्म**

सबसे प्रमुख आसन कुश है कम्बल का आसन कामना सिद्धि के लिए, लाल कम्बल का आसन पूरा फल देता है। नहा धोकर पवित्र होकर आसन ग्रहण करें।

माला का विधान

आप इन मालाओं का प्रयोग कर साधना में सफलता प्राप्त करें।

१. वशीकरण और पुष्टि कर्म के मन्त्रों को मोती, मूंगा, हीरा की माला से जप करना चाहिए।
२. आकर्षण मन्त्रों को हाथी के दाँत की माला से जप करना चाहिए।

३. विद्वेषण मन्त्रों के लिए घोड़े के दाँत की माला से जप करें।
४. उच्चाटन मन्त्रों के लिए बहेड़े या घोड़े के दाँत की माला से जप करें।
५. मारण कर्म के लिए मरे हुए आदमी का दाँत या गधे के दाँत की माला से जप करें।
६. शुभ कार्य के लिए अर्थ प्राप्ति के लिए रुद्राक्ष की माला से जप करें। इस माला से जप करने से शान्ति कर्म में पूर्ण सफलता और लाभ मिलता है। सारे मनोरथ पूर्ण करने वाली यह माला है। इस माला से जप कर्म करके सफलता प्राप्त करें।
७. शक्ति एवं पुष्टि कर्म में २६ दाने की माला का प्रयोग करें।
८. वशीकरण में १५ दाने की मोहन प्रयोग में लायें।
९. १० दाने की उच्चाटन में प्रयोग करें।
१०. २९ दाने की विद्वेषण में या ३१ दाने की माला से जप करना चाहिए।
११. १०१ दाने की माला सर्व सिद्धि दायक है।

शान्ति और पुष्टि कर्म में कमल के सूत्र की डोरी से, आकर्षण तथा उच्चाटन में घोड़े के पूंछ के बालों की, बाकी सभी कार्यों के लिए रूई की डोरी से गुथी माला से प्रयोग करना चाहिए।

कलश विधान

शान्ति कर्म में	—	**नवरत्न युक्त स्वर्ण कलश**
उच्चाटन कर्म में	—	**मिट्टी का कलश**
वशीकरण कर्म में	—	**मिट्टी के भांडे का कलश**
मोहन कर्म में	—	**रूपे का कलश**
मारण कर्म में	—	**लोहे का कलश**

यदि किसी कारणवश स्वर्ण कलश न मिले तो चाँदी या ताँबे का कलश प्रयोग में लाना चाहिए।

षटकर्म में ऋतु विचार

प्रत्येक दिन रात में ६० घड़ी होती हैं जिसमें १०-१०घड़ी प्रत्येक ऋतु को विभक्त किया जाता है प्रत्येक ऋतु का समय ४ घण्टा होता है। प्रथम सूर्योदय से दस घड़ी या चार घण्टे तक बसन्त ऋतु। द्वितीय १० घड़ी तक ग्रीष्म ऋतु। तृतीय दस घड़ी वर्षा। चतुर्थ दस घड़ी शरद। पंचम दस घड़ी हेमन्त तथा छठे दस घड़ी तक शिशिर ऋतु, मानी गई है। कई आचार्य कहते हैं कि प्रात:काल बसन्त, मध्याह्न में ग्रीष्म, दोपहर ढलने पर वर्षा, सन्ध्या को शिशिर, आधी रात को शरद, तथा रात्रि के अन्तिम पहर में हेमन्त है। हेमन्त ऋतु में शान्ति कर्म, बसन्त में वशीकरण, शिशिर में स्तम्भन, ग्रीष्म में विद्वेषण, वर्षा में उच्चाटन, शरद ऋतु में मारण, कर्म सम्पूर्ण होता है। दिवस के प्रथम पहर में

वशीकरण, विद्वेषण, उच्चाटन, दोपहर में शान्ति कर्म, तीसरे में स्तम्भन, सन्ध्या काल में मारण प्रयोग किया जाता है। यह समय कार्य करने में फलदाई होते हैं।

दिशा का निर्णय

शान्ति कर्म में ईशान दिशा, वशीकरण उत्तर दिशा में, स्तम्भन पूरब में, विद्वेषण नैऋत्य में, उच्चाटन वायव्य तथा मारण आग्नेय दिशा में करना चाहिए।

मारण प्रयोग शनिवार को, शान्ति कर्म गुरुवार को, सोमवार को स्तम्भन, मंगलवार को उच्चाटन प्रयोग करे।

शान्ति कर्म के लिए उत्तर को, वशीकरण के लिए पूर्व को, धन प्राप्ति आदि के लिए पश्चिम दिशा और मारण के लिए मुंह को दक्षिण दिशा में करना फलदाई होगा।

सर्व कार्य सिद्धि यन्त्र

इस यन्त्र को प्रतिदिन स्नान ध्यान के पश्चात १०१ यन्त्र २१ दिन तक लिखना चाहिए। एक-एक करके नदी में प्रवाहित करना चाहिए। इसके यन्त्रों को आटे में गोली बनाकर प्रवाहित करे। इस यन्त्र को क्रमशः २ अंकों से भरना चाहिए। धूप-दीप से विधिवत् पूजन आदि के बाद सोने या चाँदी की ताबीज में यन्त्र रखकर वशीकरण के लिए भुजा पर बाँधे। आप इस यन्त्र को रोग, धन, नौकरी, मिलाप हर प्रकार के कार्यों पर प्रयोग कर

२

१ ९ ८

ह्रीं:

७

६

६ ४
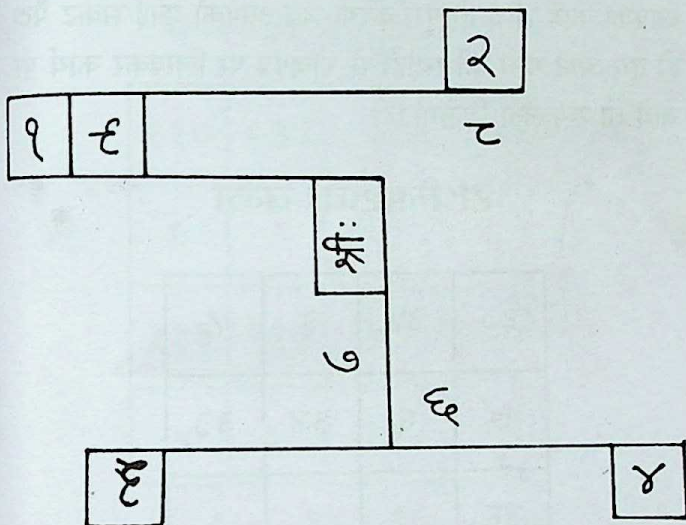
सकते हैं। सही केशर से भोजपत्र पर लिखकर प्रयोग में लाने से सफलता मिलेगी।

कार्य शीघ्र पूर्ण करने का यन्त्रं

भं ४	ह्रां १	ओं ८
महः ७	ह्री २	श्री ९
सः ६	भ्रीं ३	ह्री ८

यह यन्त्र २१ दिन में सिद्ध करके प्रयोग में लावे। यह

आपका कार्य शीघ्र ही पूरा करेगा जब आपको कोई संकट पैदा हो तब अष्ट गन्ध की स्याही से भोजपत्र पर लिखकर कार्य पर जावे तो सफलता मिलेगी।

सर्पनाशक यन्त्र

३०	३७	३	८
७	६	३४	३३
३६	३१	९	१
४	५	३२	३४

यह भी २१ दिन में सिद्ध कर रेवती नक्षत्र चंद्रवार को माल कांगनी के रस से लिखकर घर में रखने से सर्प नहीं आते हैं।

सम्मान प्राप्त करने का यन्त्र

इस यन्त्र को सिद्ध करके अष्ट गन्ध से भोजपत्र पर लिखकर धूप-दीप देकर अपनी टोपी या चोटी में रखे तो राज प्राप्ति करे और संसार में सम्मान प्राप्त हो।

सम्मान प्राप्त करने का यन्त्र

११७	१२४	२	७
६	३	१२१	१२०
११३	११८	८	१
४	५	११९	१२२

चोरी गया पशु घर वापस लाने का यन्त्र

१९	२६	२	८
७	३	२३	२२
२५	२०	९	१
४	६	२१	२३

इस यन्त्र को दीपावली के दिन १०००१ बार लिखकर

सिद्ध कर ले फिर सेह के तकले से लिखकर किसी खूंटे में गाड़ दे तो चोरी गया पशु घर वापस आ जायेगा।

विघ्न विनाशक यन्त्र

५६	६२	२	८
७	३	६०	५९
६२	५७	९	१
४	६	५८	६१

इस यन्त्र को गोरोचन से भोजपत्र पर लिखकर सोने या चाँदी के ताबीज में मढ़वाकर दाहिनी भुजा पर धारण करे तो सभी प्रकार के विघ्न दूर हो जाते हैं।

बवासीर नाशक तन्त्र

कार्तिक के महीने में जिमीकन्द (सूरन) खोदकर ले आवे फिर उसकी चकतियाँ बनाकर छाया में सुखाकर रख ले। आवश्यकता के समय चकतियों को काले रंग के तागे में बाँध कर कमर में धारण करने से बवासीर के मस्से धीरे-धीरे सूख जाते हैं।

पंचक विचार के टोटके

१. इसकी ऐसी मानता है कि पंचक में मृत्यु होने पर ५ ब्रन्धु जनों की मृत्यु होती है अतः किसी की मृत्यु के पश्चात् अगर पंचक है तो शेष पंचकों की संख्या के अनुसार पुतले बना कर जला देने चाहिएँ।

२. अगर किसी के पंचकों में कन्या होती है तो शेष पंचकों की संख्या के अनुसार कन्या की पुतली बनाकर झोली में डाल झुला दें और नामकरण के दिन उनको कोई नाम न देकर उन्हें पीपल के समीप भूमि में गाड़कर पत्थर रख दें। क्योंकि पंचकों में कन्या होने पर ५ कन्यायें होती हैं।

ग्रह बाधा विचार

यदि सूर्य कष्ट दायक होता है तो कष्ट देता है नौकरी में रुकावट देता है और न तो सरकारी नौकरी ही लगती है। सरकार की तरफ से दण्ड भी मिलता है तथा सरकारी कार्यों में सफलता नहीं प्राप्त होती है। दिल का दौरा, आँखों में कष्ट, हड्डी व शरीर में गर्मी, पेट में अग्नि, रक्त विकार रोग होता है।

आप इसका कष्ट दूर करने के लिए उपाय करें तब कष्ट से छुटकारा मिलता है। दान देने से भी ग्रहों की शांति होती है सोना, ताँबा, गेंहू, लाल गऊ, केशर, लाल वस्त्र सुबह के समय दान करे तब ग्रहों की बाधा दूर होती है।

सूर्य यन्त्र

इस यन्त्र को धारण करने से सूर्य ग्रह का कुप्रभाव दूर हो जाता है इस यन्त्र को रविवार के दिन पुष्य नक्षत्र में अष्ट गंध से भोजपत्र पर लिखकर ताबीज में डालकर पहनें। नियम पूर्वक २१ दिन साधना करके सिद्ध कर लें फिर प्रयोग में लावें।

	९	१८	१०	११	
७	३१	१६	१९	१३	१
१७	८	६	१२	२२	२९
३०	२०	५	२१	३	२३
२८	१५	१४	४	२४	
	२९	२७	२५	२	

सूर्य मन्त्र—**ओं ह्रां ह्रीं ह्रौं सः सूर्याय नमः।**

विधि—इस मन्त्र का ७००० जाप नियम पूर्वक करें तब ग्रहों का दोष समाप्त होता है यन्त्र को धारण करने से बहुत ही जल्दी कार्यों की रुकावट दूर होती है।

यह सूर्य ग्रहों का राजा है देवों के राजा भगवान विष्णु की पूजा करे तब ग्रहों का दोष दूर होगा रविवार युक्त पुष्य नक्षत्र में आप गायत्री मन्त्र का पाठ नियमित रूप से करें आदित्य हृदय स्तोत्र एवं हरिवंश पुराण का पाठ करके ग्रह से शांति प्राप्त करके जिन्दगी को कामयाब बनावें तथा १०१ बार प्रतिदिन लिखकर सिद्ध करके प्रयोग में यन्त्र को काम में लावें।

चन्द्रमा

चन्द्रमा को स्त्री का रूप माना जाता है चन्द्रमा का अशुभ फल जब होता है तो जातक की माता बीमार होती है जातक का

चन्द्रमा का यन्त्र

दिमाग कमजोर, चर्म रोग शरीर को कई तरह के रोग हो जाते हैं

इसके कष्ट निवारण के लिए यह वस्तुयें दान दें। मोती, चाँदी, मिश्री, चावल, दही, शंख, सफेद वस्त्र आदि। सफेद रंग की वस्तुयें दान देने से चन्द्रमा ग्रह की शान्ति होती है यह दान शाम के समय करना चाहिए।

इस यन्त्र को सोमवार के दिन शुक्लपक्ष में अष्ट गन्ध से भोजपत्र पर लिखकर ध्यान करके यह यन्त्र २१ दिन तक १०१ बार नियम विधिपूर्वक सिद्ध करके ही प्रयोग में लावें तब चन्द्र ग्रह की बाधा दूर हो जायेगी।

चन्द्र मन्त्र—ओं श्राँ श्रीं श्रौं सः चन्द्राय नमः।

इस यन्त्र का जाप ११००० बार नियम पूर्वक करें तब चन्द्र का दोष दूर होता है तथा हर कार्यों में सफलता मिलेगी, बाधाएँ दूर होंगी, प्रत्येक कार्यों में सफलता देगा।

चन्द्रमा स्त्री ग्रह है इसलिए इसका औरतों के आधे शरीर पर राज्य होता है। सोमवार के दिन शिव पार्वती की पूजा चन्द्रमा के कष्ट निवारण में लाभदायक होती है। सोमवार से शुरू करके २१ दिन तक शिव चालीसा का पाठ करके कष्टों का नाश करें।

लाल किताब की सम्मति के अनुसार दूषित चन्द्र वाले को दूध नहीं बेचना चाहिए। चन्द्रमा यदि चौथे भाव में हो और अनिष्टकारी हो तो उस व्यक्ति को दूध का प्रयोग नहीं करना चाहिए। रात को दूध न पियें, छोटे बच्चों तथा वृद्धों को निःशुल्क ही दूध पिलावें।

मंगल

यदि मंगल कष्टदायक हो तो यह सबसे क्रूर ग्रह है। मंगल ऐसा ग्रह है जो लड़ाई, दुर्घटना, चोट और आपरेशन कराता है। रक्त सम्बन्धी बीमारी, ब्लडप्रेशर, शस्त्र घाव, मंदाग्नि आदि मंगल के अशुभ प्रभाव हैं। इसके अशुभ प्रभाव को समाप्त करने के लिए मूंगा, सोना, ताँबा, लाल बैल, गुड़, केशर, लाल चोला, नारियल, लाल कपड़े में लपेटकर दान करने से अशुभ प्रभाव समाप्त होकर शुभ प्रभाव प्राप्त होता है।

मंगल का यन्त्र
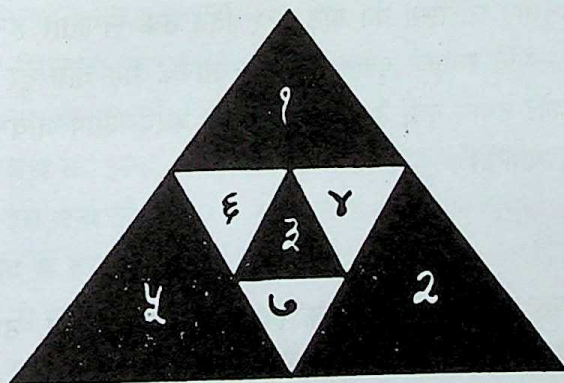
इस यन्त्र को धारण करने से मंगल ग्रह का कष्ट दूर होता है। मंगलवार को शुक्लपक्ष में लिखने से पूरा असर देता है। २१

दिन तक ब्रह्मचर्य का पालन कर यन्त्र को केसर से भोजपत्र पर लिखकर १०१ यन्त्र की आटे की गोलियाँ बनाकर रोजाना मछलियों को डालें तो सिद्ध होगा।

मन्त्र—ओं क्राँ क्रीं क्रौ सः भौमाय नमः।

विधि—इस मन्त्र का १०००० बार जप करे नियम सहित हवन एवं जप करके पहले मन्त्र को सिद्ध कर ले यन्त्र को धारण करने से सफलता मिलेगी। बिना सिद्धि के सफलता नहीं प्राप्त होती है।

मंगल सेनापति है। यह सबसे क्रूर ग्रह है। इसका सबसे बड़ा उपाय यह है कि दुर्गा, काली इत्यादि जितनी देवियाँ हैं हनुमान जी को इष्ट मानकर उन पर लाल चोला चढ़ावें, मंगलवार को हनुमान चालीसा का पाठ, २१ दिन तक लगातार हनुमान जी की मूर्ति रखकर पूजन करे तब आपके ग्रह दोष दूर होंगे और कोई उपाय नहीं है। इस प्रयोग को करके आप जीवन को सफल बनावें।

बुध

यह बुध ग्रह कष्टदायक होता है। दिमागी रोग, उल्टी, व्यापार में हानि, गणित कमजोर आदि कष्ट देता है। आप बुधवार का कष्ट दूर करने के लिए पान, सोना, मूंगा, हरा कपड़ा आदि हरी चीजों का दान सुबह-सुबह करें, इससे बुध ग्रह का कष्ट दूर होता है।
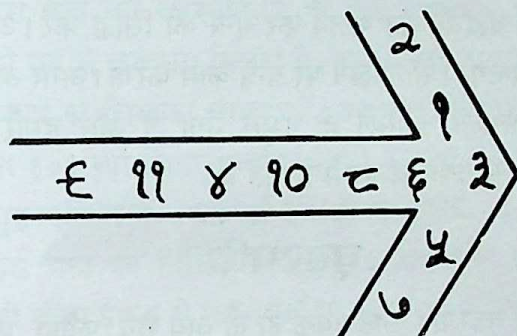
बुध यन्त्र

इस यन्त्र को बुधवार के दिन शुक्लपक्ष में केशर से भोजपत्र पर लिखकर धारण करने से बुध ग्रह का कुप्रभाव दूर होता है। पहले सिद्धि करना आवश्यक है। तरीका सिद्ध करने का पहले ही दिया जा चुका है।

बुध का मन्त्र—ओं ब्राँ ब्रीं ब्रौं सः बुधाय नमः।

इस मन्त्र को ४०००० बार जप करके पहले सिद्ध कर लेते हैं बाद में हवन आदि विधिवत् रूप से करके यन्त्र को धारण करने से ग्रह का कुप्रभाव जल्दी दूर हो जाता है।

बुध युवराज है, सुकुमार है, इसके कष्ट निवारण के लिए कृष्ण पूजा व गीता का पाठ शुभ फलदायी होगा। नियमपूर्वक यह उपाय करने से इस ग्रह का असर दूर होता है। बुधवार के दिन से उपाय करने से सफलता मिलती है।

ग्रहों को हर यन्त्र के लिए २१ दिन नियम मानकर लिख कर मछलियों को आटे की गोली बनाकर डालने से यन्त्र सिद्ध होता है। ब्रह्मचर्य का पालन कर यन्त्र की सिद्धि करें। असली केशर, अष्टगन्ध से लिखने पर यन्त्र काम करेगा। अगर आपको सामान असली न मिले तो हमसे मंगा लें और हमारे यन्त्र कार्यालय से तैयार यन्त्र भी मिलते हैं।

वृहस्पति

यदि वृहस्पति कष्टदायक हो तो वायु रोग, प्लीहा, फोड़े-फुन्सी, मोटापा, गुर्दे का रोग, तिल्ली, सन्तान में देरी, यह इस ग्रह का बुरा असर है। इसका उपाय करने से सफलता मिलती है। पुखराज, लड्डू, सोना, चने की दाल, पीला कपड़ा, हल्दी, पीली पुस्तक को जिल्द सहित दान करने से ग्रहों का कुप्रभाव घट जाता है।

वृहस्पति यन्त्र

वृहस्पतिवार के दिन पीपल के नीचे दूध चढ़ाकर दीपक जलावें। पीले प्रसाद केले बांटें, पीपल का पेड़ मन्दिर में लगावें।

इस यन्त्र को वृहस्पतिवार के दिन शुक्लपक्ष में धारण करने से ग्रह से छुटकारा मिलता है। ऊपर लिखे यन्त्र को केशर से भोजपत्र पर लिखकर धारण करें, तब कार्य करेगा। २१ दिन लगातार १०१ बार लिखना चाहिए सिद्धि के बाद में प्रयोग करें।

वृहस्पति मन्त्र—ओं ज्राँ ज्रीं ज्रौं सः गुरुवे नमः।

इस मन्त्र का विधिपूर्वक १६००० बार जाप करे हवन अति ही उत्तम प्रकार से करना चाहिए, तब यन्त्र शुद्ध होगा और सफलता देगा।

यह ग्रहों का गुरु है इसके लिए ब्रह्मा जी की पूजा करने से ग्रह की शान्ति होती है और जीवन में तरक्की मिलती है।

वृहस्पति के शुभ प्रभाव को बढ़ाने के लिए शुद्ध केशर को भोजन के साथ प्रयोग में लावें। जीभ एवं नाभि पर केशर की बिन्दी लगाने से गुरु सफलता देता है।

किसी की कुण्डली में अगर वृहस्पति ठीक न हो तो उसे ध्यान देना आवश्यक है विद्या एवं वैवाहिक सुख के लिए इस का अनुकूल होना अनिवार्य है उपाय करके लाभ उठावें।

शुक्र

यदि शुक्र कष्टदायक हो तो उपद्रव पैदा कर देता है। प्रमेह, कर्ण रोग, वीर्य विकार, नपुंसकता व सैक्स सम्बन्धी रोग पैदा करता है।

इसके कष्टों को दूर करने के लिए चावल, मिश्री, चाँदी, दूध, सफेद कपड़ा, सोना, सफेद वस्तुयें यथाशक्ति सुबह के समय दान करे। सफेद गाय को चूरी खिलाने से ग्रह की शान्ति होती है।

शुक्र यन्त्र
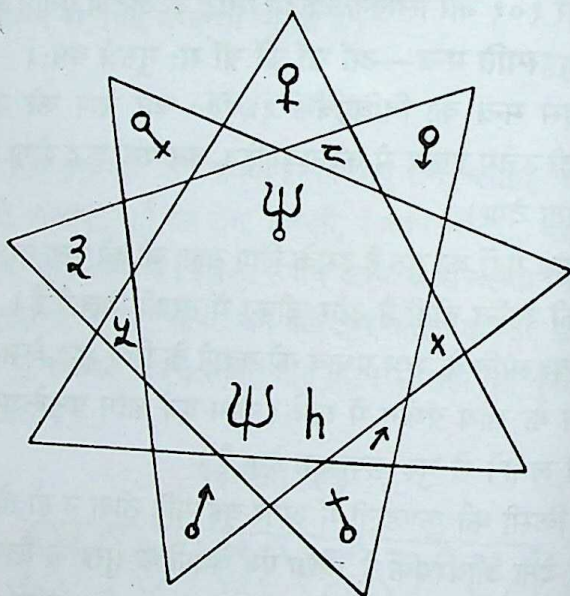
इस यन्त्र को बनाकर धारण करने से ग्रह का कष्ट दूर होता है। यन्त्र को पूरी विधि सहित लिखें। शुक्रवार के दिन शुक्लपक्ष में केशर से भोजपत्र पर शुभ समय में लिखने से ग्रह दोष दूर होता है।

शुक्र मन्त्र—ओं द्राँ द्रीं द्रौं सः शुक्रय नमः।

इस मन्त्र को विधिवत् १६००० बार जप करें। ब्रह्मचर्य का पालन कर नियम सहित हवन करे। शुक्र ग्रह से पैदा हुए रोग के निवारण हेतु यन्त्र को धारण करके ही मन्त्र का जाप करें।

यह श्रृंगारिक ग्रह है संगीत, भोग विलास इत्यादि सब पर शुक्र का अधिकार है।

यह हीरा रत्न पहनने से शुभ रहता है। मजीठ की जड़ को सफेद कपड़े या डोरे में बाँधकर गले या भुजा में धारण करें तब यह ग्रह शांत होता है। सफेद वस्त्र का दान लाभदायक सिद्ध होता है।

यह मन्त्र यन्त्र उपाय हमने सिद्ध समझकर भेंट किया है ताकि आप ग्रहों का उपाय करके जनता की भलाई करें।

शनि

यदि शनि शुभ हो तो घर में लोहे का सामान प्रयोग करें। भोजन में काला नमक, काली मिर्च काम में लावें। आँखों में काजल या सुरमा का प्रयोग करें। शनि के कष्ट को दूर करने के लिए नीलम, लोहा, उड़द, शीशा, काली वस्तुओं का दान करें।

इस यन्त्र को शनिवार के दिन शुक्लपक्ष में लिखकर धारण करने से शनि ग्रह का कष्ट दूर होता है। केशर से भोजपत्र पर विधिवत् लिखकर २१ दिन लगातार १०१ यन्त्र लिखकर सिद्ध करें तत्पश्चात् प्रयोग में लावें।
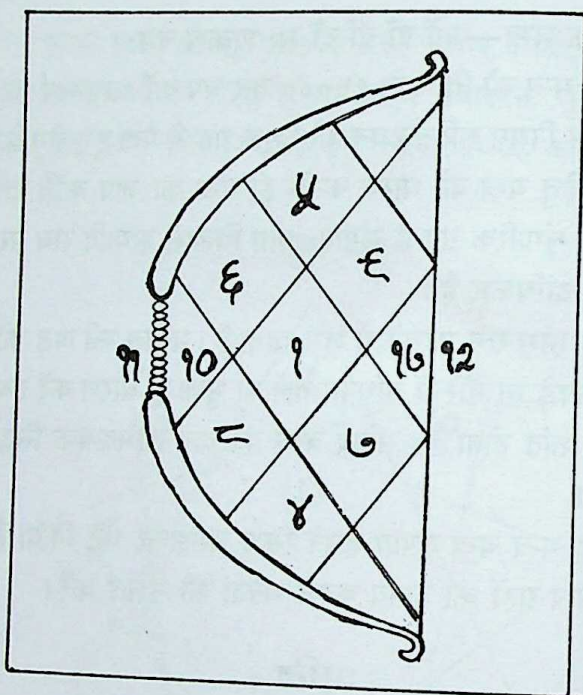
शनि मन्त्र

ओं खाँ खीं खैं सा शनैश्चराय नमः।

इस मन्त्र का जप २३००० जप नियम विधि पूर्वक करके हवन करे पूजा करने के पश्चात् यन्त्र धारण करें तब शनि का कष्ट दूर होगा।

नीलम या काले घोड़े की नाल की अंगूठी बनाकर शनिवार को धारण करें। श्वेत विरैला की जड़ काले तागे में बाँध कर धारण करें।

यदि शनि लग्न में हो तो यह पापी ग्रह होता हैं। जातक के घर का दरवाजा पश्चिम की ओर होगा इस व्यक्ति को ३६, ४२, ४५, ४८ वर्ष की आयु में बहुत खर्चा एवं संघर्ष करना पड़ता है कब्ज की शिकायत रहती है पढ़ाई अधूरी छूट जाती है ऐसी हालत में काले सुरमे की डली जमीन में दबा देनी चाहिए तथा सुरमे को बड़ के दूध के साथ घिसकर तिलक करना चाहिए। ऐसा करने से पेट की तकलीफ दूर हो जाती है।

कौवों को मीठा भोजन डालने से शनि का कुप्रभाव दूर हो जाता है।

राहू

सन्तानहीन, आँखों से कमजोर, माता के दाग वाले, मकान की छत अचानक टूटे और काम न आने वाला यह राहू क्रूर ग्रह के लक्षण हैं। गोमेद, शीशा, तिल, सरसों,नीला कपड़ा, तलवार, काला कम्बल, काला घोड़ा, राहू सम्बन्धी वस्तु का दान रात्रि के समय करे तब ग्रह दोष दूर होता है।

इस यन्त्र को धारण करने से राहू ग्रह के कष्ट दूर हो जाते हैं। रविवार के दिन शुक्लपक्ष में यन्त्र को भोजपत्र पर अष्टगन्ध से लिखकर यन्त्र को ताबीज में मढ़कर २१ दिन तक १०१ बार लिखकर यन्त्र सिद्ध करे हवन एवं विधिवत यन्त्र सिदध कर लें।

राहू का यन्त्र
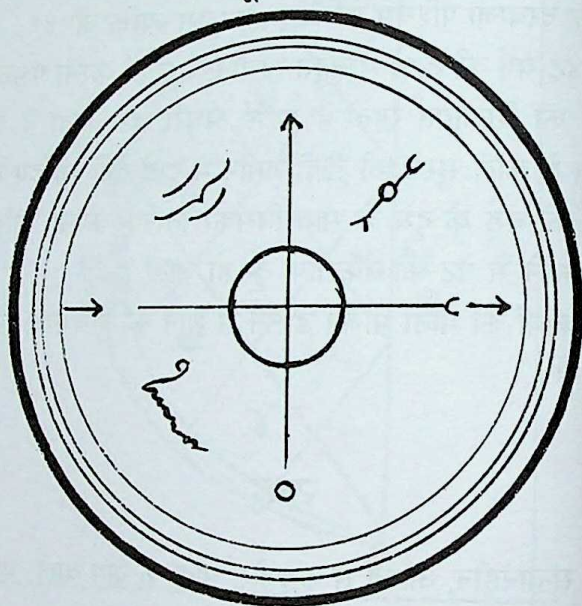
राहू का मन्त्र

ओं भ्रां भ्रीं भ्रौं सः राहवे नमः।

इस मन्त्र का जप १८००० बार करने से राहू का कष्ट दूर होगा आप विधि पूर्वक यन्त्र का हवन आदि करके धारण करके मन्त्र का जप करें तो कष्ट दूर होगा और जीवन में सफलता मिलेगी। यह प्रामाणिक मन्त्र है।

राहू का मुख्य उपाय नारियल को दरिया में बहाने से अनिष्ट दूर होता है। नारियल राहू का प्रतिनिधित्व करता है। यही कारण है कि देवियों पर नारियल भेंट चढ़ाया जाता है।

गोमेद धारण करना शुभ रहेगा तथा अभाव में सफेद चन्दन भी धारण कर सकते हैं। आप इस यन्त्र मन्त्र का प्रयोग करके अपने तथा अन्य लोगों के कष्टों को दूर कर सकते हैं।

राहू का शुभफल प्राप्त करने के लिए कोयले के कुछ टुकड़े लेकर बहती नदी में डालें। भंगी (मेहतर) को लाल रंग की मसूर की दाल का दान करें।

केतु

लाल किताब वालों ने केतु को कुत्ता कहा है। केतु जब कुण्डली में अनिष्टकारी हो तो यह उपाय करके अपना जीवन
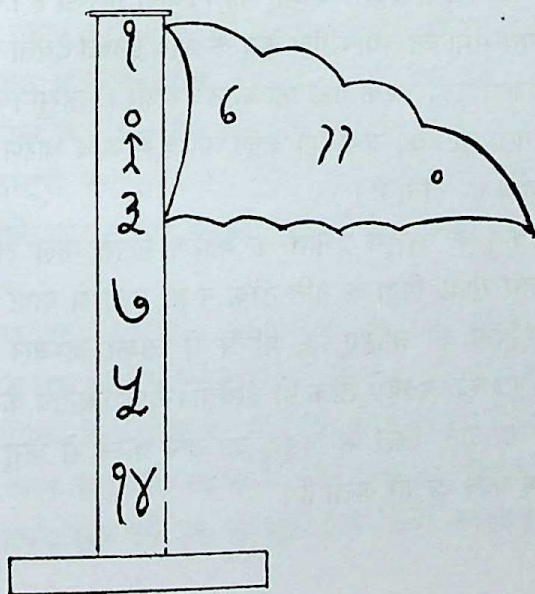
सफल या जनता की भलाई करें। इसका प्रभाव दूर करने के लिए लहसुनिया, लोहा, धूमिल फूल, नारियल, कम्बल, बकरा, सप्त धान्य, शस्त्र का दान रात्रि के वक्त करें। शनिवार को काले कुत्ते को मीठा भोजन वितरण करें धार्मिक जगह में झंडा चढ़ावें, कुत्ते का दान करने से भी आपके कष्ट दूर हो सकते हैं।

केतु मन्त्र

ओं प्रां प्रीं प्रौं सः केतवे नमः।

इस यन्त्र को विधिवत लिखकर धारण करके १६००० मन्त्र का जप करने से सब कार्यों में सफलता मिलेगी।

यह राक्षस प्रवृत्ति व राहू का निचला हिस्सा है। राहू शनि के साथ समानता तथा मंगल केतु के साथ इनका देवता गणतिजी है। इनकी पूजा करके ग्रहों का कष्ट दूर करें। लहसुनिया नग या अष्टगन्ध बूटी की जड़ों को काले कपड़े में बाँध धारण करने से ग्रह दोष दूर होता है।

केतु के अशुभ प्रभाव के कारण गलत फल लड़के के व्यवहार माता-पिता के प्रति ठीक न हो, स्त्री से कष्ट प्राप्त हो, माता-पिता को चाहिए कि मन्दिर में जाकर कम्बल का दान करें। पुत्र का व्यवहार ठीक हो जायेगा। लाल किताब के अनुसार तिल का दान, तिल के लड्डू का दान करने से केतु ग्रह का अशुभ फल दूर हो जाता है।

यन्त्रों का रहस्य

यन्त्रों को देवता का शरीर मानते हैं। मन्त्र को देवता की आत्मा मानते हैं। पूजा में मन्त्र हम उसी वस्तु को मानते हैं जिस पर मन केन्द्रित किया जाता है। मन्त्र के द्वारा हम शक्ति उत्पन्न कर हर कार्य सिद्ध कर जिन्दगी के दुःख दर्द दूर कर सब कार्य सम्पूर्ण करते हैं। यन्त्र दो प्रकार के होते हैं।

१. जिनको हम अपने शरीर पर धारण करते हैं।

२. जिनको हम सिद्ध करके प्रयोग में लाते हैं।

यन्त्र धारण करने के लिए तन्त्रसार में लिखा है कि पहले साधक विधिवत स्नान ध्यान करके गुरु के हाथों से यन्त्र ग्रहण करे यन्त्र ग्रहण करने से पहले गुरु की पूजा करनी चाहिए।

तांत्रिक के यन्त्र तैयार करने से पहले यन्त्र को दूध से नहलाये फिर जल से स्नान कराके गंगा जल से शुद्ध करे फिर चन्दन, कस्तूरी, कुमकुम, दूध-दही, घृत, मधु, शर्करा आदि से स्नान कराके जल से शुद्ध करके प्रयोग में लावें तब यन्त्र सिद्धि होगी।

धारण करने वाले यन्त्र को सोने के ताबीज में मढ़कर रखें तो पूरी उम्र तक कार्य करेगा। चाँदी में २० वर्ष तक कार्य करता है यह तांत्रिकों ने आजमा कर दिया है हमने उनका ही बयान दिया है आप ब्रह्मचर्य का पालन कर गुरु का चित्र सामने रखकर साधना शुरू करें गुरु की कृपा से हर कार्य सफल होगा।

जिस स्थान पर साधक पत्र लिखे उस स्थान पर दिन रात २४ घण्टे साधक के सामने एक दीपक लगातार जलता रहना चाहिए और सामने ही स्वच्छ जल से भरा हुआ कलश स्थापित करें। जब यन्त्र लिखा जा चुके तो कलश की पूजा करके पीपल के पेड़ पर पानी डाल दें। यदि मित्रता के लिए यन्त्र लिखना है तो मुंह में मिश्री या गाय का घी रखकर लिखें और लिखने के पश्चात् यन्त्र को अगर, तगर, चन्दन, गुग्गल, मिश्री, गाय के घी, मधु कपूर, सौगी, हल्दी, केशर, कस्तूरी एकत्र करके धूनी देनी चाहिए, तब कार्य सिद्ध करेगा।

मुख स्तम्भन के वास्ते यन्त्र को लिखते समय मुंह में मोम रखना चाहिए, स्वप्न बन्द करने के लिए मुंह में नमक डालकर, जब यन्त्र लिखा जा चुके तो नमक से धूप देना चाहिए।

यन्त्र लिखने में अष्टगन्ध का प्रयोग करना चाहिए तभी सारे यन्त्रों का प्रभाव पूरा होगा।

अष्टगन्ध

१. अगर	**५. चन्दन**
२. तगर	**६. गोरोचन**
३. कस्तूरी	**७. केशर**
४. कुमकुम	**८. हाथी का मद**

काम में आने वाली अन्य बातें—

यन्त्र अनार की कलम से लिखे तो सिद्धि देता है। मारण

के लिए लोहे की कलम, विद्वेषण के लिए कौवे के पंख की कलम, सर्व कार्य में सिद्धि देने वाली कलम सोने की होती है।

विद्या परीक्षा यन्त्र

लु	क	ग	इ	ऋ
१	३	५	७	९
ओ	ख	आ	उ	ए
२	४	६	८	१०

लु— बहुत परिश्रम करने से विद्या प्राप्त होती है।
क— तुम्हारे भाग्य में विद्या बहुत है ऐसा योग है।
ग— जो विद्या पढ़ोगे वह विद्या बहुत जल्दी आवेगी।
इ— विद्या पढ़ते जाओ, बहुत लाभदायक होगी।
ऋ— विद्या पढ़ो फल देर से मिलेगा।
ओ— विद्या नहीं आवेगी कोई और काम करो।
ख— विद्या पढ़ो, अनेक प्रकार की विद्या प्राप्त होगी।
आ— विद्या भाग्य में नहीं है, मेहनत से प्राप्त होगी।
उ— विद्या बहुत कष्ट से प्राप्त होगी, ऐसा योग है।

ए— विद्या माध्यम है ऐसा जानना चाहिए।

इस नक्श को २१ दिन १०१ बार लिखकर सिद्ध कर प्रयोग में लावें। उंगली से दाहिनी हाथ की आँखें बन्द करके रखें उत्तर मिलेगा।

वस्तु बिके शत्रु खरीदे

ओं नमो चड अलसूर स्वाहा।

विधि—जिस वृक्ष पर गुग्गल हो उसे शनिवार को निमंत्रण दे आवे और रविवार को प्रात: उसकी डाली लाकर गुग्गल की धूनी देवे और पैर के नीचे दबाकर बैठ जावे। १०१ बार मन्त्र पढ़कर डाली सिद्ध कर लेवे। उसके पत्तों को सिर पर रखकर व्यापार करे तो शत्रु भी इच्छा अनुसार कीमत देकर माल की खरीद करेगा।

मनुष्य कौवे के समान बोले

दशमी की आधी रात को किसी पुरानी कब्र में जाकर किसी कब्र से मनुष्य की खोपड़ी की एक हड्डी ले आवे, उसे खरल में रखकर उसमें ४ माशा कपूर, १० तोला अर्क, केवड़ा ३ माशा, उम्दा केशर मिलाकर इतना घोटे कि एक में मिल जावें।

इस बुकनी को सम्भाल कर रख दे। फिर नौचन्दी या जुमेरात को जाकर किसी ऐसे कौवे को पकड़े जिसका घौंसला

गूलर के पेड़ पर हो। इसे घर लाकर २१ दिन तक रखे, साधारण दाना-पानी दिया करे, दिन के तीसरे पहर चावलों को आटे की पिसी लेई में मीठा मिलाकर और बुकनी ४ रत्ती मिलाकर नित्य खिलावे। पूर्णमासी की आधी रात को उस कौवे को ले जाकर उसके घौंसले के उत्तर की तरफ २०-२५ कदम के फासले से उड़ा दे तो वह घौंसले में चला जावेगा।

अब तीन दिन बाद उसे घौंसले से दुबारा पकड़ लावे और १० बजे रात को कब्र के पास ले जाकर जहाँ से हड्डी प्राप्त की थी वहीं मार डाले। उसका भेजा और जुबान निकाल कर घर लावे बाकी वहीं पर गाड़ देवे। इन दोनों वस्तुओं को लाकर उसमें दो तोला सिंगरफ मिलाकर ३ दिन तक उसी जगह पर धतूरे के रस में खरल करे जब यह सब चीज एकत्र हो जायें तो इसका एक गोला बना ले इसमें काली मिर्च और कपूर चिपका दें काले तागे से लपेटकर रखे जिससे वह गोला बिल्कुल छुप जाए।

प्रयोग के समय जिस व्यक्ति को कौवे की तरह बुलाना हो उसे थोड़ी भाँग खिला दें उससे कौवे के सम्बन्ध में बातें करें जब वह सो जाये तो तैयार गोला उसके सीने पर रख दे कुछ समय बाद वह बड़बड़ाना शुरू कर देगा और कहेगा कि मैं कौवा हूं मेरा रंग काला है मैं उड़ रहा हूं थोड़ी देर बाद वह कौवे की तरह बोलने लगेगा जिसकी बोली सुनकर आस-पास के कौवे एकत्र हो जायेंगे और उसकी बोली सुनकर खूब बोलेंगे

कौवे के प्रत्युत्तर में वह तब तक बोलेगा जब तक वह थक नहीं जायेगा। थकने के बाद वह चुप हो जायेगा। अब आप गोला उठा लें असर खत्म हो गया। दोबारा गोला सम्भाल लें जब भी मजाक उड़ाना हो इसका प्रयोग करे यह 'नाथों' का सिद्ध प्रयोग है।

वशीकरण कौवा तन्त्र

सोमवार के दिन अपने हाथ और पैर के २० नाखून तथा कौवे की जीभ को श्मशान में ले जाकर किसी चिता के अंगारों में जलाकर राख कर लें। फिर उसमें अपना थूक तथा बायें हाथ की अनामिका अंगुली का रक्त मिलाकर उसकी छोटी-छोटी गोलियाँ बना लें। उसमें से आवश्यकता अनुसार एक गोली पान में रखकर अपनी प्रेमिका को खिला दे तो वह सदैव के लिए वशीभूत हो जाती है।

वशीकरण तन्त्र

चाँद की पहली तारीखों में से किसी भी तारीख को जंगल में जाकर कौवे के पूरे परिवार अर्थात् नर और मादा उनके बच्चों सहित पकड़कर घर ले आवे। दिन में खाने के लिए सामान्य भोजन दें। रात को उबले हुए सफेद चावलों में घी तथा शक्कर मिलाकर तथा उन चावलों में एक माशा चन्दन का तेल डाल कर किसी कोरे बर्तन में रख दें।

रात के समय किसी एकान्त कमरे में बैठकर उक्त चावलों के बर्तन तथा कौवे के पिंजड़े को अपने सामने रखकर बैठ जायें तथा चावलों और कौवे के पिंजड़े को लोबान की धूनी देकर निम्न मन्त्रों का ११०० संख्या में जप करें।

फुल हसे फुल बसे मोहन नाहर सिंह।
बसे जो ले उसकी बास सो चला आवे।
मेरे पास अमुक की पुत्री अमुक।
गुरु की शक्ति मेरी भक्ति।
फुरो मन्त्र ईश्वर महादेव की माया।
चाटने कनफूटी नर्क में पड़े॥

उक्त मन्त्र में जहाँ पर अमुक पुत्री का नाम आवे वहाँ प्रेमिका के पिता का नाम लेना चाहिए।

प्रत्येक बार इस मन्त्र का जप करते हुए चावलों पर फूंक मारते रहना चाहिए। जब जप संख्या पूरी हो जाये तो चावलों के बर्तन को कौवे के पिंजड़े में रख देना चाहिए कौवे उन चावलों को या तो उसी समय खा लेंगे या रात को खा लेंगे जो सुबह को चावल खाने से बचा रहे उस बर्तन को निकालकर उसे पृथ्वी में गड्ढ़ा बनाकर गाड़ देना चाहिए, यह सब कार्य ध्यान पूर्वक करना चाहिए।

इसी प्रकार ११ दिन तक इसी क्रिया को दुहराते रहना चाहिए १२ वें दिन उन कौवों को मारकर उनका रक्त निकालकर किसी चीनी के बर्तन में भरकर तथा उनके हृदय को निकालकर

सुरक्षित रख लेना चाहिए। मृतक कौवे के शरीर को किसी निर्जन स्थान में गड्ढ़ा खोदकर गाड़ देना चाहिए। फिर कौवे के दिल को छाया में सुखाकर उन्हें चाँदी के ताबीज में भर लेना चाहिए तथा कौवे का रक्त जब तीन दिन बाद सूख जाये उसे खरल में डालकर पीसकर कपड़े से छान लेना चाहिए फिर किसी काँच की मुँह बन्द शीशी में डालकर ऊपर से बन्द कर देना चाहिए फिर तीन माशे रक्त चूर्ण उसमें एक तोला हिसाब से धनिया का तेल मिलाकर किसी में भर देना चाहिए।

जब अभिलाषित प्रेमिका को वश में करने की इच्छा हो तो पूर्वोक्त ताबीज को बाँधकर उसके पास जाना चाहिए तथा शीशी से कुछ बूंद इत्र लेकर उसे सुँघा दे या उसके वस्त्र पर लगा देना चाहिए इत्र को पूर्वोक्त मन्त्र से ७ बार अभिमन्त्रित करना चाहिये। इस प्रयोग से उक्त ताबीज तथा इत्र के प्रभाव से प्रेमिका शीघ्र ही वशीभूत हो जायेगी।

गुप्त भेद जानने का तन्त्र

कौवे की जीभ तथा सहराई मेढ़क की जीभ इन दोनों को बन्द करके एक डिब्बी में रख लें, फिर जिस स्त्री अथवा पुरुष के मन का भेद जानना हो उसके हृदय पर रात को सोते समय गुप्त रूप से रख दे तो वह नींद में ही अपने गुप्त भेद कहना शुरू कर देगा तथा जगने पर उसे पता नहीं चलेगा कि वह अपने गुप्त

भेद किसी को पहले ही बता चुका है यह प्रयोग दीपावली की रात को मन्त्र से अभिमन्त्रित करके काम में लावें।

गढ़ा धन दिखाई देने का तन्त्र

काले कौवे की जीभ को तिल के तेल में जलाकर काजल की भाँति पीस लें। जो व्यक्ति विष्णु पद जन्मा है अर्थात उसके प्रसव के समय पाँव पहले ही बाहर निकले हों वह व्यक्ति उक्त काजल को आँखों में लगाये तो उसे जमीन में गढ़ा हुआ धन दिखाई देगा।

किन्हीं दो व्यक्तियों में घनिष्ट मित्रता हो और उनकी मित्रता से स्वयं को हानि पहुँचने की सम्भावना हो तो यह प्रयोग काम में लावें, पूर्ण सफलता मिलेगी।

माघ मास की अमावस्या की रात को एक उल्लू पकड़कर ले आवें तथा उसे पानी से स्नान कराके उसकी पूँछ के ३ पंख नोंचकर उसे उड़ा दें। उड़ाने से पूर्व उसका विधिवत पूजन करें।

फिर दूसरी रात उन तीनों पंखों को लेकर किसी बहती हुई नदी में आधी रात के समय दायें हाथ में पंखों को लेकर स्नान करें तत्पश्चात किसी श्मशान भूमि में जाकर वहाँ जलती हुई चिता में दो चार अंगारे निकालकर उन पर उल्लू के पंखों को रखकर भस्म कर ले उस भस्म को कागज की पुड़िया में रखकर या काँच की शीशी में रखकर घर लौट आये।

फिर अगले दिन आधी रात शनिवार के दिन अपने घर में किसी शान्त जगह पर आसन मृग, कुश, कम्बल लगाकर पूर्व दिशा की ओर मुंह करके बैठ जाये तथा नीचे लिखे मन्त्र को पढ़कर एक-एक मन्त्र भस्म के ऊपर से मारते जायें भस्म अभिमन्त्रित हो जायेगी।

ओं नमः उलूक राजाय।
लक्ष्मी वाहनाय अमु केन सह अमुकस्य विद्वेषण।
कुरु फ्रां फ्रीं फ्रूं फ्रे फौ फ्र स्वाहा॥

उक्त मन्त्र में जहाँ अमुकेन सह अमुकस्य शब्द आया है जिन दोनों मित्रों में शत्रुता करानी हो उन दोनों के नाम का उच्चारण करना चाहिए।

जैसे लाली के साथ।
मनजीत कौर की शत्रुता करानी हो।
तो कहे लाली सह मनजीत कौर विद्वेषण कुरु।
इस तरह कहे॥

मन्त्र जप पूरा हो जाने पर उक्त अभिमन्त्रित रख दे, दो भाग करके एक भाग एक मित्र के दरवाजे पर गाड़ आवे। याद रखें कि यह क्रिया बिल्कुल गुप्त रखनी चाहिए ताकि किसी को पता न चले।

इस प्रयोग को करने के बाद एक महीने के अन्दर उन दोनों मित्रों में बहुत बड़ा झगड़ा उत्पन्न हो जायेगा एक दूसरे के शत्रु बन जायेंगे।

ज्वरनाशक प्रभावी टोटके

१. रविवार के दिन आक की जड़ उखाड़कर लावे और रोगी के कान में बाँध देने से सभी प्रकार के ज्वर शान्त हो जाते हैं।

२. रविवार के दिन संध्या के समय कोरे घड़े में पानी भरकर उसमें एक सोने की अंगूठी डाल दें। एक दो घण्टे के बाद मलेरिया ज्वर के रोगी को किसी चौराहे पर ले जाकर उस घड़े के जल से स्नान करा देवें। स्नान के बाद घड़े से अंगूठी निकाल लें इससे भी ज्वर शांत हो जाता है।

३. रविवार के दिन सहदेई तथा निर्गुण्डी की जड़ लाकर और दोनों को रोगी की कमर में बाँध दें इससे हर प्रकार के कम्प ज्वर व पारी ज्वर शान्त हो जाते हैं।

४. रविवार को सफेद फूल वाले धतूरे की जड़ उखाड़कर रोगी की दाहिनी भुजा में धारण करने से पारी ज्वर शान्त हो जाते हैं।

५. कुत्ते के मूत्र को मिट्टी में सानकर गोली बना लें और धूप में सुखा लें और उस गोली को रोगी के गले में बांधने से पारी ज्वर शान्त हो जाता है फिर कभी नहीं होता है।

६. शनिवार के दिन सूखे ताड़ के वृक्ष की जड़ की मिट्टी को लाकर रविवार को प्रातः समय उसे घिसकर रोगी के मस्तक पर चन्दन की तरह लगा दें इससे पारी ज्वर शांत हो जाता है।

७. काले सर्प की कैंचुल को रोगी की कमर में बाँधने से पारी ज्वर शांत हो जाता है।

ज्वर नाशक यन्त्र

र	र	र
र	र	र
र	नाम	र
र	र	र
र	र	र

यह यन्त्र भगवान धन्वन्तरी का निर्मित किया है जो कि सभी प्रकार के ज्वरों का नाश करता है इस यन्त्र को २१ दिन में सिद्ध कर फिर धतूरे के रस में मृतक के परिधान पर निर्मित करे तथा पुष्प आदि से पूजन करके कृष्ण पक्ष की अष्टमी या चतुर्दशी को नहा धोकर पृथ्वी में गाड़ देने से सभी प्रकार के ज्वरों का नाश हो जाता है।

हनुमान यन्त्र

नं.	छं.	जं.	चं.
दं.	दं.	चं.	चं.
जं.	छं.	जं.	चं.
छं.	नं.	जं.	हं.

यह यन्त्र श्री हनुमान जी का है हर प्रकार की मनोकामना को पूरा करके हर मुश्किल को दूर करता है इस यन्त्र को भोजपत्र पर लिखकर अष्टगंध से सवा लाख सिद्ध कर ले। साधना के समय घी का दीपक जलाना चाहिए। ब्रह्मचर्य का पालन करें तथा स्त्री से बातचीत न करें। सिद्धि करने के नियम पीछे दिये जा चुके हैं यह रक्षा के लिए 'लाली' तांत्रिक का सिद्धि यन्त्र है।

जगद्वश्यंकर यन्त्र

यह यन्त्र आपको वशीकरण के प्रत्येक कार्यों में सफलता तथा आदर सम्मान पाने के लिए लाभदायक है जिस व्यक्ति पर

इस यन्त्र का असर होगा वह व्यक्ति विरोध या विवाद को त्याग कर इच्छित व अनुकूल व्यवहार करेगा।

ॐ बं जे हीं डं
दें डं ह्री ॐ डं
बं डं जगतं ब ॐ ह्रीं

चमेली की कलम से गोरोचन, लाल चंदन, केशर और कस्तूरी की स्याही बनाकर भोजपत्र पर ऊपर दिया गया यन्त्र विधिपूर्वक गन्ध, पुष्प आदि से पूजन कर त्रिलोह के ताबीज में मढ़कर बाजू पर धारण करे धारण करते ही असर चालू हो जाता है।

४१ दिन तक लगातार १०१ बार ऊपर लिखी स्याही से नियम पूर्वक सिद्धि करके ही प्रयोग में लावे।

फालनामा

खुदा की तरफ ध्यान करके आँखें बन्द करके नीचे दिये खाने में उंगली रखे।

१. तुम्हारी कोशिश फैसले पर मुनासिब है, काम बन जायेगा। काली की पूजा करो।

१ इये ६	४ काफ ५९	७ ऐन ६१
२ स्वाद ८७	५ काफ १९	८ ज्वाद ५१
३ छोटा हे ३	६ मीम २४	९ बड़ा हे २

२. फल नेक है दुश्मन कमजोर है, तुम्हारी फतह यकीनन है। अपना राज जाहिर न करें, हो सके तो महाकाली यन्त्र धारण करें।

३. इस फल से मालूम होता है कि सख्त खतरा है बेहतर है कि इस इरादे से बाज आयें वरना नुकसान होगा, काली को भेंट दें।

४. फल बहुत अच्छा है। तुम्हारा इरादा पूरा होगा इत्मीनान रखें कामयाबी तुम्हारे कदम चूमेगी। कार्य शुरू करने से पहले काली चालीसा का पाठ करें, सब संकटों का नाश होगा।

५. फल बहुत नेक है। इरादों में कामयाबी होगी, परन्तु अभी कुछ देर है, नारियल काली के मन्दिर में चढ़ावें।

६. फल बहुत नेक है। काली मन्त्र का जाप करके काम शुरू करें जिस पर तुम्हें भरोसा है कि वह तुम्हारा दोस्त है। वह दोस्त नहीं है।

७. कामयाबी तो होगी परन्तु लाभ बहुत कम होगा पूरे

लाभ के लिए महाकाली यन्त्र धारण करें।

८. हाल में ख्याल छोड़ दो चन्द रोज बाद काली को भेंट देकर काम शुरू करें कार्य पूरा होगा।

९. बीमारी खतरनाक है देशी इलाज के साथ काली का यन्त्र और मन्त्र से पानी अभिमन्त्रित करके दें रोग ठीक होगा।

यह यन्त्र ४१ दिन लगातार १०१ बार लिखकर सिद्ध करें। काले धतूरे के रस में गोरोचन मिलाकर लिखने से यन्त्र सिद्ध करके प्रयोग में लावें पूर्णरूपेण सफलता मिलेगी।

महाकाली मन्त्र

ओं नमो आदेश गुरु का आदेश।
काली काली महाकाली।
इन्द्र की बेटी ब्रह्मा की साली।
चाम की गठरी हाड़ की माला।
भजो आनन्द सुन्दरी बाला।
भरपूर वसन करले उठाई।
काम क्रान्ति कालिका आई।
लुच्ची मोहन भोग भेंट काडाही।
जहाँ भेजा तहाँ जाई।
कष्ट दुःख से लेव बचाई।
सभी दैत्यन को मार गवाई।

आदि अन्त तू रही सहाई।
मैं पूत तू है मेरी माई।
सब दुःखन् से लेव बचाई।
गुरु की शक्ति हमारी भक्ति।
फुरे मन्त्र दोहाई काली की।
ईश्वरो वाचा।

विधि

इस मन्त्र का जप नियम विधि सहित एक माला रोज ४० दिन तक १०१ बार जप करना चाहिए। लोटे का पानी पीपल को देकर महाकाली का ध्यान कर जप करना, द्रवित रहना, ब्रह्मचर्य धर्म का पालन करना चाहिए।

१०१ यन्त्र लिखकर दरिया में डालने से यन्त्र मन्त्र सिद्ध होगा। यह यन्त्र लिखकर आटे की गोली में रखकर दरिया में डालें।

कालिका मन्त्र

ओं नमो आदेश गुरु जी को।
तूही कालिका कै बखानी।
तूही चौदह लोक की आपरानी।
तूही पृथ्वी आकाश को बनावे।
तूही पञ्च तत्त्वों को उपजावे।

तीनों गुण ने तू ही रचया बनाया।
तूही है जिसने जंगल को उपजाया।
तूही देवता किन्नर दैत्य बनाये।
तूही इनमें वैद्य विवाद रचाये।
तूही करता है आप इतने बिखेरा।
तूही फिर करै आनि इनमें निवेरा।
सदा जय सदा जय सदा जय जै विराजै।
तूही जो सबका कार्य साजै।
दास जानकर दास की रक्षा कीजै।
अपनी विरद कर दास को राख लीजै।
सदा शरन तेरी राख लाज मेरी।
हे खण्डधारी कालिका सरन तेरी।
फुरे मन्त्र ईश्वरो वाचा।

इस मन्त्र का जप नियम सहित सुबह के पिछले पहर में करना चाहिए। दो घण्टे में जिंतना हो सके उतना करना चाहिए गिनती के मुताबिक उतना ही प्रतिदिन करना चाहिए ४० दिन का यह पाठ है।

शुद्ध साफ पवित्र होकर धूप-दीप का प्रयोग करके मशान से रक्षा करके (मन्त्र पढ़कर) जप करें, ब्रह्मचर्य धर्म का पालन करना चाहिए यह सिद्धि आपको जिन्दगी में हर कार्यों में सफलता देने वाली है। काली की भेंट पूजा देकर विधिवत जप करने से मन्त्र की सिद्धि होगी।

मारण काली मन्त्र

जिस मन्त्र या प्रयोग द्वारा मनुष्य की मृत्यु कर दी जाती है वह मारण कहलाता है मारण मन्त्र की देवी श्री भद्रकाली हैं। इसका जाप अग्निकोण में तथा शरद त्रतु में तथा कृष्ण पक्ष की मध्य रात्रि में किया जाता है तथा यह अभीष्ट फल देने वाली हैकाले रंग के भैंसे के चमड़े का आसन बिछा कर साधना करें। पास में ही मिट्टी का बर्तन उल्लू का पंख, विष मिश्रित रुधिर से हवन करें तथा गधे के दाँत की माला का प्रयोग करें यह प्रक्रिया अमावस्या को पूर्ण फलदायी है नियम पहले ही दिये जा चुके हैं उन्हीं नियमों से साधना करें यह प्रयोग कभी भी किसी के प्राण गंवाने के लिये न करें यह गलत असर कर देगा जब अपनी जान को खतरा हो तब यह प्रयोग करें।

ध्यान—**शवारुढाम्महाभीमाँ घोरदंष्ट्रां हसन्मुखीम्॥**
चतुर्भुजां खड्गमुण्डवराभयकरां शिवाम्।
मुण्डमालाधान्देवी ललजिह्वान्दिगम्बराम्।
एवं संचिन्तयेत् काली श्मशानालयवासिनीम्॥

अर्थ—(यह महाकाली मुर्दे पर सवार है। उसका शरीर शिवजी के समान, भस्म बाघम्बर व सर्प युक्त होने से महा भयंकर (डरावनी) है। ऐसी विकराल रूप वाली महामाया शत्रुओं के प्रति उपेक्षापूर्ण भाव से हंस रही है तथा ऐसा करने पर उसकी तीक्ष्ण दाढ़ें स्पष्ट दिखाई दे रही हैं। उसके ४ हाथ हैं,

एक हाथ में रक्त रंजित खड्ग है दूसरे में नर मुण्ड तीसरे में अभय मुद्रा है चौथे में वर है। गले में मुण्ड माला है। दिशायें ही उनका अम्बर है तथा लपलपाती हुई जिह्वा बाहर निकली है। श्मशान जिनका निवास स्थान है ऐसी महाकाली का ध्यान मैं भक्ति पूर्वक करता हूं।)

शत्रुनाश

ओं नमो भगवती मातेश्वरी भगवती,
अमुकस्य हन हन स्वाहा।

इस मन्त्र का जप २१००० संख्या में करना चाहिए दशांश हवन सरसों का तेल कनेर का फूल मिलाकर दें तो शत्रु निश्चय मृत्यु को प्राप्त होता है नियम सहित जप पाठ करें आपका कार्य सिद्ध हो जायेगा।

काली नील वरणी का मन्त्र

ओं नमो आदेश गुरु को।
प्रगटी जोत जद आदि मस्तकते।
हलचल भई उदय अस्तते।
कांपे तीन लोक जल थल सब पर्वत।
छूटा ध्यान तवै कैलाश पर।
चन्द्र सूरज सब ही डर पावै।
ब्रह्मलोक सब होवे हैरान।

यदि कड़की आन रब मण्डन।
गर्भ जान के गर्भ गये सब।
जब शत्रु पकड़ तै चलावै।
फिर गगन मध्य अज हूं लौ न आये।
सखत बीज को रुद्र को पान कीओ।
सेना समेत तिसै नाश कियो।
तेरी है जय तेरी ही जय पड़ी जग भीतर जब।
नमो नमो अक्षर तैंतीस तब।
नमस्ते नमस्ते करते ध्यावै।
मन वांछित सगले फल पावै।
नमो जय नमो जय नील वरनी ऐ नमः।

इस मन्त्र का जप भी विधि सहित नियम मानकर दोपहर के समय माघ की संक्रान्ति से जल के किनारे शुरू करें। ४० दिन तक १०१ बार जप करें। ध्यान लील वरणी काली का करना चाहिए। नारियल हवन में काली को देना चाहिए। बलि के लिए काला बकरा जंगल में ४० दिन छोड़ें, बकरा चारा खाने वाला हो।

हवन की सामग्री में दाहिने हाथ की अनामिका अंगुली के खून की आहुतियाँ दें। काली को अपने खून का टीका लगायें। ४० दिन के अन्दर काली दर्शन देती है। हर रोग एवं मुसीबत को दूर करती है सभी प्रकार से सिद्धि देने वाला यह नाथ का मन्त्र आपकी सेवा में भेंट किया गया है।

भूत-प्रेत दूर करने का मन्त्र

ओं नमो आदेश गुरु को।
आदेश ईश्वर को आदेश।
पवनपूत बलवान हनुमन्ता।
अपने सेवक के कार्य करन्ता।
जहाँ सुमरे तहाँ तू पहुँचता।
श्री रामचन्द्र की आन मानकर चले।
श्री लक्ष्मण की आन मानकर चले।
माता सीता जी की आन मानकर चले।
पिता केशरी की आन मानकर चले कहाँ को चले।
छाया को पकड़ने पर चले।
जिन्न भूत को पकड़ने चले।
जिन्न भूत प्रेत राक्षस दैत्य को पकड़ने को चले।
चले देव दानव हूर परी इन को पकड़ने को चले।
पकड़ कर लावे तो श्री रामचन्द्र जी।
ते माता सीता की दुहाई पिता केशरी की दुहाई।
माता अञ्जनी की दुहाई राजा सुग्रीव की दुहाई।
गुरु की शक्ति हमारी भक्ति फुरे।
शब्द साँचा पिण्ड काँचा फुरो मन्त्र ईश्वरो वाचा।

इस मन्त्र का जप अकेले कमरे में बैठकर ४० दिन तक लगातार हनुमान जी की मूर्ति को सामने रखकर ३-४ घण्टे तक

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

लगातार करें। धूप, दीप, नैवेद्य, फूलों की माला, पानी का पात्र, सिन्दूर, लौंग, इलायची, नारियल, मौसम के फूल पास रखकर मन्त्र का जप करें। प्रत्येक सुबह के समय यह चीजें दरिया में बहा देनी चाहिए नई चीजें रखनी चाहिए। ४० दिन तक हनुमान की कड़ाही १०१ लड्डू भेंट रखकर मन्त्र का जप करें अपनी पूरी जिन्दगी में मंगलवार का व्रत रखें। भूत-प्रेत आदि सभी कार्यों में सुगमता होती है हर भले कार्यों पर २१ जप करके सिद्ध करें तो कार्य हो जाता है।

काली मन्त्र

काली महाकाली काली।
दोनों हाथ बजावे ताली।
हाथ में गदा हाथ में त्रिशूल।
गुण की बांधीं।
नाव वाचा को बाधों ब्रह्मा।
रक्षा वाचा को प्रणाम।
करो लाज राखने वाली काली।

विधि—इस मन्त्र की सिद्धि नवमी के दिन की जाती है एक लाख बार जपने पर यह मन्त्र सिद्धि देता है तीन दिन में सिद्ध करे नवमी से दो दिन पहले जप शुरू कर देना चाहिए। सिद्धि शुरू करने से तीसरा दिन नवमी का हो।

भूत बाधा निवारण मन्त्र

सूत बनावे वन बीच आनन्द कन्द रघुवीर।
लले सिय सम्मुखमह होय धीर मत धीर।
ताहि समय लक्ष्मण तह आये।
पूछे राम लक्ष्मण बुलावे।
बोले हरिकथन कारण तुम भाई।
इत आवत बहु बिलम्भ लगाई।
लक्ष्मण बोले गये दूर पहाड़ा।
देख्यो तहाँ भूत दल झाड़ा।
तहाँ एको मनुष्य न दिखाये।
निज आश्रय को छोड़ पराये।
इतना सुन हरि बाण चलावे।
भागे भूत आनन्द गिरि भावै।
अमुक के अंग नहीं भूत नहीं झार।
राम के नाम से भई समुद्र पार।
आदेश श्री राम सीता की दुहाई।

उपरोक्त मन्त्र से झाड़ा करने से भूत-प्रेत की हर बला का असर दूर हो जाता है। यह मन्त्र राम के तीर की तरह असर करता है इस मन्त्र को विजय दशमी से २० दिन पहले शुरू करना चाहिए हर रोज १०१ बार जप नियम पूर्वक विधि मान कर करे। तब मन्त्र सिद्ध होगा। राम की तस्वीर लगाकर जप करें।

भूत-प्रेत दूर करने का मन्त्र

उतर विराजे केदारनाथ।

नाम के राजा।

हादिक शश-पीर।

पुकार किये पूजा।

शशमीर मकाँ मदीना के पीर।

काहे आये हिन्दू के मन्दिर।

अपना नाम रखो तो।

अमुक को जल्दी छोड़।

यह मन्त्र भी ऊपर बताई गई विधि के अनुसार ही प्रयोग कर झाड़ा करके ही प्रयोग में लावें।

भूत-प्रेत साधना

तन्त्र में भूत-प्रेत का सत्त्व स्वीकार हो गया है। प्रेत योनि में आकर मनुष्य कई बार उत्पातों हो जाता है वह अनेक प्रकार के उपद्रव शुरू कर देता है इस उपद्रव को शान्त करने का विधान तन्त्र शास्त्र में है।

मन्त्र— ओं हूँ च हूँ च हुच फट स्वाहा।

किसी स्थान पर शिव मूर्ति की स्थापना करें प्रत्येक दिन अर्धरात्रि के समय प्रतिदिन लगातार २५ बार पाठ करना आवश्यक है इस तरह बिना नागा किये पाठ करें। पाठ करने के बाद शिव

मूर्ति की पूजा करें अब आप भूत ग्रस्त किसी को भी मुक्ति दिलाकर भला कार्य करें। इस मन्त्र से पानी में झाड़ा करके पानी रोग ग्रस्त आदमी को पिला दें भूत-प्रेत दूर होंगे।

अकाल मृत्यु नाशक यन्त्र

इस यन्त्र को कृष्ण पक्ष की चौदस के दिन वट वृक्ष की कलम से भोजपत्र पर लिखे और रोगी को पहना दे इससे अकाल मृत्यु का भय दूर होता है। यह मन्त्र सब प्रकार से रक्षा करता है इस मन्त्र को ढाई घर की चाल से लिखें।

२	९	४
७	५	३
६	१	८

जिन सिद्धि

किबली गई बन को जिनको जै हरनाम।

आप इस मन्त्र को रविवार की रात को १२ बजे जिन्न की अंगूठी पहनकर एक हजार बार जप करें इस तरह सात दिन तक करें। पेड़ों की राख की भेंट अपने पास रखे यह आप स्वयं

तैयार करें जब जिन्न सातवें दिन हाजिर होगा तो उसे भेंट देकर तीन वचन ले ले कि वह आपको भविष्य में काम देगा।

साधना के समय लहसुन, प्याज, अंडा, माँस आदि का सेवन वर्जित है। हकीक काले रंग की माला से जप करना चाहिए धूप आदि का प्रयोग अवश्य करें जप में आपको ताली की आवाज सुनाई देगी, घबड़ाना नहीं, यही सिद्धि का संकेत है।

देवी का यन्त्र
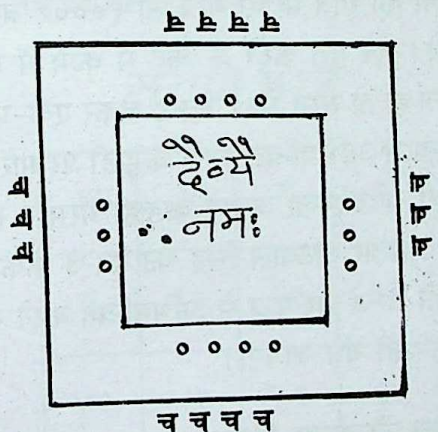
इस यन्त्र को मंगलवार के दिन भोजपत्र पर केशर से लिखें। पहले यन्त्र को सिद्ध कर ले। सिद्ध होने के बाद आप यन्त्र लिखकर धारण करें।

कड़ाही बाँधने का मन्त्र

ओं नमो जल बाँधू जलवाई !

बाँधू बाँधू कुवाँ बाही।
नौ सौ गाँव का वीर बुलाउ।
बाचे तेल कड़ाही।
जती हनुमन्त की दुहाई।
शब्द साँचा पिण्ड काँचा।
फुरो मन्त्र ईश्वरो वाचा।
सत्य नाम आदेश गुरु को।

दीपावली की रात्रि में इस मन्त्र को १०००१ बार जप कर सिद्धि कर ले। जप पूरा करने के बाद में काम में लावे। जब प्रयोग में लाना हो तो रास्ते से ७ कंकड़ लेकर एक-एक कंकड़ को ७ बार मन्त्र से अभिमन्त्रित करके कड़ाही पर मारें। जो चाहे जितना लकड़ी या कोयला जलाये कड़ाही गरम न होगी। यह मन्त्र तांत्रिक अवतार अटवाल सिंह का है। ७ कंकड़ों में हर एक कंकड़ को ७-७ बार मन्त्र से अभिमन्त्रित करने से कड़ाही पर मारें तो कड़ाही बंध जायेगी।

नैन वेदना विनाशक मन्त्र

नमो राम जी धनी।
लक्ष्मण के बाण।
आँख दर्द करे।
तो लक्ष्मण कुंवर की आन।
मेरी भक्ति गुरु की शक्ति।

फुरो मन्त्र ईश्वरो वाचा।
सत्य नाम आदेश गुरु का।

विधि—इस मन्त्र को किसी शुभ मुहुर्त में शुरू करके नित्य २१ दिन तक १००००० जप करे, धूप दीप नैवेद्य आदि मनोयोग से लक्ष्मण जी की विधि पूर्वक पूजा करे यह मन्त्र सिद्ध हो जायेगा।

प्रयोग करते समय केवल १०८ बार मन्त्र पढ़कर झाड़ा कर देने से नेत्र दर्द दूर हो जाता है।

मुरादी यन्त्र

बं	मं	पं	डं
१	११	२१	३१
४१	५१	६१	७१
कं	नं	रं	सं

इस यन्त्र को सवेरे के समय ४ बजे उठकर चारपाई पर बैठ कर ईश्वर का ध्यान करके हथेली पर लिखकर दो मिनट गौर से देखे, फिर माथे पर हाथ रखकर अपनी मुराद माँगें ४१

दिन तक लगातर ऐसा करने से मुराद पूरी हो जायेगी। नशे एवं माँस आदि का सेवन वर्जित है। ४१ दिन के अन्दर-अन्दर ही मुराद पूरी हो जायेगी हर मुश्किल दूर भागेगी।

पति वशीकरण तन्त्र

गोरोचन, योनि का रक्त,केले के रस में मिलाकर इसका तिलक लगावे और अपने पति के सम्मुख जावे तो उसका पति यह योग करने वाली पत्नी के वश में हो जाता है इस योग को रवि पुष्य नक्षत्र में करना लाभदायक होगा वरना असर न होगा।

गाय का दूध बढ़ाने का यन्त्र

७	२	३५	२१
३१	३२	३	१
१	८	२९	३४
३३	३०	२१	४

इस यन्त्र को पीछे दी गई विधि के अनुसार सिद्ध कर ले। विधि नियम २१ दिन की है, केशर से लिखकर सिद्धि के बाद

गूगल की धूनी देकर लाल रंग के तागे में ताबीज बाँधकर गाय के गले में डाले। गाय को लगी हर बला नजर दूर होगी। सिद्धि करके आप लोगों का भला करें।

रोग नाशक यन्त्र

इस यन्त्र को पीछे दिये गये नियम विधि के अनुसार २१ दिन प्रयोग करके सिद्ध करें फिर पुनः उपयोग में लावें। पुष्य नक्षत्र में रविवार को भोजपत्र पर अष्टगन्ध से लिखकर धूप दीप देकर रोग को दो तीन दिन में नाश करेगा।

७	२	७७	७०
७३	७४	३	६
१	८	७१	७६
७५	७२	२१	४

सुखदाता यन्त्र

इस यन्त्र को सोने या चाँदी के यन्त्र पर शुभ मुहूर्त में पूरी विधि नियम धूप दीप नैवेद्य स्नान करा पंचोपचार से पूजन कर

घर में स्थापित करें। लाल रंग के आसन पर स्थापित कर इसकी नित्य पूजा करें, इस यन्त्र को धारण करने से व्यापारिक भौतिक हर मुश्किल भाग जाती है।

		९		
		१		
६	४	ॐ	७	३
		८		
		२		

राजा वशीकरण यन्त्र

इस यन्त्र को श्याम कमल के पत्ते पर श्वेत गाय के दूध, केशर, लाजवन्ती की स्याही से सारस के पंख की कलम से लिखकर प्रदोष व्रत कर १२ महीने तक हर रोज २०१ यन्त्र लिखकर शिवजी पर चढ़ावे, तब सिद्धि देगा। केशर से लिखकर सफेद चाँदी के ताबीज में मढ़कर भुजा पर बाँधकर राजा के सम्मुख जावें तो राजा वश में हो। राजा हर बात को माने, आप

सिद्धि नियम पूर्वक करके विधि सहित प्रयोग करें।

		भू	मनाय
	श्री	प	शक्ति
	ह्रीं	सि	

डायन की नजर झाड़ने का मन्त्र

हरि हरि सुमरि के हम मन करूं स्थिर।
चाउर आदि फेंक के पाथर आदि वीर।
डायन दूतिन दानवी देवी के आहार।
बालक गण पहिरे हाड़ गला हार।
राम लषण दोनों भाई धनुष लिए हाथ।
देखि डायनी भागत छोड़ शिशु माथ।
गई पराय सब डायनी योगिनी।
सात समुद्र पार में खावे खारी पानी।
आदेश हाडी दासी चण्डी माई।
आदेश नैना योगिनी की दुहाई।

इस मन्त्र को विजय दशमी की रात्रि में १०००१ बार जप करे नियम भेटां जो कहा गया है उसके मुताबिक सिद्ध कर पुनः

प्रयोग में लावे जब किसी स्त्री पर डायन लगी हो तो उसका १०१ बार झाड़ा करें। हर प्रकार से डायन दूर होगी।

स्त्री वशीकरण यन्त्र

इस यन्त्र को भोजपत्र पर शनिवार को पुष्य नक्षत्र में लिखकर पलाश की जड़ में लपेटकर धूनी दे। यन्त्र पर उसका नाम लिखे जिसे मोहित करना हो ११ दिन तक लगातार धूनी देते रहने से वह मोहित होकर अवश्य चली आयेगी।

१॥	९॥	४॥	१९१
१४॥	१४॥	२४	४॥
१	५१	२५०	२३९
२१	२७॥	५	३९

शत्रु मारण काली मन्त्र

ओं नमः काल भैरों कालिका तीर मार।
तोड़ बैरी की छाती छोट हाथ।
काल जो काढ़ बत्तीस दाती यदि।

यह न चले तो नोखरी योगिनी का।
तीर छुटे मेरी भक्ति गुरु की शक्ति।
फुरो मन्त्र ईश्वरो वाचा।

आप इसके प्रयोग में १०१ गुग्गल तथा १०१ कनेर का फूल लेकर श्मशान में रात के समय चिता की अग्नि से हवन करें लगातार २१ दिन करने से शत्रु की मौत हो जायेगी यह मन्त्र असली है। परन्तु इसका प्रयोग सोच समझकर करें।

वशीकरण लाली यन्त्र

ओं	ओं	ओं
ओं	अमुकी	ओं
ओं	ब्रह:	ओं
ओं	मानय	ओं

इस यन्त्र को किसी ऊनी वस्त्र पर अष्टगन्ध से कमलाक्ष की कलम से मंगलवार या रविवार को लिखकर विधिवत पूजन कर खीर की १०१ बार आहुति अग्नि में देवें और कहे कि (अमुक वश मानय) और एकादशी जब मंगल को पड़े तब

इसका प्रयोग करें। प्रयोग करते रहने से स्त्री अवश्य ही वश में हो जायेगी यानि पीछे-पीछे चल देगी अमुक की जगह उस स्त्री का नाम लेना चाहिए।

अन्त में—गुरु की कृपा से हमने आशीर्वाद लेकर आप सबके लिए यह प्रामाणिक यन्त्रों मन्त्रों का संग्रह एकत्र करके भेंट किया है। नियम विधि का हमने सविस्तार वर्णन किया है। इस ग्रन्थ को अपने तन्त्र साधना स्थान में तन्त्र ग्रन्थ के रूप में रखें। यह ग्रन्थ आपकी सब मुश्किल मुसीबत को दूर करेगा।

सुगम तांत्रिक क्रियायें

लेखक—तांत्रिक बहल

दुकानदारी के तन्त्र-मन्त्र से साधारण जनता का विश्वास लगभग उठ गया है और प्रबुद्ध वर्ग भी इससे कतराने लगा है। यह सब कुछ ढोंग, पाखण्ड की श्रेणी में इसलिए आ गया है कि लोग आधी-अधूरी जानकारी, आधी सामग्री तथा बिना श्रद्धा और विश्वास के अपवित्रता से अपनी इच्छाओं की पूर्ति करना चाहते हैं। वास्तविकता तो यह है कि मन्त्र-तन्त्र-यन्त्र का सही रूप ही पाठकों के सम्मुख नहीं रखा जा रहा है।

लेकिन प्रस्तुत पुस्तक के पृष्ठों में जीवन के प्रत्येक पहलू को तान्त्रिक क्रियाओं के अन्तर्गत देखा समझा गया है और प्रत्येक कार्य सुगमता से सम्पन्न करने के लिए विभिन्न प्रयोग पूर्ण विधि-विधान से करने पर सफल होते हैं।

रत्न और रुद्राक्ष

लेखक—तांत्रिक बहल

प्रत्येक वस्तु वह चाहे निर्जीव हो अथवा सजीव, धातु हो, द्रव्य हो या गैस हो उसका मानव शरीर की रक्त संचार व्यवस्था पर प्रभाव पड़ता है। शरीर की रक्त संचार प्रणाली ही मनुष्य के क्रिया कलाप, विचार शक्ति और उसकी उर्जा को प्रभावित करती है। शरीर को नियत्रंण और नियोजन करने वाले इसी वैज्ञानिक सिद्धान्त के कारण मनुष्य पर रत्न और रुद्राक्ष का भी प्रभाव होता है। प्रत्येक मनुष्य की संरचना भिन्न-भिन्न होती है अत: उसी के अनुसार रत्नों और रुद्राक्ष का मेल बैठता है—इसी तालमेल की वैज्ञानिक विधि पर यह 'रत्न और रुद्राक्ष' पुस्तक प्रस्तुत की जा रही है। प्रत्येक व्यक्ति इससे तदनुकूल लाभ उठा सकता है और अपना सम्पूर्ण जीवन सुखमय बना सकता है।

रणधीर प्रकाशन, हरिद्वार

आचार्य चाणक्य विरचित तन्त्र-मन्त्र-यन्त्र

प्रस्तुति—तांत्रिक बहल

प्रस्तुत पुस्तक का नाम अवश्य ही चकित कर देने वाला है, क्योंकि आचार्य चाणक्य राजनीति एवं अर्थशास्त्र के प्रकांड पंडित तो थे ही पर इसके साथ ही वह मन्त्र तन्त्र के भी प्रबल ज्ञाता थे, यह बात बहुत ही कम लोग जानते हैं। चाणक्य विरचित मन्त्रों-तन्त्रों का यह अनुपम संग्रह प्रस्तुत करने का श्रेय 'तांत्रिक बहल' को जाता है। इस विषय की अतीव रुचि के कारण और तन्त्र सबके लिए उपलब्ध कराने का दृढ़ संकल्प लिए प्रस्तुतकर्ता ने वास्तव में एक खोज पूर्ण और साहस का कार्य किया है। आशा है इस दुर्लभ ग्रन्थ के प्रकाशन से पाठक लाभान्वित होंगे।

इसी पुस्तक के द्वितीय खंड—सरल तांत्रिक प्रयोग में लेखक ने सामान्य जीवन में काम आने वाले कुछ अनुभूत तन्त्र मन्त्र भी दिए हैं।

तन्त्र-मन्त्र द्वारा रोग निवारण

लेखक-तांत्रिक बहल

जिस प्रकार ऐलोपैथिक, यूनानी, प्राकृतिक होम्योपैथिक इत्यादि पद्धतियाँ हैं उसी प्रकार मन्त्रोच्चारण, स्वर विज्ञान और कुछ विशिष्ट आकृतियों के आधार पर भी रोग निवारण की व्यवस्था है। इस विधि के भी अपने सिद्धान्त हैं जिनका उचित प्रयोग करके विभिन्न रोगों से पीड़ित व्यक्ति इस विद्या से लाभ उठा सकते हैं।

सुप्रसिद्ध तांत्रिक बहल ने इस प्रकार से साहित्य का अध्ययन करके और तरह-तरह के मनस्वियों से भेंट करके जो सामग्री कड़ी मेहनत से एकत्र की वह उन्होंने 'तंत्र सबके लिए' लक्ष्य के अन्तर्गत बड़े पावन हृदय से प्रस्तुत की है।

रणधीर प्रकाशन, हरिद्वार

मृत आत्माओं से संपर्क और अलौकिक साधनाएँ

लेखक—तांत्रिक बहल

तन्त्र क्षेत्र में की जा रही व्यापक खोजों से हम आश्चर्य चकित अवश्य हो जाते हैं लेकिन वह अभूत-पूर्व नहीं हैं। ज्योतिषीय और विज्ञान के ज्ञान से आकाश को नापा जाता है तो पदार्थ व तत्त्व की सूक्ष्म अवस्था और प्रकृति से अध्यात्म ने, तन्त्र ने अन्तश्चेतना को जगाकर, साधनाएँ करके अनेकों उपलब्धियाँ पाईं। हमारे प्राचीन ग्रन्थों में लुप्त हो चुकी कुछ ऐसी ही शीघ्र सिद्धि प्रदान करने वाली साधनाएँ खोज कर लाये हैं जाने-माने 'तांत्रिक बहल'।

आप इस पुस्तक में एकत्रित सामग्री को और लेखक के अनुभव को पढ़कर समझ सकेंगे कि उन्होंने इस विषय में कितने गहरे पैठ कर यह सब कुछ पाया और कितनी लगन से संजोकर आपके लिए प्रस्तुत किया है।

पृथ्वी में गढ़ा धन कैसे पायें?

अनुवाद व संग्रहकर्ता—तांत्रिक बहल

तन्त्र-मन्त्र-यन्त्र विज्ञान अलौकिक शक्तियों का स्वामी है। तन्त्र विज्ञान में वह शक्तियाँ छिपी हैं, जिनसे आप हजारों मील दूर की घटनाओं को स्पष्ट देख सकते हैं, किसी को भी अपने वश में कर सकते हैं, उसे साधना द्वारा प्राप्त कर सकते हैं, आत्माओं को बुलाकर उनसे बातचीत कर सकते हैं? तन्त्र द्वारा आप अपने परिजन की आत्मा को बुलाकर उनसे दबाये हुए धन के विषय में जानकारी प्राप्त कर सकते हैं? उपरोक्त सभी बातों का वैज्ञानिक विवेचन इस पुस्तक में किया गया है और यह भी बतलाया गया है कि थोड़ी सी साधना से आप किस प्रकार इच्छित वस्तु को प्राप्त कर सकते हैं? इसके अतिरिक्त इस पुस्तक में ऐसी अलौकिक, गोपनीय और अद्‌भुत साधनाओं का वर्णन है, जिन्हें पढ़कर आप चकित रह जायेंगे।

तन्त्र द्वारा मनोकामना सिद्धि

लेखक—पं-भृगुनाथ मिश्र

जिस प्रकार राडार द्वारा एक स्थान पर बैठे-बैठे ही निर्धारित दूरस्थ स्थान पर अस्त्र चलाया जाता है और वहाँ जाकर लक्ष्य वस्तु को क्षति पहुँचाता है, उसी प्रकार कृत्या, घात, मारण आदि के तांत्रिक प्रयोग द्वारा मनुष्य को प्रभावित किया जाता है। तन्त्र द्वारा आगे से व पीछे से दोनों प्रकार का प्रयोग किया जा सकता है। जैसे गुड़ खाने में पौष्टिक है लेकिन शराब बनाने में भी प्रयोग किया जाता है। ऐसे ही तांत्रिक भी सतोगुणी, धर्म पूर्ण एवं कल्याण का कार्य करते हैं तथा दुःसाहस पूर्ण अनैतिक और चमत्कारी काम भी करते हैं।

तन्त्र शास्त्र एक प्रकार से मन्त्रों की शल्य चिकित्सा पद्धति है जिसके माध्यम से मनोकामना सिद्धि करने में देर नहीं लगती। समाज की भलाई हेतु इसका प्रयोग करना सबको लाभ दे सकता है, लेकिन दुरुपयोग का परिणाम करने वाले को ही भोगना पड़ता है।

वनस्पति तन्त्र

लेखक-तांत्रिक बहल

वनस्पतियाँ जीवनदायिनी हैं, यदि वनस्पतियाँ न हों तो जीवन भी न होगा। अब यह प्रमाणित है कि वन, पहाड़, नदियाँ, जड़ी-बूटियाँ सब पर्यावरण में समानान्तर सन्तुलन बनाए रखती हैं। प्राणों को सतत सुख प्रदान करने वाली इन वनस्पतियों में कुछ चमत्कारी विचित्र शक्तियाँ भी हैं। वनस्पति तन्त्र में इनकी उर्जा, उपयोगिता और अद्‌भुत शक्तियों का प्रयोग करके लाभ उठाने के उपाय बतलाये गए हैं।

रणधीर प्रकाशन, हरिद्वार

सुखी जीवन के लिए टोटके और मन्त्र

लेखक—तांत्रिक बहल

टोटके—नियमित और परम्परागत ऐसी क्रियाएं जिनके संतुलित, समयबद्ध और निरन्तर प्रयोग से जटिल समस्याओं का निराकरण एवं असम्भव कार्य को सरल तथा सम्भव बनाया जा सकता है।

मन्त्र—पूर्ण श्रद्धा और विश्वास से नियम पालन करने पर फलदाई होते हैं। इनमें बेतुकी क्रियाएं भी नहीं करनी पड़तीं तथा सरलता से जाप करके उपयोग-प्रयोग कर सकते हैं।

सुखी जीवन के लिए—सामान्य जन-जीवन में प्रयोग करके जिन टोटकों और मन्त्रों से लाभ प्राप्त किया जा सकता है उनका जाँचा-परखा संकलन 'तांत्रिक बहल' की ओर से।

सामुद्रिक ज्ञान और पंचांगुली साधना

लेखक—तांत्रिक बहल

किसी भी व्यक्ति के रूप, रंग, मुख, नासिका, ललाट व शरीर पर जन्म से अंकित चिन्हों के द्वारा उसके भूत-भविष्य के बारे में बताया जा सकता है। हाथ की रेखाओं के साथ मनुष्य के शरीर के आकार-प्रकार पर भी ध्यान दें तभी एक सामुद्रिक शास्त्री बना जा सकता है। पाँचों उंगलियाँ, हथेली मणिबंध एवं शरीर के लक्षण देखन के बाद ही भविष्य कथन करना उचित होगा। इसी तथ्य को विकसित रूप में बताया जा रहा है कि सामुद्रिक ज्ञान एक ऐसी मूक भाषा है जो प्रत्येक मनुष्य के शरीर पर लिखी होती है लेकिन इस शास्त्र के ज्ञाता ही इसे पढ़ सकते हैं। आप भी इस विषय का ज्ञानार्जन करें।

रणधीर प्रकाशन, हरिद्वार

चमत्कारी मन्त्र साधना

लेखक—तांत्रिक बहल

मन्त्रों का अपना एक अलग विज्ञान है, जिसके सम्पूर्ण रहस्यों को समझ पाना सरल नहीं है। तांत्रिक बहल ने अपने एक विशेष अनुभव कि मन्त्र न केवल ध्वनि विज्ञान है वरन् उच्चारण के समय होने वाली शारीरिक क्रियाओं से जो लघु व्यायाम होता है, वह भी एक अलौकिक क्रिया है। इस तथ्य को ध्यान में रखकर इस पुस्तक की रचना की है। इसके अतिरिक्त अन्य कई चमत्कारी साधनायें भी इस पुस्तक में दी गई हैं। कौआ तन्त्र मन्त्र तथा उलूक तन्त्र-मन्त्र इस संस्करण की एक विशेष उपलब्धि है।

सचित्र शरीर लक्षण विज्ञान

लेखक—तांत्रिक बहल

जिस प्रकार से हाथ की रेखाएं मनुष्य के स्वभाव, चरित्र व भूत-भविष्य इत्यादि की सूचक हैं, ठीक उसी प्रकार मनुष्य के शरीर के अन्य चिन्ह और आकृति से भी उसके विषय में जाना जाता है। इसी विद्या को सामुद्रिक अथवा शरीर लक्षण विज्ञान कहा गया है।

शरीर के सम्पूर्ण लक्षणों पर आधारित हिन्दी में पहली बार यह एक प्रामाणिक पुस्तक प्रकाशित की गई है।

रणधीर प्रकाशन, हरिद्वार

मंत्र-तंत्र-यंत्र सम्बन्धी

तन्त्र के नये प्रयोगों द्वारा—**नब्बे करोड़ की बरसात** (दिवेश कुमार भट्ट)
असीमित नोटों की धनवर्षा (दिवेश कुमार भट्ट) सजिल्द
दान और उपवास से रोग निवारण (आचार्य शशिमोहन बहल)
रहस्यमयी प्रचीन तन्त्र विद्याएँ (सन्त कमलादास)
उड्डीश तंत्र (सम्पादन : योगीराज यशपाल जी)
दत्तात्रेय तंत्र (सम्पादन : योगीराज यशपाल जी)
मंत्र रामायण : रामचरित मानस के सिद्ध मंत्र (योगीराज यशपाल जी)
तंत्र महायोग (योगीराज अवतार सिंह अटवाल)
महाविद्या तन्त्र मन्त्र (योगीराज अवतार सिंह अटवाल)
सचित्र तान्त्रिक जड़ी बूटी दर्शन (योगीराज अवतार सिंह अटवाल)
गुरु नानक मंत्र शक्ति (योगीराज अवतार सिंह अटवाल)
मन्त्र पोथी (योगीराज अवतार सिंह अटवाल)
बावन जंजीरा (यशपाल जी व अटवाल जी)
मन्त्र तन्त्र और रत्न रहस्य (तान्त्रिक बहल और पं. कपिल मोहन)
तान्त्रिक आक्रमणों से बचाव कैसे करें (तांत्रिक बहल)
तंत्र के अचूक प्रयोग (तांत्रिक बहल)
पृथ्वी में गढ़ा धन कैसे पायें (अहिबलचक्र सहित) (तांत्रिक बहल)
जमीन में दबा हुआ धन पाने के सरल उपाय : भूगर्भ विद्या (तांत्रिक बहल)
नाग और नागमणि (तांत्रिक बहल)
तंत्र मंत्र द्वारा रोग निवारण (तांत्रिक बहल)
गोरख तंत्र (तांत्रिक बहल)
मुस्लिम तंत्र (तांत्रिक बहल)
मृत आत्माओं से सम्पर्क और अलौकिक साधनाएँ (तांत्रिक बहल)
वनस्पति तंत्र (तांत्रिक बहल)
चमत्कारी मंत्र साधना (तांत्रिक बहल)
सुखी जीवन के लिए टोटके और मंत्र (तांत्रिक बहल)

मनचाही सन्तान पुत्र या पुत्री (डॉ. अनिल मोदी)
रोगनाशक धार्मिक अनुष्ठान (डॉ. अनिल मोदी)
धन प्राप्ति के धार्मिक अनुष्ठान (डॉ. अनिल मोदी)
पराविद्या और इच्छाशक्ति के चमत्कार (डॉ. एस.एल. धर्मरत्न)
चमत्कार को नमस्कार : गढ़वाली मंत्र तंत्र (पं. वी.डी. भारतीय)
श्री नृसिंह तन्त्र और गढ़वाली शाबर (पं. वी.डी. पालीवाल)
गढ़वाल का प्राचीन तंत्रसार (पं. वी.डी. पालीवाल)
मन्त्र प्रकाश संहिता एवं मुद्राएँ और रोगनाश (सुरेन्द्र दास 'निर्वाण')
मन्त्र साधना में सफलता कैसे पायें (पं. महावीर प्रसाद मिश्र)
पेड़ पौधों के तान्त्रिक प्रयोग और चमत्कारी प्रभाव (वैद्य महावीर सिंह)
सर्वसिद्धि माँ बगलामुखी : तांत्रिक और वैज्ञानिक विवेचन
कामाख्या सिद्धि और कामाख्या तन्त्र (स्वामी आशुतोष गिरिजी)
माँ कामाख्या तान्त्रिक साधना (तान्त्रिक बहल)
अद्‌भुत मन्त्र सागर—तन्त्र के हजारों प्रयोग और अचूक टोटके
तन्त्र की रहस्यमयी **काली किताब** (बाबा औढरनाथ तपस्वी)
चमत्कारी 55 पूजा यन्त्र (पं. कुलपति मिश्र) सजिल्द
मन्त्र रहस्य (सजिल्द संस्करण, मोटे कागज पर) (यशपाल जी)
तान्त्रिक चमत्कार : मन्त्र तन्त्र यन्त्र महाशास्त्र (यशपाल जी)
वृहद शाबर मन्त्र, शाबर तन्त्र और यन्त्र (योगीराज यशपाल जी)
दश महाविद्या तन्त्र सार (योगीराज यशपाल जी)
बगलामुखी महासाधना (योगीराज यशपाल जी)
यंत्र विधान (योगीराज यशपाल जी) सजिल्द
संकटमोचिनी **कालिका सिद्धि** (योगीराज यशपाल जी)
१०८ यंत्र माला (रंगीन, सजिल्द) (योगीराज यशपाल जी)

निम्नलिखित पते पर पत्र लिखें या फोन करके पता करें—

रणधीर प्रकाशन, रेलवे रोड, हरिद्वार (पिन कोड-249401)

☎ (01334) 226297 **मोबाइल : 09012181820**

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

आत्मिक सुख देने वाली अनमोल पुस्तकें

रणधीर प्रकाशन, रेलवे रोड, हरिद्वार

PH: (01334) 226297
MO: 0 9012 1818 20

प्रख्यात तान्त्रिकों द्वारा रचित विशेष ग्रन्थ

मन्त्र, तन्त्र, यन्त्र एवं रत्न विषयक पुस्तकें
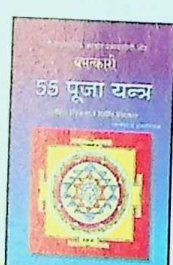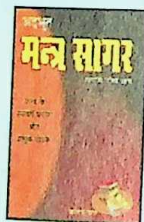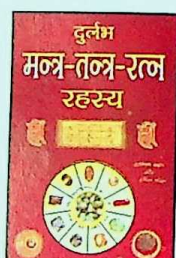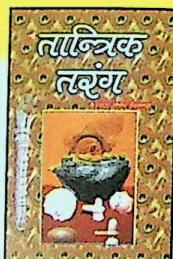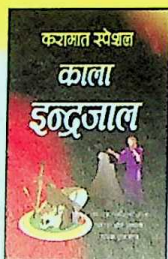
रणधीर प्रकाशन, रेलवे रोड, हरिद्वार
PH: (01334) 226297
MO: 0 9012 1818 20

विभिन्न विषयों की अन्य पुस्तकें
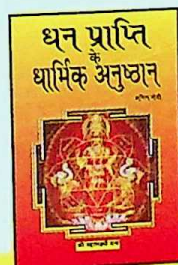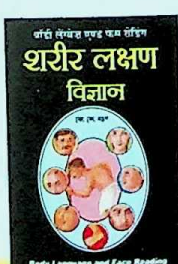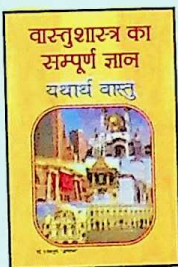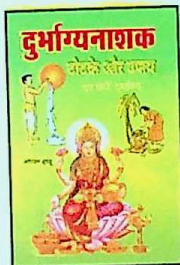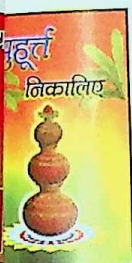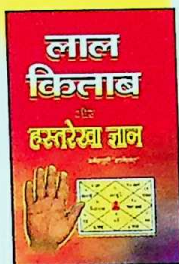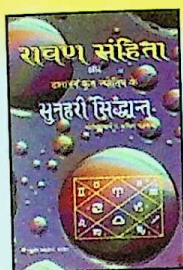
रणधीर प्रकाशन, रेलवे रोड, हरिद्वार

PH: (01334) 226297
MO: 0 9012 1818 20

हर घर में संग्रहणीय धार्मिक ग्रन्थ एवं पुराण
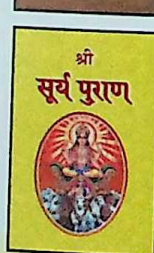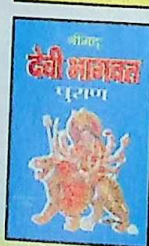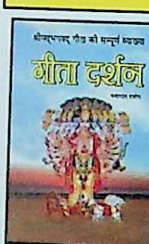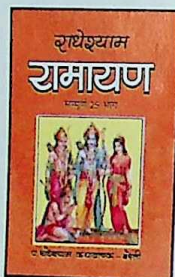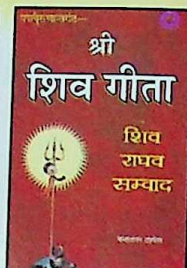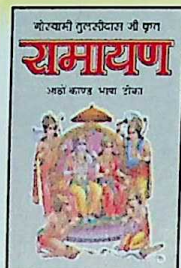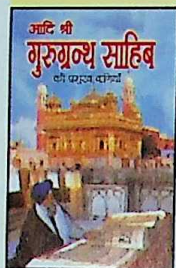
वेद, पुराण, ग्रन्थ, पूजा-पाठ, कर्मकाण्ड की पुस्तकों का मूल्य सूची पत्र मँगवाने के लिये सम्पर्क करें–

रणधीर प्रकाशन, रेलवे रोड, हरिद्वार

PH: (01334) 226297
MO: 0 9012 1818 20

Designed by:- Madhur Graphics, Delhi
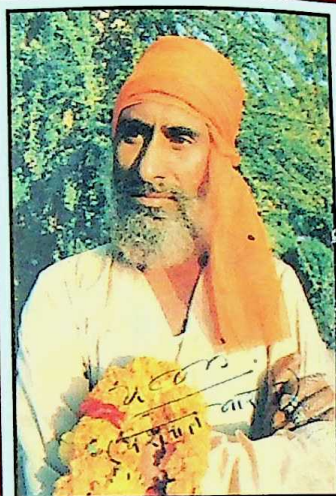
अवतार सिंह अटवाल

तन्त्राचार्य, ज्योतिष सम्राट, ज्योतिष बृहस्पति, ज्योतिष अलंकार, गोल्ड मेडलिस्ट तथा रजत पदक उपाधियों से अलंकृत

परम पूजनीय बैकुण्ठवासी गुरु श्री यशपाल जी को शत शत नमन

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh